सत्येन जोशी

कंवळ पूजा

(राजस्थानी भासा मे पैलड़ो इतिहासिक उपन्यास)

ललित प्रकाशन
जोधपुर-७

लेखक सारू प्रकाशक
ललित प्रकाशन, जोधपुर–७

पलो छापौ   वि०स० २०३१

कोरणी   गोवि द कल्ला

कंवल़ पूजा

(राजस्थानी भासा)

सत्येन जोशी

KANWAL POOJA

(Rajasthani Novel)

Satyen Joshi

Lalit Prakashan
JODHPUR-7

मोल दस रुपिया
Price Rs 10/-

छपाइ
हिमालय प्रिण्टस जोधपुर

टीप

सन् १९६१ में पलडो बार जसलमेर गयो ग्रर तद सू लगोलग जुलाई १९६८ तक उठैई रैयो। जैसलमेर री धोरा धरती री हवा ग्रर पाणी में जाण काई जादू हो कै म्हारो मन उठई रमग्यो। जसलमेर म्हारो रग रग में ग्रजू रम, ग्रर ता उमर म्हार रू रू मे जैसलमेर री सोरम ग्रावती रवैली। सोन जड पीळ भाट री हवेलिया मिन्दर, मूरतिया ग्रर रवासिया रो निरमळ ग्रर साचो सनह गडमीसर रो पाणी, गोरा चौक ग्रर मोटा मोटा धोरा री धूड, म्हार मन न मोय लियो। लागै क म्है जलम-जलम सू जसलमेर रो ई रैवासी हूँ। छोट सू मोन्गे, हर जात धरम रो, दूकानद र सू लेय सरकारी मुलाजिम ग्रर सामाजिक कायकर्तावा सू ग्रोळखाण, मोद ग्रर मुळक भरी बाता ग्रर लाड कोड री मनवारा कद भूल मकू ? नी भूलू।

राजस्थानी भासा में लिखण री प्रेरणा मन मइस़ा (जन कवि उस्ताद') सू मिळी, वारै ई घडियोडो माटी हूँ।

सन् १९६३ में जैसलमेर हाई स्कूल में, इतियास रा ग्रध्यापक सरगवासी श्री भभूतिमलजी परमार सू ग्रोळख न्ही। वे ई साच पूछ तो मन इतियास री ग्रलेका कथावा मे रम धोळर पायो। वे ई मन इ उपन्यास लिखण री प्रेरणा दी। इ बिच्च मास्टर सा'ब ग्रचाणचक देवलोक व्हेगा पण वारी दियोडी भभूत ग्रजू म्हारै कन सम्भाळियोडी ही।

इ उपन्यास न ग्रेकर लिखियो, बेलिया न सुणायो। वा री समझावण ग्रर मोळावण सू केई कुमिया पूरी ही ग्रर उपन्यास री काया पलटगी। कुमिया ग्रजू बी न्हे सकै ग्रर हैला, पण ग्र ग्रागै बधण में मददगार न्हैला ग्रो ई विस्वास है।

उपन्यास री भाव भोम माथै सरुपात मे कीं कवणो ग्रबखो रैवला, पण इतियास रो ग्रधार लेय नै उपन्यास लिखण र कारण, इतियास री चरचा करण मे ग्रणूताई निजर नी ग्राव।

यू तो इतियास रो साच, नुवी नुवी खोजा सू बन्ळतो रव, इ वास्तै इतियास रो ग्रधार कूडो पड जावै, पण इ कथा मे जित्तो बा बूढ निजर ग्रा सक वो कलपना रो साच है। इतियास नै कूडो बतावण रो हठ नी।

गजनवी रो सुलतान मैमूद, ईसवी सन १००४ में भाटी राजा विजयराज माथै हमलो कियो। इतियासकार, भाटी राजा विजयराज न भाटिया भाटा भोरा

अर भाटियानगर रो राजा बनायो है। ममूद र मम र भाटी राजा री राजधानी 'तन्नोट ही। इ बात रो प्रमाण जसळमे री तवारीख जेम्स टाड अर मुहता नणसी री ख्यात इत्याद सू मिळ । इ सारू म्हारो भी कौल है क भो हमलो तन्नोट माथ हुयो।

प्रो० मोहम्मद हबीब (मुस्लिम यूनिवर्सिटो, अलीगढ में इतियास अर राजनीति शास्त्र रा प्रोफेसर) आपरी पोथी 'सुलतान महमूद आफ गजनी' मे इ हमल रा कारण दरमाया है।

अलउत्बी अर प्रो० हबीब रो कवणो है क राजा, हारग्यो अर दुस्मण र हाथ पडण रा जागा कटार खाय मरग्यो। उरबी आगै कैवै, क सुलतान जद पाछो आवण लागो तद वी न बोत फोडा पडिया, वी री सारी फौजा नष्ट हेगी अर अेकलो सुलतान रा प्राण बचिया। जैसळमेर री तवारीख अर मुहता नणसी री ख्यात में लिखियो है 'राव विजयराज माथ सिन्ध कानी सू मोटी फौज आई। राव बडो अराडा सिद्द हो। वी ऊपर देवीजी री पूरण किरपा ही। वो मन म सकळप कियो क फौज पाछी जाव तो कवळपूजा करू । बात किणी नै जताई नी। देवीजी रथ आया। वेढ हुई। विजयराज जीतो मुगल भागा। जद राव कवळ-पूजा करण सारू तलवार बांधनू माण्डी तो देवीजी बोलिया, मा मां । म्है पूजा मांनी। अर देवी आपरी चूड दी। राव चूडाला कहाया।'

यां सारी बाता न सोचिया समझियां जको नतीजो मिळियो, वो इ उपन्यास नै पढिया सू ई हाथै लाग सकै।

कथा में राव अर ममूद रे इलावा दूजा नाव घटनावा अर बखाण, उपन्यास री जरूरत सू पदा हुया, क्यू क इतियास, अपण आप मे बोत ई रूखो विष है, अर जद तक इ न चोवणो नी कियो जाव तद तक ओ रुच कोनी।

विस्वास करू क ओ उपन्यास राजस्थानी भासा रै पढाकडा, इतियासकारा, आलोचका अर चायेता न दाय आ सकला।

जोशियां री खटकल'
जोधपुर १०

सत्येन जोशी

कान खड़ा व्हेग्या । नए कानां मे घुमग्या । सुरता, श्रवण रै सरणै पड़गी । पग, काना रै हलाया हालण लागा । झीणी झीणी चांदणी बादळा सागै आंख मिचूणी रमण मे मस्त हियोड़ी । काळजै म अेक उजब तिरस रौ तूठणौ व्हेगो । मिनखा रा कान, पूरै सरीर अर मन न मि तर सक, आ वात आज वी नै पलपोत समझ मे आई ।

नमी सुई रै नाक मे सूं निकळनोड पतळ डार ज्यूं, झीणी राग मे गावणै री सुर, जाणै किण दिसा सूं आय र काना न बाध लियो । बावळा कान वी सुरीलो राग रौ पीछौ करण सारु पगा न हुकम हलायो । पग आग वधणा सरु हिया । रात रौ पलो पोर है ।

उबासी तर उबासी । दो दिन र ओजक रौ आड़ग । वो दोयूं हाथा न ऊचा उठाय, सरीर नै ताणियो, अेक झटको दियो अर पाछो समळियो । थाकेलै न बाधिया आवतो जाए वो अेक धोर माथ बठग्यो । च्यारू कानी मीठ दौडाई अर धोरा री मुखमली गादी माथ पसरग्यो । मुठिया में रेत भरन वासूं पाछी रेत नै रळकावण लागो । सूं सूं करतो बायरिय रौ अेक झोलो आयो । रमत मे घा डो पड़ग्यो । सरीर में थोड़ो सो धूजणी छूटी । वो उठ'र आलस मोड्यो । उबासी, आगळ खुडकाई, कपडा न झटक र वो ऊभो हियो । अेक छिन मारु नैण मून्निया । आख्या खोली तो धौं कन अेक दूजो ऊभो हो ।

'बोल भाऊ !'

'ठाकरा ! लूट रौ माल यूं कोनी पच ।'

'हूं ?'

'हां !

आ तलवार देखी ?'

खी खीं खी !'

'घणो दांता सूं तोड दी ।'

है ?

'हां

आ ताड'र बताव, ज जबान रौ पाको व्है ।'

'तड तट ।

वीं न चतो आयो जद वी रै हाथ म तलवार रा दो टुकड़ा हा । वो साव अकलो हो । वो दूजोड नै जोवण री गरज सूं अठी-उठी निजरा दौडाई, पण कठई

सूँ बास नी भाई। नीचै झुक'र, वो पजा रा सनाण हेरण लागो। वीं न ऊँची दिसा में पगरखिया रा सनाण निजर भाया, पण भ्र सनाण तो वो री खुदरी पगरखिया रा हा।

इ पैला क, वो कीं सोच, वीं र काना न कोई सुर बेधग्यो। वो बावळै बतूळियै दांई वीं उवाज री दिसा में नाठण लागो। जी दिसा में वो दोड्यो जावतो, साँमली दिसा सूँ बादळा रा मुण्ड चन्दरमा न ढाक र सपाट दौड रया हा। वीं र सरीर माथ बारी बारी सर चानणो भ्रर छिया र र न व्हेती। भ्रेक छिन सारु वीं न भ्रापरी भ्रसवारी रो चेतो भ्रायो।

भ्राज वो घणकरो माल लूट'र लायो है। साण्ड माथ सोन रा भ्राभूमण चान्दो री टिकलिया भ्रर मोतिया रो बेसुमार जकीरो। दो मोटा बोरा में लादियोडो। भ्राज वो भ्रेक चवदै बरस र छोर री गरदन उडाई, भ्रेक मरद री टागा तोडी दो मिनखां न तलवार सू घायल किया। भ्रेक बीस बरसा री विधवा नैं राण्डापै री जूण सूँ मुगती दिराई। तिझ्या पड्या पला वो सीव में घुमग्यो। भ्रेव मुलतान रा सिपाई राज र परवाणै बिना नी भ्रा सक। वो हमें बेफिकर है।

हा म्है बीस बरसां रो जवान हूँ पूरो साढ़ी छ फुट रो, सोनो भ्रस्सी भ्रागळ, हाथ गोडा तक डीगा, रग रातो डील लौठो। ढकणे में बोडियोड काच मे मूण्डो देख मुळकियो। इ भ्री खोल, भ्रेक किरचो बाकै मे घातियो मूछा माथ हाथ फर, बट लगावण सारु भ्राँगळी भ्रर भ्रगोठरै बिच्चै मूछा रा नैना बाला न लय र भ्रगोठ रो भ्रेक रगडको लगायो।

गावणे रो भीणो भ्रर मदरो सुर ठेठ काना कन भ्राय पूगो। हमें वो रा कान घणा उतावळा व्हेगा। वी न लागो हमे जे वो इ सुर न बन्द नी कियो तो वी रो काळजो फाट जासी। वी रो भ्रेक हाथ काळजे री जागा जा पूगो। वीं रो काळजो जोर जोर सू धक धक करतो हो। वीं न पसरियोडा, डीगा धोरा र लारल पासै सू लाय री लपटां उठती सी दीखी। लाय र माथ सू चिणगारिया फूटती भ्रर वा र फूटण र समच ई चीसाळचा निकळती। वो दौड न धोर र डूगर माथै चढ़ग्यो। उठ हमे लाय री लपटा कोनी ही। वो बीजोड पाम री ढाळ उतरण लागो। वीं न लखायो वो समन्दर र माय उतर भ्रायो है। वी रो कण्ठ सूख रयो है। वो दो यू हाथ नीचा लेजा र धोचो भरियो। धोबो भर मूण्ड म सबडको लियो। रेत सू जीभ भरगी। थू थू कर वो रेत न थूकण लागो। इतर में वी र काना मे कोई भ्रगधी नुनी सणीजी।

'पूनम !

है।'

'प्राव, म्हार लार प्राजा '

वी र प्रागे कोई नी हो, पण वी नै लागतो क वो किणी री पीछो करतो चाल रयो है ।

प्रागलो प्रक मि ्र रा किंवाड खटखटाया । माय सू भम भम भांझरियां रा बोल सुणीज्या । वो किंवाड खुलता ई भ कार री पीछो करतो प्रागै बधण लागो ।

मोजड़िया बार खोल, वो पग उवराणो व्हेगो ।

'पाणी ।'

'प्रठ पाणी री काई काम ? दारू पीवो ।

वो सुप सुर सात प्राठ चुल्ला धसोड लिया । हम की साम में सांस प्रायो । नणा मे प्रेक चमक वापरगी । हम स की ऊजळी प्रर साफ दीसण लागो । दस प'दरा प्रपसरावा री प्रेक झूलरी प्राय वी नै घेर लियो । वो प्रागै बधण लागो । घेरो वीं रै साग सागै प्राग बधण लागो । सामै सिंघासण माथ प्रक बौन ई फूटरी प्रपसरा वीणा बजा रैयी है । वो सुर नै प्रोळख लियो । वी प्रपसरा री राग खीर दाई वीं कानी लपकी । ।वी न लागो क वो बळ रयो है । वो वीं प्रपसरा कानी दो यू हाथ पसारया । झूलरो प्रदीठग्यो । प्रपसरा वी र बाथा म भूलगी । वी न लागो, वी र सरीर मे लाय सुळगगी है । वो पाछो झूलरै सू घिरग्यो । फेरु प्राग पावण्डा धरया । प्रेक प्रपसरा प्रोछी व्हेगी । भीत माथ प्रेक पूतळी मण्डी, हाथ म वीणा लियोडो, प्रागळिया तारा न झझोड रयी है । नैण प्राधा मूंदियोडा, वा नीची धुन क्रियोडी मगन है । वो हाथ लगायो । प्रांगळिया हेम सू ठरगी ।

'प्रा तो भाट री मूरत है ?'

हीं हीं कर झूलर माय सू प्रेक प्रपसरा हँसी प्रर मूरत र बाजू जाय चिपगी । प्रक पग र प्रेक प्रगोठ माथै पूर सरीर रो भार सभाळ, बीज पग न लारली कानी थोडो ऊचो क्रियोडी,इ पग री पजो बीजोड पग रै गोड रै लारल हिस्स सू प्रडियोडो प्रक हाथ सारस रै पख दाई फलियोडो हथाळी, कळाई सू ऊपर उठियोडी । प्रगोठ प्रर वी र पाखती री प्रागळी रै मेळ सू प्रेक छल्लो बणायोडो । बीजोड हाथ री प्रक प्रागळी नीचल होट नै छूव बाकी प्रागळिया प्रगोठ माथै प्रेक बीजी सू चिपियोडी । चितवन थोडी खागी । कमर मे थोडो सी प्रांट नणा में उन्माद, होटा माथै मीठो सी मुळकण । गू थियोडा कैसा री चोटी सींर ज्यू प्राटा खायोडी कमरबन्द सू थोडो नीची । पेट म दो सळ । सूटी फांक री सकल धारण क्रियोडी ।

प्रेक प्रपसरा पगा मे भांझरिया बाधण लागी । प्रेक दोयू पगा रा पजा

छोटा कर लार सू मेडिया न ऊंचो उठाय श्रापस में विपोती। हाथ दोनूं, माथ सू थोड़ा ऊपर जाव। श्रगोठा श्रापस म भिडियोड़ा। पूरी देनी माथ भागळियां श्राप री जोड़ायत सू मुद्रा श्रडायोड़ी।

'ई न पुद र रूप री कीं घणो गुमान है? क पद्म या मु" ऊपर हुऊं है? क" सू दरपण में मूण्डो देख रयी है। श्रेक हाथ सू मांग भर। श्रजू मांग नी भरीजो? श्रा सरीर न यू क्यां कर मोड ऊभी है?

वो श्रटळ सू काच निकाळ पु" री मूण्डो बी मे देखियो। इ"री तान र श्रक विरचा बाक मे पनी। की सवा" लागी। श्रक विरची बिसरगी। सोरी श्रायगी। बा न लखायो यो हळको व्हेगो है। जीव म साराई श्रायगी।

ठीक! तो ई र गळ म मन्ना लटकायोड़ी है? बी री हाथ मन्ना माथ थाप देवण सारु लपकियो। श्रागळियां म श्रेक भन्नाटो चालग्यो। भाट री भूडी लागी। वो श्रागळियां ने बाक में घत चूस ली। बार चाड दो चार भटका दिया। श्रजू भन्नाटो चालतो हो। वो श्रागळियां पाछी बाक म घतली।

वो गिणती करी पूरी सोळा श्रपसरावां ही। सोळा री सोळा जाणे भींता म बीडियोड़ी। श्रेक श्रडियां ऊँची कर, पजा र बळ गोड़ा भुकाय नीचो व्हेगी ही। हाथ जोड़ र विणी र ध्यान म मगन। श्रक री श्रक टांग पूठ रानी ऊंचो उठायोड़ो। बी टाग रै श्रगोठ न बीं री श्रेक हाथ पकड राख्यो। बीजो हाथ माथ ऊपर हथाळी न मुगट बणायोड़ो। श्रेक फेरूँ श्रेक टाग ऊँची उठाय गोड माथ टक राखी। हां श्रा बसरी बजा रयी है। श्ररे? श्रा इ री श्रक मायण बमर ऊपरने सरीर न साथी कर दोन्यू हाथ ऊपर उठाय मजीरा बजाय रयी है। श्रक गरुड री मुद्रा बणायोड़ी तो श्रक मोर नाच मे मगन। श्रक र हाथां म श्रारत री थाळ। हां श्रो पूजा निरत है।

वो चमकग्यो। श्रा कुण? सांमी मां जायी ऊभी है। श्रर देखो हमे सरम कर नैणां न हाथां सू ढाप लिया है। वो श्रापर श्रक हाथ सू खु" रा नण ढाप लिया। श्रागै बधग्यो। बी री हाथ नणा सू खिसक सीन माथ श्रायग्यो। वो खु" रै सी ने मुट्ठी म भरण री मसखरी करी। बी र मुण्ड सू श्रेक सिसकारी निकळगी। वो दोन्यू होटा ने श्रापसरी म दबाय वा ऊपर जीभ फेरी। बी ने लागी बीं र होटां सू सत चूव।

हमे वो मंदिरे घेर म जाय पूगो। वो सोचियो—लोगा कने कित्तो धन हो? कित्ती फुरसत ही? कडो चरको हो? वो मन म मकळाय लियो बो श्रक मिन्दर बणावासी।'

परकमा म बी श्रेक श्रक भाट माथै पूरगी गडत कियोड़ी, भीत भीन रा बेल

खूँटा । अर अर भाट ऊपर अेक अेक जोडो लुगाई मरद रो, मदगेलाई में अळूझियोडो । वो निरणे कियो—आगला लोग कितरा बेसरम हा ! मिन्दरां में अैडी मूरतियां लगावण री काई काम ? वो गिणती करी, कोई चार बीसी ऊपर चार मूरतियां री, मुतळब अेक ई निकळनी । वो अमल री अेक किरची बाक मे घती । इण्बी रै काच सू अेक मूरत माथ पळको करण लागो । इतर म दो लूठा सरीर बी रा दोयू हाथा नै काठा कस'र पकड लिया । बी नै घीस'र अेक कोटडो में नेयग्या अर जोर सू धक्को देय आगणे पटक दियो । सरीर अदीठग्या ।

इ कोटडी मे सामोसाम देवी री अेक मूरत । जागतो दो जोता । धुप अर केसर री घोरम घोर मक । थोडी सो धुम्रो कजळोजतो । अर मडद काळो भस जेडो डील, डरावणा नैण, मोटी मोटी काळा केसा री लटा लिलाड माथै तेल चोपडियोडो । होट अडा राता जाणे रगत थेपडियो । उमर धधगावळी । पतीस—चाळीस र नेडो । सामो अेक सोळा सतरा बरसा री काचा कोमळ नार उघाडै डोल ऊभी है । इ नै कोई लाज सरम बी कोनी ? वो मरद दारु री अेक तासळो बी नै थामियो । वा गट गट पीयगी । नैणा मे उजब उमाव भर, वा ई नुवाडै पुरस नै इचरज सू निरखियो ।

'तूँ तूँ ।'
'हूँ ! अर तूँ पू न म ।'
'तू म्यारळी नाँव कयान जाणे ?'
'नाँव काई म्हे त्यारळै पूर खानदान नै जाणू ।'
'पण तू औ ई कुण ?'
'क्यू ? तू म नै उठावण री सोगन नी खाई ? हो उठाली हम ।'
'पण औ मिनख ?'

इतर म पावतो नैठो मिनख अेक तलवार वा दो यू र बिचै ताणली ।

'बळ सू जीनो भोगो, उठावो । पण याद राख, अेय आमोडो जीवतो पाछो कोनी जा नै ।'

'मोमजी तलवार ?'
'नामरद ।'
'थू ।'

'पूनम !' वो आंख्या बार काड तलवार पूनम सांमी तोली । पूनम अेक लात री मारी अर तलवार नीचो पडगी । पूनम तलवार माथै पग धर बोल्यो नामरद ! बळ म्है तो उठा पग, अर ले ल तलवार ।

वो पूरी तागत लगाई पण पूनम रो पग टस सू मस नी हियो ।

ठीक म्हे फसलो करू ।' नारी मुर बोल्यो ।

'मंजूर ?'

'हां ।' दोयू हूंकारो दियो ।

'कवळपूजा कर सो म ो पा ो ।'

कवळपूजा ? म्हे की नी जाणू । पूजा म्है किणी री नी करू । पूजा तो लोग कर म्यारळी ।' पूनम बोल्यो ।

म्हे करू कवळपूजा । म ो ग्रोई पूरो विसवास ।'

'मूंदो ोण !

'मूं दिया ।'

पलक भपकता ई वी भैंस री मूण्डको ग्रांगणे खिरगो । नारी वी रै ठोकर मारी ।

पूनम रो हाथ पकड नारी वी न बार ल्याई । अ धारै म जाणे कितरा पागो तिया चढी, उतरी, फेरु चढी । ग्रधारो ग्रणथाग सूझ नी, हाथ न हाथ । पूनम नै लागो, कोई वी न काठो भीच लियो है । वी न कठई सू निवास मिळ रयो है । वी रो पूरो सरीर ग्रेक ग्रजब तणाव में टूटण लागो । वो बावळो है ज्यू जोर-जोर सू बकण लागो, 'यसोधरा यसोधरा' ।

'पूनम !' नारी कडक र बोली ।

'काई ?'

'हूं यसोधरा नी, चम्पा ग्रोई चम्पा ।'

तो यसोधरा ?

'मुळतान री राजकवरी ? बापडी हूमे देवदासी बणगी ग्रोई ।'

पण म्हे तो सुणीं क वा ?

हां म्हे बी वी र बार म सुण राकी ग्रोई ग्रर काल न लोग म्यारळ बार म वी घणकरी बाता करैला । खर ! तू मिळवो चा ो यसोधरा सू ?'

'हां, काई वा ?

'हां, ग्रोई । पण तू देख न बीव तो नी ?

'म्हे काळ सू ची डरु कोनी ।'

'काला काळ सू तो स कोई डरे ।

हूं कोनी बीवा !'

तो पछ ग्राव ग्राज तन मिळाय दू काळ सू ।'

चम्पा पूनम न नागा घोरां मार्य ले ग्राई । वा ग्रजू उघाडी ई ही । पूनम री चानणी मे वा न निरख पूनम री ग्रांख्यां फाटी रैगी । धीरै धीर वो चम्पा र रूप नै नैणा सू पीवण लागो ।

'तन सायत परमातमा खुद बैठ'र घडी हुती?'

चम्पा खुद री सोमा सुण सरमायगी अर नण नीचा कर लिया। नैण नीचा करता ई, वी नै चेतो आयो के वा लाज छिपावण सारु की कोनी ही। वा पूनम रै सरीर सू ढाप लीवी खुद री उघाडी देही।

घाम धीमै पिघळण लागो हेम। अचाणचक बतूळियो बावड़ियो।

(२)

तनोट धूड रै समन्दर मे बसियोडो है।

अठै सू बीस पच्चीस कोस दक्खण पूरब में मगरा अर छोटा-मोटा डूंगर इण बात री साख भरै के कोई जुग म अठ अथाग समन्दर हबोळा लेतो हो।

भाटी राजपूता र इण दुरगम गढ तनोट न पास पाडोस रा रवासी 'नगर' अर सुलतान मैमूद गजनवी अर उलबी भाटिया नगर र नांव सू ओळखै। तनोट गढ रो निरमाण, राजा केहर आपरी कुळ देवी तनोराय रै नाव माथै सरु करायो पण गढ रो निरमाण पूरो व्हियां पैला ई वो देवलोक व्हैगो। वीं रै लारै वीं रो बेटो राव तनो, इ गढ रो निरमाण पूरो कियो। त नो रो पाटवी बेटो राव विजयराज हो। तनोट र पच्छिम मे सिन्धु नदी बैवती, अर उठ ई सिन्ध प्रदेस हो जठ वाराहा री राज हो। दक्खण पूरब मे मुल्तान रो राज हो। वाराह राजरी सीवा, तनोट राज सू मिळती ही, इ वास्त छोटी मोटी खटपट रात दिन व्हैती ई रैती। वाराह, भाटिया री बादुरी अर धुतराई सू मन ई मन में बळता। वे भाटिया रा दुसमी व्हैगा। वाराहां रो ओ कौल हो क तनोट री जमी वारी है अर भाटी उठै माडाणी कब्जो कर राखियो है। ई सारु वाराह, मैमूद नै पूरी इमदाद देवण रो वचन दियो।

मुल्तान मे लगा राजपूता रो राज हो। लगा री बी तनोट माथै आख बळती। वां रो बी ओ ई कवणो हो कै भाटी राजा वा रै राज री घणकरी जमीं दाबली है। विजयराज रै बाप तनो रै जोवतां थका बी वाराह अर लगा मिल'र मुल्तान कांनी सू तनोट माथै हमलो कियो हो। च्यार दिन तक घमसाण लडाई चाली। लगा साथै म्लेछ यवन खिची, खोकर जोइया, जूद अर सय्यद इत्याद बी घोडां माथै चढ तकरीबन दस हजार री फौज लेय नै धावो कियो। ई में वे खास रूप सू हुसैन शाह री इमदाद ली अर वी नै अगाडी कर दियो। चौथे दिन राव तनो आपर बेटे विजयराज रै साथै दुरग सू बारै आय जुद्ध कियो। बाप-बेटा मिळ नै दुसमणां नै मूण्डा रगदोळिया। सबसू पैला वाराह भागिया। वा पछ सग यवन,

म्लेछ लगा इत्याद जान बचाय उल्टा पगा भागा। ई जुद्द मे भाटिया री जीत सू डरो भूटा (बूटा) राजपूत, विजयराज सारू नारळ भेजियो अर आपरी बेटी परणाय वेलीपो कियो।

तनो पाछ राव विजयराज सिंघासण सम्भाळियो। की बरसा पाछ मुल्तान माथै अरब रा करमाती मुसलमान चढ आया अर लगा री जडा खोद दी। राजा मारयो गयो।

तनोट र उतर मे शाहीवस रो राजा जयपाल राज करतो। वा रो राज पच रथ [पजाब] नाव सू ओळखीजतो। अठ रो राजा अनगपाल मेमूद गजनवी रो बोत वीरता सू मुकाबलो कियो पण जीतण सारू वी की फौज अर साधना री कमी ही, ई वास्तो दुखी होय र वा बळ र मरग्यो। वी र लार वी रो बेटो जयपाल गादी माथ बैठो। वा आपर बापरो बदळो लेवण सारू बोत मोटी फौज खडी करी अर हिंदू राजावा सू मदद मांगी पण मेमूद री फौज र मुकाबलो वो बो नी टिक सकियो क्यू क हिंदू राजा वी री मदद करी कोनी। यो गजनवी नै चौथ दवणी कबूल कर, पिंड छुडायो। भाटी राजा ई जयपाल रा मातत हा ई वास्तो वान बी गजनवी नै चौथ चुकावणी ही पण वे चौथ दवण सू नटग्या। ई वास्तो गजनवी भाटिया माथै हमलो करण री तेवडी।

तनोट र दक्खण मे लोद्र वस रै परमार राजावा रो राज हो। ई री राज धानी लोद्रवा ही जठ सू होय र काक नदी नैवती। ओ इलाको मगर रो है अर खडाळ र लागतो ई है।

पूरब दिस कानी भाटियां रो राज खूब फलियोडो हो अर अळगो अळगो जाय मण्डावर [मण्डार] राज री सीवा तक पूगतो। मण्डावर राज फळोदी तक आयोडो हो।

भारत सू अरब अर मध्य ओसिया सू जुगा पुराणो बौपार रो खातो हो। या देसा रो भारत सू बौपार, काबुल कधार अफगानिस्तान सिध मुल्तान अर भाटी राज र मारग र जरियै हेतो। अरब देसा रा केई मोटा-मोटा सौदागर भारत में बौपार खातर आवता जावता रता। मध्यभारत म जावण रो सुभीतो रो मारग सिन्ध भाटिया अर अठ सू बाहड रो हो। बाहड पूग्या पछ अक मारग गुजरात कानी जावतो तो दूजो पूरब अर उतर दिस कानी। ई मारग मे तनोट रो खास मैतब हो। धोरा र अथाग दरियाव में ओ स्थान अेक टापू दाई हो। जानरा सू थाकियोडा, भूखा तिरसा सोदागर नै अठ आय सुस्तावण री फुरसत मिळती। अठ रो जळ इम रत दाई हो अर ई धरती रो नेह वारो सारो थाकेलो मिटा दतो। अ लोग अठै दो-चार दिन आराम करै पछ आगै जावता। राजा सू इजाजत लय अ लोग दो तीन रण बसेरा अठ बणावाया।

राजा री इण सहूलियत अर दरियादिली र बदळे अं ओग राजा ी नेग चुकावता अर अरब री केई कीमती चीजा, गलीचा, फानुस मेवा, मुखमल जरी इत्याद राज र भेट धरता। हरेक भेट र साथै अंक अशर्फिया सू भरयोडो चा दी रो थाळ बी व्हेतो या री बोली अर बरताव बोत मीठो अर अपणायत भर्यो हो, ई वास्ते या लोगा सू परजा रो बी बोत मेळ जोळ बधग्यो। या लोगा र परताप सू ई भाटी राज इत्तो वैभवसाळी हो। रता रैता को सौदागर अठ ई बसग्या। वे लोग अठै बडा-बडा गोखम बणाया बगीचा लगाया अर केई कुवा अर तळाव खुणाया। वार्न इ धरती सू अडो लगाव व्हियो क वे अठ टाळ खुद र मुलक मे बी पाछा जावण सारू राजी कोनी हा।

(३)

बूगा राणी, लाजमा भरी निजरा सू आपरी मानेतण डावडी गुलाव कानी देख मुळक दी।

गुलाब! आज तो तन देखियां ई नमो चढै ई।"

पछ एक ऊन्डी सास खचता थका महाराणी फेरू बोली—

"जे तू मरद व्हेती?"

"इग्या करो महाराणी सा!'

गुलाब, राता मदमाता नैणा माय पळकां री आधो पडदो करता थकां बोली।

आज उमस घणी व्हीई, गुलाब।

गुलाब खिडकियां रा किंवाड खोल दिया अर चवर डुलावण लागी।

"गुलाब! तिस लागी।'

भारी माय सू केवड जळ रो गिलास भर गुलाब महाराणी न निजर करी।

'तू अजू काली व्हीई।"

गुलाब सर म् सुकडगी।

'तू नाह व्हीई पगलसमम, डोकी।"

गुलाब रै नणा री रानड अर चर री गोरो रग, पल भर म उडग्यो।

खिडकिया ब " करद।

गुलाब खिडकिया ब द करदी।

'अब था म्हाज नजी।"

महाराणी गुलाब नै खुद रै नजीक खांच, बी रै गाला ऊपर नाक लगा'र अक लाम्बी सास खाची।

'हूं, गुलाब! तू साच माच गुलाब व्हीई वो ई रग, वो इ रूप वा ई सुगन।"

मुरझायोडा गुलाव रो कळा फेरू खिलगी।

"म्हारळी काचळी रा ब घणा ढीला कर, खाव घबरीज।"

दो हाथ महाराणी री कमर कानी बधिया, आंगळियां र परस सूं महाराणी र सरीर म झरणाटो चालग्यो।

गुलाब ! थ्यारळो आंगळियां सूं तो लाय तिळग।

आंगळियां वाक मे मत गुलाब वांन ठण्डी करण री कूडी कोसिस करी।

'उमिया ! दूजी डावडी कानी देख महाराणी बोली।

'अन्नदाता !'

तू म्यारळो मूण्डो कांई देख ? जा चमेली री चोटी पकड ल्याव।''

उमिया चवर आंगणे मल भोय सूं अदीठगी।

किस्तूरी !'

इय्यां है तो पलका बिछाऊं।'

''वो म्यारली नु वी ओढ़णी में तारा झड़्या क नी ?'

'च दरमा री कसर औंई।''

'जा ल्याव देखा'

किस्तूरी सहगी।

दासू !''

'अन्नदाता, कोई कसूर व्हेगो कांई ?

'अब केसा मे अणूतो तेल मत लपोळ जा न्हावण री सार कर।

दासू दांत काढती दडबडीजगी।

'सु दर !

माई बाप हथाळिया में थूको।''

'इब पग चांपणी पणी व्हेगी। देव ! इ डावं पग न घणो दाब दियो। थर जा दाता र मला म मीठ नाख।

लार रगी गुलाब डावडी, महाराणी री खास मानेतण।

'गुलाब ! अय आ म्यारलं नैडी। अरे ! आज तू कुम्भळायोडी क्यू औंई ?

'नो केत ? ऊ हूं कोनी।''

'गुलाब ! थ्यारळ सरीर मे कांई चेप औंई जीव नी व्है क तन छोडू।'

'छोड दो महाराणी सा, म्है, म्है　　''

'तू मन तोड द गुलाब ! भाग द, मन मरोड नाख।''

'महाराणी सा।'

'गुलाब ! जाणं क्यू मन लखावं तू लुगाई नीं मडद औंई'

''महा　　''

'गुलाब ! थ्यारळ सरीर में उजब सुगन औंई नणां मे उजब मस्ती, परस में उजब झरणाटो।''

"म्है, म्है—"

"हा, गुलाब ! जाणै वयू थ्यारळे परस सू म्है बावळी व्हे जावू ? थ्यारळी काचळी "

'कसदू ?"

नी खोलदै अर हा थ्यारळी ग्रोन्णी ?'

'डील ऊपर "

'नी बौत तपत ग्रोई, डील उघाडो ई सवावै ।"

महाराणी सा"

'हूँ

"साथळा तो —"

'हूँ, काली किणी री दथी ग्रोई साथळा ग्रडो ? केळ रो थम्ब दव्यो ?"

'हूँ।

"हाँ देख, स की देख' ।

जाण वयू गुलाब न लखायो क वा लुगाई नी मदद ग्रोई वी र सरीर मे ग्रेक भरणाटो, सरीर मे ग्रेक सुगन नणा म मस्ती, परस म चिणगारी ग्रोई । वा, महाराणी न काठी पकड र वी सू कुस्ती करण री तेवडली । महाराणी मुखमल रा नरम गिद्दै माथ लुटण लागी । गुलाब री पाखडिया बिखरगी । ग्रचाणचक भेर बाजण सू रामत म घान्दो पडग्यो । सग डावडिया दडबडावती ग्राय पूगी । डील उघाडी महाराणी सरम सू ग्राख्या मीचली ।

(४)

घरा मे घुसियोडा गैला, दिन ऊगता ई ग्राहू दिसावां में निकळग्या । रात रो ठस्योडो मून बतळ री गेडिया रै सा र पाळो चालण लागो । डागर, ढुवारया हूदा याण छोड गळिया सू बजार ग्रर बजार सू रोई र मारग चराई ग्रर पेट भराई री जुगाड में जुडग्या । बामण, झोळी लटकाय, पेटियो पकावण री घुन मे मळूभग्यो । घट्टिया सू घमीडा खाय, घरवाळिया, पिणयारिया री पलटन बणाई । बेर ऊपर खाली घडा री घरणाट, ढकली री ढीठाई न फटकारण लागी । बाणियो बोवणी री बिळिया सू बंधियोडो कलेवो साथ घात ल्यायो । बाळक, बजार में पगत जमाय बिकण री बारी बाघण लागो । डेरा रा डोढीदार, ग्रमलवाणो कर हथाळी रो रग पाको कियो । ग्रिस्थी रै घरम सू घायियोडो, मडकल मुकनो, माडाणी मन न मार, बजार री नाड पकड भावा रै भवरजाळ मे भवग्यो । बींन बैठोडो बमडो मूछ्या छटवाय दरपण माथै दोरो व्हेण लागो । रूपाळो मदगल में भार्भरिया रा भिणकारा सू मट्योडा काना, पिचकियोडा गाला ग्रर चूधी ग्रांखियां

न मीणो नेवनी रमत मे लागी। हळजर नुव नारा री जोड री पूछा मरोड, हळ हांकण लागो।

रण भर ठागी सू मुरकडीजता चूला र नस सू निवास ग्रर नाक सू, धूंवो ऊठण लागो। छोरिया गोबर री उडीक म गळी गळी री परकमा मे पाद सू घण री सौगना तोडण लागी। फूमियो छागा न हाक्ल करी। माण्ना रो टोळो लिय घीसियो घोरा मे घमा चौकडी माण्डी।

स की वो ई है। रात नै जको काम ग्रधूरो छोड्यो हो वो ग्राज पूरण करणो है। काल र उधार का ग्राज भुगतावणो है। ग्रावण वाळ काल री जुगत ग्राज रै सवाल सू सै घी है झाडा झपटा, पूजा पाठ लण देण न्यात सगपण सिरावण ब्याणू ग्रमल गाळ, गेर गोठ, झगडा सम्प सुख दुख ढार मिनख न्विस रैण, लुगाई मडद छोरा छोरिया, जड चेतन, राजा रक सगा रो ग्रक पडपच। थक वीं न थकावो वी चुणावो की घुडावो। की घडो, कीं मागो। मरो मारो। जलमो मरो। परणो ग्रेक सू दोय दोय सू चार ग्रर ग्राग जितरो सरधा उतरी समा। उमाव पोमाव याव, इ याव बणाव, देखाव लाड प्यार झगडा ग्रर सम्प सग वे ई खेल। पीढिया रमती ग्राई ग्रापा रमा, ग्रावण वाळा रमसी। ग्रो ई रासो ग्रो ई पासो। ढाळो ढाळ ववत पाणी र रल दाई है जीवण इ नगरी रो। सग ग्रापर हाल मे मस्त काम म कळीजता। ग्राळस उडावण सारू ग्रमल दुख बिसरावण मन्गल उपजावण दारू जूण सुधारण सारू दान, पुन भजन भाव पूजा पाठ। बसी काई है तरसिंगा रो यात जुझारा री ख्यात मिनख जूण री भाग, चीजाँ रा ठाठ।

इतिवास घणो पुराणो कोनी पण पाणी परखियोडी तलवारा री पळको ग्रजू ग्राँखिया म चिलको कर। बसता इ तनोट न जूझणो पडयो पाडोसिया सू। पाडोसी, जका प्रीत पाळण री जागा ईड बाधी सम्र री जागा साको माण्डयो। ग्रो ई कारण है क तलवार र जक कोनी लागो। बाया मे बान्टा खातर थोथ नी रयो।

चालती गाडी र ग्रचाणचक ग्रेक धचको लागो। पइड म बळ पडग्यो बळन्ा रा नथूना फूलग्या, पिण्डलियाँ में मछिया चढगी। सीगडा जमा मे घुमोड वे जोर सू हाक मारी। ऊपर बठी सग सवारिया हिचक सू हडबडायगी। गीत री लार रयोडी कडिया, लटकगी। मूछा र बट दवता तिरछी निजरा सू गोरडया न निरखता मतवाळा मोट्यारा रै मूछा र बाला म ताण ग्रायगी। नणा मे मदरी जागा भी ग्रचूम्बो ग्रर लोई उतरग्यो। वेर रै ठेठ मूण्ड ग्राग ग्रायोडी ढेकली गिड गिडी र गणण गणण घूमण र लाग ई पाछो गटो बीडियो। हाथा सू रास छूटगी। नारयो भिडक'र भागग्यो। बामण रै हाथ सू पेटियो पडग्यो। दो गूलरिया बोऊ बोऊ कर एक दूज माथ टूट पडया। बीच बिखरियाडी बाजरी न चाखनी ऊभी ग्रेक

माय चाटगो। एक वी र सींगां सू भिडणए लागी तो वीजोगी वी री पूछ खावण रै लोभ मे जबाड माथै लात खाय खानदानी सुर म मभावण लागो। पिणयारचा रै माथ रा घडा घडाघड धूड माथ ढुळग्या। हडबडाट म आयी मूती कर, भागण री फिकर मे भूरियो भाडो घोतिय री लाग देवणी भूलग्यो। बोगो, बाणियो ऊकचूक व्हे, दो रा चार घडा गिणग्या। लिया वी सू दूणा रिपिया गिरायक न पाछा पकडा दिया। चोपा र हाथ सू सीजियोडी घाट री हाडी टूटगी। सुरसती सोगरै री जागा, बळती ऊगळो झाल लियो। बढियो तिणखला री जागा खुनरी चारै आगळिया बाढली। रमभूडी ढका भरियोडै टाबर न खाक में दाब मग गाबा, गोबर सू लपोळ लिया।

ढम ढम, ढम ढम घड, घड, धड, घड, घड घडाघड, घडाघड घम घड घडाघड घडघड, घम। पू पू अ पू, पू पू पू पू अ, घड घम घड घम रक रक र थोडी थोडी ताळ सू च्यारू मेर गूजगी। बस्ती रा मग लोग हाथ रा काम छाड घडबडाय घरा र बारण आय ऊभा। सगा री निजरा गढ र वी बुरज माथ अटकगी जठ सू आभा तै गुजावण वाळा ततीडा ऊठना हा। स कोई बगना व्हियोडा अक बीज न धूरण लागा। ठजब सो घबराट सू काळजो धक धक करण लागो। सूधी ववती गगा म बिना काई हडबडाटै र अचाणचक आय इ ताफाण सू च्यारू मेर गारगेर मचगा। जीवण अनिस्च म भूलग्यो। आवण वाळै काल र भौ सू उजब अणखणावणी आवण लागी। समझदारा री जुम्मो बधग्यो। अण समझा खातर आगो हगी टाबरा र रामत पण माइता सारू आफत आ पडा। लुगाया चूड माथै घडी घडी हाथ फेर ऊचो चढावण लागी। तीर, तलवार भाला खाण्डा गी साळ सम्भाळ व्हो। देखता देखता चौवट में लोक अणमावतो भेळो व्हेगो। पलक झपता च्यारू मेर ऊटा माथ नागी तलवारा लियोडा असवारा रो तातो लागग्यो। सग अक दूज र सामो जोवण लागा। आ भेर क्यू बाजी भाऊ?" अक अधगावळो उमर गो सोट्यार, पाखती ऊभ अक दूज मोट्यार न पूछयो।

कोप आई,'
क री?
जुन री।
'साको?'
'हू'
धातो हगो अेक तीजो मिनख बिच्च बोल पडचो।
'कुण आई धाडवो?' पलोडो मिनख पूछियो।
"है कुण? माथा रा पाडोसी, क लगा क वाराह।' तीजोडो मिनख पाछो उथलो दियो।

हूं! वा री बापडा री काई हीमत? आगलो बी खायाडो कोनी खूटी" दूजोडो मिनख बडको दियो।

राण्डोलो हैगो पून रा लीरा, सूना आंगणा सू मसखरियां करण लागा। गूलरिया पाणी सारू बिलखण लागा। पिणघट र पोचो फिरयो। डाळा सूना हैगा। नागा रूंख, सूख र ठूठ हैगा। अक रात भर जाग रयी बीजी रात, बामी बाता री बतळ, तीजो रात, बारिया ब धणी, चौथी रा हुई ग्रणस री पांचमी रात कवारी, बीतगी। छठी रात सातमी रात, आठमी रात ग्रर नवा रात ग्रर निणती भूलियोडी अक रात।

(६)

राव विजयराज रा दस हजार सिपाई ग्रस्तर मस्तर सू लैस त्यार हा। गढ र माय छ खण्ड बणियोडा हा। गढ र परकोट सू चिपती पठियाळा ऊपर पठियाळा बणियोडी ही। नीच सू या पठियाळा म ऊपर पौंवण रो मारग परकोट र मायली कानी दा ग्रक त्यार कियोडा परकोटा रै बिच्च हो। ऊपर नीच रा पागोतिया भीत मे ग्रक मोट भाट न ग्रळगो सरकाया सू ई लादता। ग्रेक ग्रक पठियाळ कम सू कम बीस हाथ लाम्बी, सात हाथ चवडी ग्रर पाच हाथ ऊंचा ही। आग सू ग्र पठियाळा कबूतरा रा खाना ज्यू निजर ग्रावती। पण ग्र सारी पठियाळा ग्रेक ई माप री कोनी ही। सबा रो यारो यारो माप ग्रर काम हो कोई कोई पठियाळ मे तो हजार सिपाई खडा है सक, जितरी जागा ही। सबसू ऊंची पठियाळ, धरती सू तीस हाथ ऊंची ही ग्रर सबसू ऊपरली ग्रागण सू कोई तीन सो हाथ ऊपर। गढ रो घेरो कम सू कम डेढ दा मोल रै माय हो। या पठियाळा मे जागा जागा मोटा मोटा बगारा कियोडा हा ग्रर बार पाखती ग्रेक भत र बरोबर रा बीजा बगारा माय सू लीपियोडा हा। यारो ढाळ, बारली कानी ही। या बगारा मे गढ रो मायली कानी सू कोई चीज मेल्तता ई वा सीधी गढ र बार जाय पडती। यारा मूण्डा, मायली कानी चवडा पण बारली कानी साकडा हा। या र नडा फेर तीणा, बार दुसमण माथ मीठ राकण सारु हा। या पठियाळा में मोटी मोटी चार पाच भट्टिया खुदियोडी ही ग्रर पासती लकडिया रा ढेर लागोडा हा। भट्टिया माथ पाणी ग्रर तेल रा कडाव चढायोडा हा। पासती रा बगारा गरम तेल ग्रर पाणी बूढण सारु हा। इ भात कोई चार सो कडाव ग्रर बू डिया ग्राठू दिसावा मे राखियोडी ही।

ग्रेक ग्रेक कडाव लार तीन तीन र हिसाब सू भाटियाणिया त्यार ही। या रै साग ई ग्रेक ग्रेक मदद सिपाई मदद मे हो। साग ई छोटी मोटी केई डोलिया ग्रर डाला पडिया हा ज्यासू तल ग्रर पाणी बार ऊभायो जातो। ई काम सारु दो मोटा सिरदार, दस नपसिरदार ग्रर केई मर्दानी लुगाया मुकर ही। भट्टिया, ई ढ़ग सू खुदियोडी ही क काम पटिया ग्र जौहर र काम में बी ग्रा सक हो।

तल री पठियाळा सू ऊपरली पठियाळा मे तीरन्दाज हा। या तीरन्दाजा रा

तीर कम सू कम पाच सो हाथ री मार करण वाली सगती रा हा। श्रठ बा निवली पठियाळा दाई भीता मे तीण किवाडा हा ज्या म सू तीर बारै कानी छूटता। श्रठ तीणा इ ढग सू किवाडा हा कै या में सू छोडयोडा तीर गन सू ढाई तीन सौ हाथ श्राग ऊभी फौज र सिपाइया रै सीना न बीध देता। पण नीच सू चलायोडा तीर या तीणा माय सू गढ माय नी पूग सकता क्यू क ढाई तीन सो हाथ श्राग सू या म तीर पूगावण वाळा तीरन्दाज सुलतान री फौज मे गिणती रा ई हा। पठियाळा मे हजारा बाण श्रर तरकसा रा ढेर लागयोडा हा। या मे श्रग्निबाण बी भेळा हा। त्रिसूल रै श्राकार रा, श्ररधचन्दराकार, श्रर काटीला नुका वाळा भात भात रा बाणा रा ऊपरा ऊपरी ढिगला लागोडा हा तीर दाजा री फौज रा पाच सौ सिपाई दा सिरदार श्रर पाच टोळी रुखाळ श्रठ तना‌त हा।

सबसू ऊपरली पठियाळ माथै डग्ळ श्रर गोळा रा ढेर हा। श्र गोळा ऊपर सू गुडाया जाता, जका कै सीधा दुसमणा माथ पडता इ वारी भगनाळ खोन देता। पण या न धरकावण री घडी तद श्रातीं जद दुसमण खाई न पाट गढ री भीता ऊपर चढण री मतो करतो। गोळा र श्रठारी खाण्डा रा ढिगला लागोडा हा। बळवान हाथा सू फकयोडो खाण्डो श्रेक बार मे कम सू कम पाच दुसमणा रो माथो काटण री खिमता राखतो। खाण्डा फकण सारू श्रेक हजार सिपाइया न खास रुप सू सिखावण दी गई। सिखावण मे या लोगा मू भमा करवाया। भमा नै काट, जद खाण्डो जमीं मे घुस जातो तद सिपाई न प्रवीण मानियो जातो। श्रो काम श्रेक ई हाथ सू श्रर श्रेक ई बार मे करणो पडतो। खाण्डाधारियां रा मगेर लोव रा बणियोडा हा। श्रेक खाण्डाधारी री खुराक, कम सू कम चार बकरा रो मांस हो। या रो तोल, चार सू छ मण र बिच्च हो। फेरू बी यां में इती फुरती ही क श्रै लोग घोडा री लगाम पकडयोडा कम सू कम दस कोस दौड सकता। खाण्डा फकण री जागा मोटी सुरगा दाई बगारा हा ज्या मे श्रेक साग चार श्रादमी खडया र सकता। पण इता मोटा बगारा राकण रो घेय श्रो ई हो कै श्रेक सिपाई श्रठै सू श्राराम सू खाण्डो फक सक। गोळा रो भार बी चार मण सू लेर दस मण रै बिच्च हो। बगारा ताई यान पुगावण सारू घाटिया बणायोडी ही। कम ताग़त सू ई या न ऊपर खिसकाण री जरूरत ही। बारली ढाल सरू व्हैता ई गोळो श्रपण श्राप बारली कानी लपकतो। धक्को रिया सू वेग बध जातो श्रर वार खालो जावण री कम गुजाइस रती।

श्रो गढ इतो मोटो हो क कम सू कम पचीस हजार मिनख श्रेक साग समो सकता। गढ म बोत सारा मन, सभा भवन राजसिघासण साम फेलियोडो श्रागणो सिपाइया श्रर चाकरा र रवण खातर घर बी बणियोडा हा। बीचोबीच में देवी

तन्नो गी जबी व राजा गी कुळदेवी ही। विसाल फूटरी कारीगरी रो बेजोड नमूनो, मिन्दर हो। मिन्दर र माय सू ई सुरङ्ग रो मारग हो। सुरङ्ग तनोट सू घणी आगी जाय टठ खडाळ माय पूगती। देवी रो ओ मिन्दर की जमीन रै माय घुसियोडो व्है ज्यू बणायोडो हो। गरभग्रह तो वा सू नीचो आयोडो हो।

राव विजयराव जुद्ध सारू पूरी त्यारी कर चुका हा। साकै रो तडो जाता ई जागा जागा सू गाव रा सिरदार आर आपरी सरदा सारू घोडा ऊट धन धान सस्तर इत्याद लेर कदका ई तनोट पूग चूका हा। छत्तीस भातरा घोडा भेळा किया? अबीह जका निरभ हा बिना कोई हिचक रै अ घोडा भिडणो जाणता २ अहराव, जका सापा रा राजा दाई चाल चलता। ३ आफू जका नितरा चार पाच तोला अमल खाय जाता, घोडो तुरन्त मर जावतो पण सवार न रणखेत सू काढ अळगो ले जायन ई प्राण त्यागतो। ४ अजोका, ज्यान अेक छिन रो चैन नी पडतो। अ अदृपीर जीण कसियोडा असवार न उचायो रणखेत में अडिया रता। अेराकिया खास करन जुद्ध सारू त्यार करयोडा हा। ६ किरणाळा, घणा फूटरा अर किरणाळ दाई दिव दिश करण वाळा ७ कोडीधर, जका रो अक अेक रो मोल करोडा रिपिया। ८ खचर, जका जद दौडता तो अडी लखावतो क घोडो जमीं माथ नी असमान मे उड रयो है। ९ चखलल्ला ज्यारा नण गता जाण लोई वार नैणा मे अस्टपीर उतरयोडो ई रव। १० चचळ घोडा ११ तोखार, १२ पमग १३ मुसकण इत्याद घणा ई घोडा भेळा किया। ज्यार इलावा १४ फणधर, ज्यारी घाटकी अर किलङ्गी शेषनाग दाई १५ बपसकबडाळा ज्या सू भूसाकडजी बी भभीत व्है जाव। १६ मलफाणी घोडा सेर दाई उछळ न दुसमण माथ टूट पडता १७ मुमकणजात रा मुस्की छोडा १८ हेरू, जका दुसमण न हेरन वार करता, १९ सपतास जका सूरज रै सात घोडा री सगती वाळा। बीजी भात रा घोडा म २० विडग २१ हेवर २२ साकुर, २३ खगा, २४ आसग २५ उरिया, २६ मालाणी, २७ सिंधबऊ २८ मुलतानी २९ चितकबरा रो तो कोई छेहो न पार। भात भात र गुणा वाळा घोडा रो जमघट लाग्योडो हो। ३० पाणीपथा जका पाणी में तिरता हुया असवार न ऊचाया मोरचो लेता। ३१ गगेटिया, गगापार री तळटी रा ३२ हसजादर, ३३ उडणभ्रमर, ३४ ऊधरस्या फोरणा (ऊधा फिरन वार करणवाळा) ३५ चपल चरण बिस्तोण अर शालिहोत्रि प्रतिष्ठा सिद्धा घोडा बी विजयराज री फौज मे सामल हा।

या घोडा न गगा सिनान कराया। पीठ ऊपर चन्दन रो लेप कियो अर पाच वर्ण वाळो जीणा या ऊपर कसी। जीणा मे रणपथर जीण पथर गुडिपथर, लोहपथर अर कातलीयाली पाथर अणगिणत।

नोट घोडा, जीणा अर पल्लाणा रो बखाण का हुड द प्रबन्ध सू लियो गयो है।

ऊटा अर साण्डा ऊपर पल्हाण कसियोडा हा। पल्हाण बी पांच भात रा। कुली कुकूरोल, बोदीयानागपण बाजतो वज्जावली, वेसरा बहिरणा अर थलपळांरा गूछा।

चार हजार सिपाई गढ री रुखाली अर बचाव सारु माय तनात कर दिया गया। गढ र परकोटै सू चिपती बारली कानी कोइ सौ हाथ चवडी खाई ही। आ खाइ चाळीस पचास हाथ ऊण्डी ही। खाई मे उतरण सारु अर तळ सू ऊपर चढण सारु कोई आसार कोनी हो। खाई रै अक कानी गढ रो परकोटो हो तो बीज किनार मोटी मोटी थम्बळिया गाडियोडी ही ज्यासू लगता ई धोरा रा डूगर छाती फुलायोडा ऊबा हा। या रै नडा ई खेजडा अर बावळिया रा गुच्छा हा। इ खाई म अेक खासियत आ बी ही कै इ मे धूड भेळी नी हेती। वीं नै बतूळिया उडाय न पाछो किनारा माथ लाय जमा कर देता। खाई म घर्ण जिनावरा रा सडियोडा हाडका वासता। अठ गिद्दा रो अेक छत्र राज हो। जीवतो कोई मिनख माय पड जावतो तो अ गिद्द कागला वी न चूट चूटन खा जाता। अजाण पहिया मिनखा नै रस्सा री निसरणिया किल र परकोटा मे कियोडा निशाण माय सू लटकायन बडा मुसकल सू बचायो जातो पण जिनावरा न बचावण रो तो सवाल ई कोनी हो। अेकर इ म अक माधो ऊट पडग्यो। वी री दुरगत देखन लोगा रो काळजो घणो ई कळपियो पण सग लाचार हा। दुसमण सारु आ खाई मौत र कुव सरखी हो।

गढ मे दो बरस लग खावण पीवण री सामग्री रो भरपूर भण्डार हो। यू रसद मगावण सारु गढ री सुरग रो मारग बी जापत रो हो। इ सुरग म बळद्या गाडी आराम सू आ जा सकता। सुरग अेक पक्की नर समान बणियोडी ही अर मारग म जागा जागा हवा अर चानणै सारु बिला दाई छोटा छोटा तीणा कर, वा मे भूगळिया घालदी। सुरग मे घोडा दौड लगा सक इतो खुलासो हो। यू आ ई सुरग बिरखा रुत में नर रो काम देती। सुरग रो, मारग मे आवण वाळ हरेक गाव मे अेक द्वार हो। पण लोगा नै आ ई ठा ही क तळा म पाणी भरण साह नर बणायोडी है, क्यू क म द्वार तळा र किनार ई व्हता अर जे कोई अजाण आदमी ई द्वार में घुस बी जातो तो डूगर ऊपर जायन पाछो बार निकळ जातो। क्यू क मुख्य द्वार तो ई नर मे आजू बाजू म व्हेता। या द्वारा रो फाटका उणी रग र भाट रो हेती अर इ ढग सू धरियोडी हेती क अेक दा मिनख या न हिलाय बी नी सकता। सबसू मोटी बात तो आ क किणी न वम व्है ई क्यू क नैर र माय अठ कोई नर क सुरग है। इ सुरग रो निरमाण कई बरसां मे पूरो हियो हो अर राज रा खास आदमिया र सिवाय इ री किणी न वेरो ई कोनी। धूड भरी आधिया र मौसम म सुरग र मारग ई अमीर उमरावा रो आणो जाणो रतो। बिरखा रुत म आ नर रो काम देती अर जुद्द री बिळिया रसद इत्याद पौंचावण में गुपत मारग रो काम देता।

(७)

यसोधरा अर रुकमणी दर्शी न नाट्शाळ दरदोल की। पद स्वामी श्री रा
चारण परस न यापरा हाथ चाणियो अर माथ ऊपर मगाया। सगीत रा सुर गूंज
उठिया। स्वामी श्री गढ़ मसरा रो सवाय गूंज काळ सू धीमी लय म यसोधरा रै
सागे एडियो। यसोधरा री गूंज सू मनळ मे चान्दू कम व्हेगी। श्याम अर साज
अर सगीत रो अगर पसरगो। स्वामी श्री र कण्ठ म घोज विठाम दरश अर पदाव
हो। सुगणा वाद्यां री पावमा सगीत र समन्दर म हिलोरां लवाणी सह कर देवती।
त्रिताळ रा बोल मन्द म ध ताक ताक तिरकिट धिन ता ता सुणीजता। अर र तो
यसोधरा अवध्ये म पहियोड़ी अरध भरी निजरां सू स्वामी श्री न निहारण लागगी।
सगीत र सुरां सू ई निरत रो ताळमेल हो। निरत मे विरकण मुद्रावा, भाव, अभि-
नय अर पग सचाळन सगीत री लय अर ताळ सू जुड़ियोड़ा व्है। सो मन्द माथ
पड़ती थाप र सागे ई झांझरिया री झणकार वा बोलां नै प्रगटावती। सहनाई अर
सुरई सू निकळियोड़ा मृदु कोमल अर मीठ न श्रवण कर आतमा आनन्द विभोर व्है
जाती। बिच्च बिच्च मुरकियां, सुरग जड सुख रो अनुभव करावती।

मुद्द सिवा निरत चाल हो। सिवजी समाधी में लीन हा। वां र शान्त रूप
सू सब मुग्ध हा। निरत री लय रै साथ ई सिवजी रो रूप बदळियो। शान्त अवस्था
न त्याग सिवजी प्रलयकारी ताण्डव सरू कर दियो। सगीत री लय दूणी व्हैगी।
ताना रा पलटा, मृदग में ताळ रा तोडा अर निरत म सिवजी रो सहारक रूप निरख
न धडधडी छूटण लागगी। यसोधरा ऊपर सारो सभा मण्डप मुग्ध अर आसक्त
व्हेगो। अर यसोधरा — ? राव विजयराज आज घणा उमाव भरियोडा हा।
वे अकचित व्हे, स्वामी श्री र सगीत अर यसोधरा रै निरत रो रस चाख हा। सगीत
री लय दूणी सू चौगुणी व्हेगी अर इ र सागे ई निरत री गत बी वधगी। लय
चौगुणी सू छगुणी तक बधगी। झांझरिया री झणकार अबू बी साफ साफ मृदग र
बोलां र परवाण सुणीजती। इ सारू सगळा रा कान नण अर चित र सागे ई सास
बी थम जाणा ठगी। यसोधरा री देही पर पर धूजनी सी दीसण लागी। मन्द र
बोलां री तनकार हम साफ साफ कोनी सुणीजती। सहनाई तारसप्तक माथ गूंजण
लागगी। स्वामी श्री रो कठ हम रुकियो हमै रुकियो इ अवस्था तक पूग चुको हो।
वा रो कठ बार नीसर चुको हो अर गळ री नसां भुजग ज्यू फूलगी। यसोधरा री
देही पसीन सू सिनान कर चुकी ही। वीं रो सारो परवास भींज चुको हो अर वीं रै
माय सू वीं री काची चिटक ज्यू झाकती देही माथ ओबा री हळदी सो उलाड साफ
निजर आवती। गाजा सरीर सू चिप चुका हा। रगत जड़ै वी र रात मुख अर
सहार री मुद्रा न निरख अडी लखावतो क सिवजी सरूप धरती माथ उतर न हम

स्रिष्टी रो नास करण वाळा है। यसोधरा या संग बातां सूं ग्रणजाण, बरोबर जांझरिया सूं झणकार निकाळती। वीरा पग पवन सूं बी तेज ग्रर लगोलग चालता हा। मृदंग बजावण वाळो रुद सूं ई मस्त लावण सारू तड़फा तोड़ रैयो हो। ग्रचाणचक यसोधरा री देही धरती माथै लुड़कती लुड़कती बची। जाणै ग्रेक दम कठै ई सूं बिजळी कड़की के तारो टूटो। जाणै ग्रजाण नींद में सूता लोगा माथै धाभो छिटक पड़्यो जाणै सितार री तार झणक में ग्रावता ही टूट पड़्यो। ग्रणचेत लोग धाणचक चमक पड़्या क्यूं कै टोक बी बिळिया ग्रेक गुणी सूं ग्रवाज ग्राई 'सुभान ग्रल्लाह'।

'सुभान ग्रल्लाह' री गूंज सूं स्वामी श्री री ध्यान चूकग्यो, मदंग बजावणिये रा हाथ रुकग्या। संगीत रुकग्यो ग्रर यसोधरा री देही धरती माथै लोथ दाई पड़गी। हाहाकार मचग्यो। 'जय देवी तप्नी','जय स्वामी श्री' 'जय देवी यसोधरा' सूं मण्डप गुंजायमान व्हेगो। यसोधरा री देही माथ ग्रेक साग चार चार पखा सूं हवा करो जणी सरु व्हेगी। गंगाजळ रा छांटा देय वी ने चेत मे लाया। वीरा सारा गाबा पसीनै सूं ग्राला तड़बा व्हियोड़ा हा। मुख मण्डळ माथ पसीनै रा टोपा ग्रड़ा ग्रोपता जाणै मोती जड़ियोड़ा है। जाणै करुणारस साक्षात प्रगट व्हियो है। राव विजयराज स्वामी श्री ग्रर यसोधरा ने बधाई दी। यसोधरा नीची नाड़ किया मन ई मन जाणै की रस रो सवाद लेती रयी। वी रा नेण ग्राधा मिच्याळका सा लागता। स्वामी श्री यसोधरा रे बार मे राव विजयराज ने देवण जोग जाणकारी दी।

दूजी कानी क्यूं ई लोगा री निजरा वी ग्रवाज समचै घूमी ग्रर वे फाटी री फाटी रयगी। उठै तौ दूजो ई खेल हो। ग्रेक बीस इक्कीस बरसा रो मोट्यार ग्रेक हाथ मे रगत सूं भरियोड़ो तलवार ग्रर दूजै हाथ मे ग्रेक कटियोड़ो माथो लियोड़ो हो। ग्रेक लोथ पागती पड़ी ही। जाणै चाणचक काळो नाग सभा रै बिच्चै ग्राय-ग्यो है। लोग डर ने ग्रागा व्हेगा। वी लोथ ग्रर मोट्यार रै च्यारू कानी मण्डळ बणग्यो। मण्डळ रै बिच्च ग्रो ग्रादमी इं भांत ऊभो हो जाणै की व्हियो ई नी। वी रै चैरै ऊपर किणी तरै रा भाव निजर नी ग्रावता। पण वी रो मूण्डो दिप दिप करतो। नेणा मे उजळ चमक ही, डील भरियो पूरो। कद, ढाई तीन पूजता हाथ। रंग गोरो ग्रर वस सिरदारा वाळो। काना मे मुरकिया, गळ मे मोतिया री कण्ठी ग्रर ऊजळा बुराक गाबा।

थोड़ी ताळ वो यूं ई ऊभो रयो। पछै वो ग्रापरै दोळै मण्डप मण्डळ कानी निजरा घुमाई ग्रर वी जागा सूं घूम'र पाछो साग दिसा कानी मूण्डो कर लियो। वी रै घूमण रै साग ई लोग लारै खिसकण लागा। हूम वो मुळकियो। हाथ मायलै कटियोड़ै माथ ने वो जमी माथ फेंक दियो ग्रर रगत सूं भरियोड़ी तलवार ने धोतिय

माथ पू छ'र म्यान में घुसेडदी । हूमै वो उठ सू ~हीर व्हेण लागो । लोग आ गा खिसक'र वी सारू मारग कियो । वो चार पावण्डा ई आगै बधियो व्हैला क दो सिपाई वी सू थोडा अळगा साम आय र ऊभग्या ।

'ठरजा !"

वो ठैरग्यो ।

'राव री इया सू तू ब दी श्रौई । श्रथ सू भागण री उपाव सोचणो विरथा श्रौई' ।

वो बिना की कया, वा सामी जोयो श्रर मुळक न्यो । सिपाई श्रापसरी में श्रेक दूजै सामी देखण लाग । वे थोडा लार खिसकग्या श्रर हाथ सू श्रक न्सा में इसारो कियो । वो वीं दिसा कानी मुडग्यो । सिपाई वी र लार ~हेग्या । ज्यू ज्यू श्राग बधतौ गयो भीड वी रौ मारग छोडती गई । हूमैं वो श्रडो जागा पूगग्यो जठ राव श्रर स्वामी श्री ऊमा, वी कानी ई देखता हा । वो दो यू हाथ जाड र गरदन झुकाई । वो मूण्ड सू की बोलणी चावतौ पण वी रा होट फुरक'र रयग्या । वो दो यू हाथ कमर रै लारली कानी ले जाय'र बाध लिया श्रर गरदन नीच लटकाय'र ऊभो व्हेग्यो।

सिपाई राव न श्ररज की क श्रो मिनख श्रबार श्रथ श्रेक मानख री घाटकी उतारली है ।

'कांई नांव है थारळो ?" राव थोडा कडक र बोल्या ।

'पूनम !"

"कुण सालियो ?"

"भाटी"

"भाटी ! की रो ?

'जेतसी रो'

'काई व्हियो ? क्यू "

'वो भेदू हतौ'

'भेदू ?"

हां' वो इया उवा मिजरा दौडाय हाथ सू इसारा किया । वो ज्यां कानी इसारा किया वे मिनख उठ सू खिसकण लागा पण वा रै पाखती ऊभा मिनख वांरा हाथ भाल र वां न पकड लिया । पण श्रेक मिनख घणो श्रळगो कमर झुकायां जमीं माथ की सोधतौ हो । वो सगळा सू निजर बचाय मिन्दर सू बार निकळग्यो ।

राव रै इसारै ऊपर सिपाई यो भालियोडा मिनखा न राव र सांमा लाय पेश किया । या लोगा रा मूण्डा धवळा पडग्या ।

वो या सगा कानी निजर घुमाय देखियो, अर अेक हाथ भटकता थका बोल्यो 'भागग्यो"

"कुण ?" राव सवाल कियो ।

सिरदार यारो'

'बात खोलन साफ साफ बताव, अगूनो गाफन बणण री हुसियारी मत जता"

'अन्नदाता ! अ दसू माणस म्लेछ ग्रोंई । गजनी ग्रोंई अन्नदाता "

"हां"

'वो गजनी मे अक मोटो धाडेत बस'

'मैमूद"

'हा अन्नदाता वीं रा भेदू ग्रोंई

"काई प्रमाण ?"

"पूछ'र देखलो अन्नदाता ! जे नट जाव "

वो बात पूरी कर वी पैला ई व दसू मानखा माथो भुका र हामळ भरली । राव हुक्म दियो 'या न रोक लिया जावै । मि दर सू कोई बार नी निकळै, जद तक म्हैं इग्या नीं दू '।

हुमैं राव वा कानी घूम'र बोल्या "तू देवी र मि दर में अेक माणस रो वध कियो ग्रोंई अर वध करण रो दण्ड काई म्है ?'

"अन्नदाता जाणू । प्राणा रै बदळ प्राण' ।

'तन सफाई मे की कवणो ग्रोंई ?'

"नी अन्नदाता ! हूँ बळी चढ़ण न त्यार ग्रोंई ।

यसोधरा पुळक'र वी कानी देखियो । अेक छिन साह दो या री निजरा मिळी । यसोधरा लाज सू दबगी । वो अचम्ब मे पडग्यो । कोई जाण पचाण नीं । कदई पला देखी नी पण जाण क्यू अडी लाग, जाण बरसा री ग्रोळख है ।

अक छिन साह च्यारु मेर सन्नाटो छायग्यो । राव स्वामी श्री सू हवळै स बातचीत करी अर इग्या सुणाई ।

'पूनम भाटो जेनसी रो, त देवी र मि दर मे या सग लोगां साम अेक माणस रो वध करण री चूक करी ग्रोंई अर तू खुद बी इन हाकर चुको ग्रोंई । इ वास्ते मा तन्नो री इग्या सू तामजै वध री इग्या दी जावै । बोल तनै की कैवणो ग्रोंई ?"

वो माथो धुण'र नटग्यो । "हूँ मरण न त्यार हौं '

भीड में सू घणाकरी भेळी धुनियां ग्रावण लागी 'नी नी नी !'"

यसोधरा री ग्राख्यां ग्राडी ग्र'धारो ग्रायगी । वा रुक्मणी री बाय पकड़ र माथो वी र खांध माथे टिकाय दियो ग्रर नण मूंद लिया । लोग ग्रापस री मं फुसफुसावण लागा ।

सिपाई राव सांमी देखण लागा । हम राव ग्रेक'र चौफेर निजर घुमाई । यसोधरा कानी देख'र वे ठीमर व्हेग्या । स्वामी श्री र सामी देख वे नैण भुकाया ग्रर थोडा मुळक्या । राव बोल्या भाटी राज री परम्परा परवाणे वध र बदळै वध रो दण्ड ई हिया कर । पण स्वामी श्री री इच्या ग्रर परजा री मसा देखता थका इ घडी पूनम जड वीर रा प्राण लेवणा ठीक कोनी । इ वास्त साको व्हेणे तक पूनम न मुगत कियो जाव । पण साको निमटियां पाछ पूनम खुद देवो र मिन्दर म हाजर होय दण्ड रो भुगताण करला । इ बात रो जुम्मो '। 'हूं हूं हूं !' भीड म सू ग्रणगिणत बोल सुणीजण लागा । या में ग्रेक उवाज यसोधरा री बी ही । पूनम न दूज दिन मिळण री इच्या देय राव ग्रर स्वामी श्री उठै सू व्हीर व्हेगा । सिपाई पूनम नै मुगत कर वा दसू मिनखा न ब दी बणाय लयग्या । भीड पूनम न हाथा ऊपर उठाय ली तो । ज तन्नो मा री, ज राव विजयराज री ग्रर ज पूनम वीर री धुनियां सू ग्राभो गूजग्यो । यसोधरा देर ताई मुळकता नणा सू पूनम न दखती रयी । वी री नस नस थिरकण लागी । ★

(८)

राव विजयराज देवी र मिन्दर सू पाछा मोलां कानी ग्राया तो रात पड चुकी ही । राणी र मोल म ग्राज ग्र धारो हो । राव र पधारता ई हाजरिया दोडणा सरू व्हेगा । राव, राणी र मोल मे ग्र'धारो हेणे रो म्यानो पूछियो तो उमिया ग्ररज करी—

'ग्रन्नदाता! ग्राज महाराणी सा खुद रै हाथा सू पकवान बणाया सो थाकग्या ग्रोई । सिनान करण पधार्या ...'

ठीक ग्रोई जद तो म्है ग्राज महाराणी सा र हाथ सू परोसियोडो ई थाळ ग्ररोगा ला ।'

ग्रन्नदाता ! हुडी करू ।'

नी, उतावळ कोनी ।'

इत्तै में महाराणी खुद हाजर व्हेगी ।

'जीवण घन ! ग्राज तो ।

'हा अन्नदाता ! पाछै मिळणो न्है नी व्है। खुन्र हाथा सू ?'

'चिता व्हेणे रो कारण ?'

'राजपूतणिया अब असल रैयी केत अन्नदाता! अबै तो गोलणिया रैयी श्रोई।'

म्है, समझ्या कोनी?

'भाटी राज री महाराणी कुन्र प्राणा र मोह लार राव न छोड, पीयर जाव, ईं सू अधिक लाज री काई बात न्है सकैई ?

'राजा रो हुक्म तो सगळा सारू सरखो है। आप ऊपर बी लागू व्हे।'

'जदेई तो अरज करू अन्नदाता व '

'आपन तो म्है राजकवार देवराजरा रुखाळ सारू '

'हाँ, श्रो मिस तो बोत मोटो श्रोंई'

'आप इ न मिस मानो।'

आपर सामी बोलू आ तो सुपन ई नी सोच सकू । पण आप का कयू भूलोई हजूर क म्हूं मातर अेक मा इज नी पिण अेक घरनार बी होई।

'राजा रो धरम हैई प्रजा री रुखाळी रो। अर प्रजा मे आप बी भेळा। राजकवार देवराज प्रजा रै पेट श्रोंई इ सारु वा री रुखाळ रो मोअज ऊपर खास जुम्मो श्रोंई।'

'राजकवार देवराज री रुखाळ करण रो आपरो धरम श्रोंई, इ न म्है बी मानू, पण राजकवार री आड म, म्है आपन छाड अेथ सू पीयर जावू परी, ईं नैं श्रोअजो मन नी मानै।'

'अब आपन बयान समभावा ?'

'हूँ अब मर्मभिवोडी श्रोई महाराज! महाराणी र नात मोअजो बो का धरम श्रो।'

वो हूँ समभा प्राणधन!'

'तो मोअजो फसलो सुणावण री इग्या मिळै महार ज ?'

देखा! सुणा'

'राजकवार देवराज री रुखाळ रो जुम्मो मोअजो श्रोंई। हू वा न मोअज पीयर भेजण रो ठावो प्रब न्ध कर लियोई। दासी अेथ ई रवलो। महाराज जीत न पधारसो बी दिन बधावला अर नी तर जोहर री ज्वाळा म भेंट न्डण रै ध म सू ब धी रवला।

'अेकर फेरु मावलो।'

'बोत सोच समभ र मत्तो कियो श्रो, अन्नदाता।'

हूँ आज राजकवार न खोळै म लय न थाळ परोगाला।'

'राजन ! आपन श्री मोह त्याज देवणी जोइज ।'

'मत भूलो महारासी सा क है अक बाप बी हा ।

महाराणी रै अक इमार ऊपर दा डावडिया राजक्वार देवराज न लावण सार दौडी । महाराणी खुद र हाथा सू मखमल रा आमण बिछाया । चान्दी सू फडियोड पाटिय ऊपर सोन र थाळ मे पक्वान परुस'र महाराणी जतन सू थाळ धरियो । पाखनी चान्दी री झारी अर चान्दी री गिलासा पडी ही । पलक झपता डावडिया राजक्वार देवराज न गोदी मे उठाय ल्याई ।

महाराज बौत प्यार सू राजक्वार न छाती सू चिपायो । राजक्वार देवराज री उमर चार-पाच बरसा र बिच्च ही । उणियारो मा बाप र दोयू र मेळ रो हो । हाथ लगाया मलो व्हे जडो सरीर रो रग नाक तीखो नण मोटा होठ पतळा अर राता चिट । अणजाण मिनख बी मूण्ड रो तेज देख र ओळख ल क ओ ई राज कवार ओंई ।

आवो बटा जी !'

ऊ हू

'आवो ! मोत्रज पास आवो ।'

'नी गुल… '

लाल बनासा आवो आप मोत्रज गादया आवो !

महाराणी दोयू हाथ पसारता हुया बोली । इ र समच ई राजक्वार, महाराणी र हाथा ऊपर उलडग्यो । महाराणी वी नै चूम'र छाती सू चिपाय लियो । राव रा नण गळगळा व्हेगा ।

लाल बनासा आज मोत्रज हाथ सू थाळ अरोगला राव बोल्या ।

घोतवा

हाँ, हाँ घोटमा अरोगो बनासा । महाराणी थाळ माय सू घोटम रो अक टुकडो तोड राजक्वार र मूण्ड में दियो । राव, राजक्वार न पुटाय खुद खोळ म लियो । महाराणी पाखती बठी ही । वी री छाती भरगी ही । राव रसोई री घणा सरावणा की, पण महाराणी तो भविस र अदीठ मे भवियोडी ही ।

राव महाराणी री चिता समझग्या हा । 'जीवण धन रै मम्बोधण सू महाराणी र विचारा रो तार टूटग्यो ।

'आप की हुकम दियो अन्नदाता ?'

'आज मौल म अन्धारो क्षोंई ?'

'अबै तो स की अन्धार रै डसियोडो ई ओंई राजन् !"

"आपन, मोत्रज बळ ऊपर भरोसो को "

'भरोसो नी हतो तो कदरी ग्रातमहित्या कर लेती, पण खाली भरोसै "

'कोई कुमी कसर व्है तो बतावो'

'ग्रन्नदाता रै राज मे कुमी किणी बातरी कोनी। प्रिजा ग्राप माथै प्राण निछरावळ कर।"

"पछ ग्रो ग्रधारो क्यू ?'

"चानणो ग्रन्नदाता सामी लाजा मर"

'परखणो पडसी"

'पलका बिछावू"

राव उजब निजर सू बूटाराणी कानी देख्यो। महाराणी लाज सू धरती मे गडण लागी पण उमाव र उफाणो ग्रावण लागो।

डावडिया र नणा म चमक वापरगी। दो बरसा सू ग्राज वारी बारी ग्राई, मोल सजावण री। महाराणी सात बरस छोटी व्हेगी। साकळ मौल रो खुणो खुणो सारम सू भरियोडो हो। मोल र ग्रेक ग्रेक माट माथ चमक हो। ग्रागणो पुळकतो हो।

(६)

राव रो इग्या पाळण मे दूज दिन साकळ ई पूनम, राव रै साम हाजर हियो।

"खम्माघणी ग्रन्नदाता!"

'हूं। पूनम जेतसी रो ?'

"ग्रापरी किरपा सू हूं मुगत ग्रोई महाराज'

"मुगत नी तू मौमजो बन्दी ग्रोई'

'हू। म्है तन यू ई मुगत नी कियो ग्रोई'

'इग्या करो ग्रन्नदाता, माथो भेंट धरू"

'हां। माथो ई जोइजै मौमज"

पूनम सडाकै सू म्यान माय सू तलवार खांची ग्रर ज्यू ई तलवार गरदन कानी वठाई ग्रर राव बोल्या "पूनम! तू साचाणो वीर ग्रोई। ई सारू ई हूं तनै मुगत कियो ग्रोई। तू, म्हाटो राज री रुखाळ सारू बोत मोटो काम कियो ग्रोई वा भेदुवां नै ग्रोळख र'

"म्है तो ग्रापर पगा हेरलो धूड "

'नी पूनम! हू तन म्हाटी राज रो भड किवाड मानां हां ग्रर इ सारू सामजा प्राण सकट में घावणो पावा'

"इग्या करो अन्नदाता ? ओ मौअजो सौभाग ओई"

' दुसमण रो भेद लवण सारू माथो जोइज पूनम ! दुसमण री छोटो मोगो नी,गजनी रो सुलतान ओई।

पूनम, तलवार पाछो म्यान म घती, अर माथो झुकाय बोल्यो "अन्नदाता रो इ किरपा सारू "

'माग ! मोल।'

"आसरीवाद'

'अेक बात ओई

'सिर नणा ऊपर'

'गुलाब त्यारळ साग रेवली" गुलाब कानी सकेत करता हुआ राव बोल्या।

"जद तो काम बोत सोरो व्हे जासी अन्नदाता, पण ..

'पण काई ?"

"परख किया बिना '

'सोन सू खरी। फेरू बी परख करल त्यारळ ढग ढाळ सू"

'नी, बस भरोस रो ई बात ओई दाता ! क्यू क लुगाई जात

"महाराणी रा भवारा थोडा तणग्या पण पूनम रै चिलक्त चर सामी निजर पडता ई गुस्सो गळग्यो।

"खरची, अणखूट ले जावो। सात दिना में पाछा आवो'

दो नौळी सोन रा टका पूनम र हाथा सू प राव मौला मे पधारग्या। गुलाब री उडीक में वो न रणवास र बार ठरणो पडयो। वो बार ऊभो भावो र सुपना मे सुध बुध भूलग्यो। अेक हाथ, वीरो बाहुडो पकड माय खाच लियो।

पूनम !"

'हू। कुण ?

'हां" वी र नणा म नण गडाय महाराणी मुळकी।

'इग्या करो अन्नदाता !"

"इग्या नी, मोळावण ओई"

ज्यू आपन सोव'

'गुलाब, म्हारळो खास डावडी ओई'

'व्हैली"

'ओई। म्है दो तन, अेक मन हा"

"म्है अेकलो ई "

'नी, गुलाब त्यारळ साग चालली। इ री चाव ज्यू परख कर सक, पण "

"नी, मौसजे परख बीजी नी करणी अन्नदाता,"

"ओ हो ! काई दाता अर अन्नदाता, लगाय राखी ओंई ?"

"अन्नदाता !"

"फेरू वा ई रट, सुण ! गुलाब जे त्यारळ रूख बरताव सू कुम्नळायगी तो समझ लीज क महाराणी "

"आव "

"पूनम ! कितरो प्यारो नाव ओंई ? जडो नाव वैडो ई रूप रङ्ग, डोल अर "

"मोडो व्हैई अन्नदाता"

हूँ। लै आ म्यारळो असल हीरा पन्ना अर मोतिया सू झनी मूदडा, सध विचाण री"

आ क'र महाराणी खुदर हाथा सू आदरी मूदडी खोल पूनम री आगळी म परायदी ।

'हजूर, ओ काई ?"

"क्यू कम ओंई ?

"नी। आ - "

"हाँ, गुलाब साग ओंई, सग समझा देसी'

'पण म्है '

"जादा बकणी नी ! ब्हीर व्है जावो । जावो, जावो अब सू । मोडो मत करो। गुलाब ! ओ गुलाब !"

"अन्नदाता !"

"जा, इ न लेजा। नारयो खुन्यो चरयो दीसई। नाय पात, काबू कर लीज'

गुलाब, पूनम रो हाथ पकड'र वींन बार म्याच ल्याई । महाराणी मुळकती देखती रैयी। पूनम दास सू ठोकर खाय गिरतो गिरतो बचियो। मूदडी, पूनम री आगळी म फॅसगी । महाराणी न अक आगळी सूनी सूनी लागण लागी। रै र न भैर पेरू बाजण लागी। दा साण्डा कसियोडी, दो असवारा न लेय डागा डग भरण लागी। महाराणी अेक लाम्बी सास नाखी।

*:

मुलतान र दक्खण पूरब म सिंधू अर सूनी हाकड़ा नदी र बिच्च पड़िया सुनसान धोरां म अेक नुवो नगर बसग्यो। अन्दाजन चार पांच मील र घेर म मोटा मोटा तम्बुआं री कतारां लागोड़ी ही, ज्यां ऊपर हरा झण्डा फरावता हा। हवा रा झबका सूं पदा व्हियोड़ी लैरां र कारण फट फट री उवाजां र रैं नै कानां म आवती। रात र डरावण काळस में असमान री दीवड़ां झिगमिग करती। पठान यां तम्बुवां रै ऊपर झिगमिगावती मसाळां मणपिरियां लावती। दिन र चानण म य ऊजळा सुर्पेद तम्बू अड़ा लागता जाणैं बरफ रा टीबा पड़्या व्हे। सिंझ्या री रातड़ जद घरा आवती अर यां रो रंग लोई ज्यूं व्हे जातो वीं बिळिया असमान में छायोड़ा असमानी काळा अर राता बादळां रो लरियो फागणिया रंग बिखेरतो। इ बिळिया यां तम्बुवां र मूंढ रो रंग पीळो पड़ जावतो काया बयळीज जाती। पण रात व्हैतां ई नदी र धी किनार सूं मोट मोड़ाया अड़ो लगावतो जाण हजारां किस्तियां समदर री छोळां म चोगती धणी आपरी मस्ती म धीमे धीमे आग बध रयी है। निजर धुनी र वग सूं बी हज घटी उठी सपाटा लगावती अर आगा फिर मो र सबती। अड़ो इ धारत बी ललावतो क पवन र वेग र कारण भिण्डा नरावता अर मसालां टिम-टिमावती। इ धारत थांरी असली भौं रो अन्दाज टोपणो घोन दोरो व्हे जातो। कदई यूं किस्तियां मैंडी रिगसतो लखावतो तो कदैई उल्टो बवतो। असमान सूं झिगमिग करती असमान री दीवड़ियां अर मैदान री भुझमेलता अर मगज री उपज यां दीवड़ां में जाण होड लागोड़ी ही। पवन र झबक साथ ई अ मसालां बुझती, लगती, फेरू लगती। निजर हिवकोळा खावण ढूक जाती पण हिवकोळा खावती सी दीसण वाळी अ भरम री किस्तियां तो साग जागा ई मानख न भरम मे बगनो कर नाखती।

बीस हजार सिपाइयां र रवास सारू तकरीबन चार हजार तम्बू, तीनूं कांनी सूं अरधच दर दाई लाम्बी लाम्बी बराबरी रै आंतर सूं जमायोड़ी कतारां में गाडियोड़ा हा। चार रस्तां री कनातां बारोबर ऊभी ही। अेक सौ तम्बुवां लार अेक र हिसाब सूं भटियारखानैं रो तम्बू खड़ा किया गया। इ में सिपाइयां सारू भोजन पकाईजतो। इ र बाजू मे ई अेक तम्बू दरजी रा कायम कियो गयो, लगोलग बीस बीस र बराबर र आंतर सूं अ कतारां लागोड़ी ही।

सबसूं आगलो कतार वाळा तम्बू लड़ाकू बादुरां रा हा। अ लाम्बी दाढी वाळा यवन सिपाई हा, जका क हमलो अर रूखाळी दोनूं री विद्या म पारंगत हा। हरेक तम्बू र मायन ई दो छोटा तम्बू कमरां दाई जुदा जुदा हा, यां में सूं

(मिश्कल) इत्याद सूं भरियोड़ा हा, व यां पण्डाळां मे धाकड़ पौर म पड़्या रैवता। या पण्डाळां रै च्यारूं मेर माय अर बार दस दस पगा री छेती माथै अेक अेक सिपाही नागी तलवार हाथ मे लिया पौरो देवतो। बारी बारी मर सिपाई अेक दूज र बिच्च कदमताळ करतो रतो। या स दूका मे पंजाब, मुलतान सि व अर केई छोटा मोटा राजावा र इलाका री लूटियोड़ी सम्पत हा। द देस री गलमफाई सूं बिखरियोड़ी पड़ी सम्पत न अेक सुलतान री तश अर तिजोरी आपरी पासवान बणा'र बीन कद कर राखी ही। पासवान बणावण मारू सुलतान रा कई सिपाई मारग सूं घणकरी लुगाया नैं पकड़ लाया हा, जकी तवाइफा भेळी भिळगी ही।

या सगळा तम्बुवा र बीचोबीच में अेक मोटो च्यूं पण्डाळ लागाड़ो हो। पण्डाळ र च्यारूं मेर दस दस गज री छेती सूं कनाता गाडियोड़ी ही। कनाता रै बारली कांनी दस दस गजरी छेती माथ तीर गज घेरो घालियोड़ा हा। कनाता र *मायली कांनी पण पण्डाळ र बारली कांनी वी हिसाब सूं ई यवन सिपाई नागी* तलवारा हाथ म लिया पौरो देवता। या सिपाइया रा सरीर लो रै साच ढळियोड़ा हा अर सिक्ला घणी डरावणी ही। नागी तलवारा हाथ मे लियोड़ा अ साक्षात जम री रूप निजर आवता। या रै हाथा में पकड़ियोड़ी नागी तलवार माथ जीरी बी निजर पड़ती वौ थर थर धूजण लाग जावतो क बस वीरी मरदा आ क्टी आ क्टी। इ वास्त ८१ कानी पग बधावणा छोड़ निजर फरण री मुनळब हो मौत न न्तणो।

इ पण्डाळ र माय अेक छोटो पण्डाळ अर हो जी मे कम सूं कम पचास मरदा र बैठण जोग खुलासै री जागा ही। औ पण्डाळ गैरै असमानी अर हरै रग र रेसम रो बुणियोड़ो हो। इ म जागा जागा जरी रो काम कियोड़ो हो। आखती पाखती मसीत र गुम्बदा दाई गुम्बद बणियोड़ा हा। तम्बू माथ जागा जागा जरी सूं कुरान री आइता रा कसीदा काढियोड़ा हा। या रै बिच्च जागा जाया सलमा सितारा जड़ियोड़ा हा। जिकी जागा खाली रवती वी जागा सेर चीता, रीछ, हिरण खिरगोस इत्यादि री खाला ढग सूं टाकियोड़ी ही। ऊपर छत मे सजावण झाड़ लटकियोड़ा हा ज्या म खुसबूदार तल रा दिया बळता हा। या म सूं निकळियोड़ै चानण री उजास सात गुणा जादा निजर आवतो। अेक दीयै रा पाच दिया निजर *आवता। इ रै इलाका पण्डाळ र माय अर बार दोनूं तरफ चांदी री मसाळा जुदा* चनन हा। पण्डाळ रै ऊपरलो भाग इ ढग सूं जाळीदार बायोड़ो हो कै मायलो धुवो आराम सूं बार निकळ सक अर हवा बी बरोबर ताजी आवती रव।

आंगण ऊपर कीमती कालीन बिछियोड़ा हा ज्या ऊपर कीमती गलीचा खूबसूरती बधावता। सिरै दरवाज र दावी कांनी बाघ अर चीता री पूटरी खाला

बिछायोडी ही, उठ अेक मोटो अर गोळ तकियो बी तरतीब सू सजायोडो हो। औ तकियो बौत जादा कीमती अर कळागिरी रो बेमिसाल नमूनो हो इ तकिय रै सार अेक भव्य मूरत साख्यात रूप में बिराजियोडी ही। पच्चीस बरसा रो अक मोट्यार, बौत मोट अर लम्ब पण भोपनै डील रो, डरावणा पण मदरा प्याला व्है ज्यू नण जरूरत सू जादा लाम्बा हाथ बीटलीदार काळा कस अर छाटी सोक पण भरियाडो दाढी। खौफनाक आवाज वाळो औ मोट्यार ई गजनी रो सुलतान यामिनुद्दौला महमूद निजामुद्दीन कासिम महमूद' हो। ई रै चेर सू सूरता अर क्रूरता बरोबर टपकती। चवदा बरस री उमर मे ई औ जुद्ध करणो सरू कर दियो हो। खुद र पराक्रम बुद्धि, हामत अर जुगत सू ई वो खुदरै भाई सू राज खोसन राज रो मालक बणग्यो। आपर बापरी परम्परा निभावता थका ई वो भारत री बेसुमार सम्पत, लूट लूट न गजना ल जावणी सरू कर दी। वो माया रो लोभी हो, अर माया वो र पग पडती।

खूबसूरती अर कळा सारू वी रो नेह अर उमाव सायत वी नै आपरी ईरानी नसल रो मा री देण ही। ई वास्तै ई वो सायरा रा मिजाज रो हो। वो सायरा री इज्जत करतो। वी रो निजू सुपना रो अेक ससार हो जी नै वो आपरी मर्दानगी मू साकार करण री सामरथ राखतो। कारीगरी रो प्रमी व्हता थका बी वो मूरती पूजा र खिलाफ क्यू हो, कै मूरतिया क्यू तोडतो? औ सोचण जोग सवाल है। सायत वी री यथारथ मे आस्था ही। वो मूरती पूजा में आंधै विस्वास री बास देखो। धरम अर परमातमा रै नाव माथ पळत पाप सू वा रो साबको पडियो। पिण्डा अर पिण्डता रै पाखण्ड न वो भलीभांत परखियो। देवतावा री जकी दुरगत पुजारी लाग बणाय नाखी अर परमातमा री भगती रै नाव माथै जकी रासलीला रो माग अर वभीचार इत्याद व्हता बी सू वो घणो नाराज हो। है सकै कै अ बाता कूडी बी है पण कारण तो कोई न काई ही जरूर जो ई आदमा न मूरतिया अर मिन्दर तोडण सारू उकसायो।

महमूद हिदुवा रो आपसी फूट रो फायदो उठायो, मूरतिया तोडी, मिन्दर घुडाया अर पिण्डता न गुलाम बणाय वात बेचन टका बाटिया। वा पाखण्ड रा पाटिया ऊधा मार दिया, अर सुदर मुलक पाछो गयो परो। है सक आपर या क्रूर कामा र कारण वी रा आतमा कदई पछताई बी व्है।

मुखमल र गिद्दा माथ तकिय रो सारो लियोडो वो सर व्है ज्यू दहाडतो। वारा गाबा बौत कीमती अर मजबूत खाल रा बणियोडा हा। अक हाथ वीरो अक्सर तलवार री मूठ माथ ई पडियो रवतो, जी सू वी री आगळिया रमती रती। वी रै माथ ऊपर अेक उजब सी पण आला पाग ही, जी म जागा जागा चेढियाडा नीतम

घर हीरा री माणा चवाचू प रर देवो । वी री पगरखिया म जडियोडा लाल मर पना सू किरणा फूटती सूरज री किरणा दाई अ किरणा वी आदमी री निजर न सैन कोनी हे सक्नी । वी र सामो जोवण री हीमत आछा आछा म बी नी ही। वी रै आमनी पामनी ऊभा उमराव बकर ज्यू धूजता अर वारा कान हर बिळिया बस सुलतान रो हुकम सुणण खातर ऊठियोडा ई रवता । अेक आदमो हमेस वीं रे साथ रैतो अर वो हो पलउली । ममूद गजनवी र जीवण काळ री हरेक घटना न वो साहित री रूप देय न गाथा बणा देतो । ओ ई वी री खास गुण हो ।

(११)

'हा, काई नाव थाँरो त्यारळो ?'

'गुलाब'

बोत मीठो नाव थाँई'

'चाख देख्यो काई ?'

'चाखण री छूट मिळियोडी थाँई महाराणी सा सू'

म्यारळ मन री महाराणी हूँ आप थाँई

पांणी री छागळ, ल्याई माग ?'

वा, काई व्है ?'

'हूँ, म्है तो सम्भाळ ही नी की'

जीव तो सम्भाळ राकियो ? क नी ?

वो तो सावकी जागा थाँई'

छागळ निकाळ, पूनम, डगळ डगळ पाणी पियो ।

'आपन भूख बी तो लागी व्हैली ?'

'भूख ? कस्सी ?'

'भूख वळ कस्सी ? टुक्कर री ?

क्यू बीजी भूख नी है ?

बीजी भूख तो हूँ कोई जाणू कोनी'

काई उमर थाँई ना गजी ?'

'तयाळीस री जलम थाँई'

तयाळीस ?

हू अेक हजार तयाळीस'

समझायो ! सोळा सतरा बरसा री थाँई ।'

' है सक'

'है काई मळै ? पण तू दीसण मे तौ बीस बाइस री दीस'ई'

'दीवड हाड री हौं'

'जदई तौ भूख सू ग्रणजाण ग्रोई'

क्यारी भूख ?'

भूख सरीर री, मगज री मान री मनवार री, ग्रर ?'

'ग्रब इयाली उवाली बाता ई करणी क की काम री बात बो ?'

कांई बात ? बोल तू ।'

'बोलू काई ? जौं काम सारू था र पछै पडी ग्रोई'

हूं ! कितरा कोस ग्रायग्या हा ग्रापा ?'

'ग्रैई बीस तीस'

'जद तौ घोडो भौं ई कटी मजू तौ

'गप्पा मारया तौ भौं थोडो ई कटसी'

कुण मारी गप्पा ?'

ग्राप'

म्है ?

'हा, ग्राप !'

'ठीक, वतळाई ग्रर गळ पडी ?

'गळै पड म्यारळौ ?'

'हा हा हा काई ? त्यारळौ काई ? बोली कोनी ?'

'साण्ड उतावळी ग्रोई

'खातो तौ ग्रा बी पड। माढ ई मोरी ढीली राक छोडी हौं।'

'दो'यू बैना ग्रोई'

जद ई

'क्यू ?'

'उणियारौ मिळ ई री थां स्'

'म्यारळौ क्यू ? हूं साण्ड र उणियार हौं ?'

'हव !'

गुलाब गुस्सै में साण्ड र तडी दी। साण्ड पाछी सपाट दौडण लागी। पूनम बी ग्रापरी साण्ड री मोरी नै खाची ग्रर वा बी पवन वेग सू भागण लागी। कोस भर री भौं माथ पूनम री साण्ड, गुलाब सू ग्राग नीसरगी। पूनम, गुलाब रै सामी जीभ काढ, मुळकियो। गुलाब, ग्रापरी साण्ड र ग्रेक कामडी लगाई ग्रर पलक झपता, वा, पूनम सू ग्राग नीसरगी। सूरज निजरा र सामो ग्रायग्यो हो। वी रौ उजास हमैं मन्दो पडण लागो। घोरां र ग्रथाग समदर री सूनियाड में दो साण्डा री सासा बीन डरावणी हाफ भरती।

माडा री परछाया तर तर लाम्बी बधण लागी । ढळन तावडै रा चमक म गुलाब र मूण्ड री भाई गुलाबी लागण लागी । बी र पोतिय रा पच ढीला पड चुका हा । पूनम घण दूज घोर न पार कर साण्ड न पाछो फेरी । दोयू री निजरा मिळी । गुस्स म भरियोडो गुलाब रो घगो चमचमावण लागी । पूनम सुन्दर साण्ड न बी र नडी ली अर बी र ऊपर ऊभो व्हैगो । गुलाब साण्ड न फेरू तडा दी । पूनम री साण्ड बी र लगोलग दौडती रयी । हम पूनम आपरी अक टाग, गुलाब री साण्ड माथ मेल, धब करतो जाय गुलाब र पूठ बैठग्यो । बीं री सुन्दरी साण्ड री मोरी बा र हाथ सू छूटगी । साण्ड थाक चुकी ही बी न चन मिळियो । गुलाब आपरी साण्ड री मोरी न डाव हाथ कांनी लय खाच मारी । साण्ड आगला दोयू पगा रा गोडा जमी माथ टेक दिया । अचाणचक लागै हिचक सू पूनम नीच खिसग्यो बी रा पजा पागडां मे अटकायोडा कोनी हा । नीच पडतां ई, पूनम हाथ पगा नै छोडा कर जमीं माथ चित्ता पसरग्यो । आलगा रा डाळा बार काढ बो धरती न ढीली छोडदी । बो सांसा रोक, थिर व्हैगो ओ भाळो देख, गुलाब अक र तो घबरायगी । वा बीन जभेडण लागी, पण पूनम टस सू मस नी व्हियो । गुलाब र पसीनो छूटण लागो । वा आपरो कांन, पूनम र सीन ऊपर लगाय, काळज री धडकण सुणणी चावती । काळजो धक धक करतो हो । गुलाब, पूनम रो हाथ पकड जभेडियो । पण पूनम अबोळो अर अडोळो ई रयो । वा छागळ लाय पूनम र मूण्ड माथ ऊंधायदी । हम पूनम, माथै न झटको देय ऊठियो ।

म्है केन हो ?

'आप अेप हो

हूं कुण ? तू कुण ? मन की निजर नी आवै ।'

'म्है, म्है गुलाब हों

गुलाब ? कुण गुलाब ? काटाळो ।

'लुगाई, डावडी, आपरी ।'

कुण है ? म्है केत हों ?

'पूनमसिगजी ! थोडा होस मे आवो । देखो, म्है गुलाब हों । ता अज साथ आळी ।'

मोअज साथ आळी ? मोअज साग तो कोई कोनी । म्है तो वाण्डो हों ।'

हम म्है कयान समझावू ? क्यू मसखरी करो ? थोडा होस म आवो नी ।'

'होस ! हूं मावो

गुलाब पूनम री अटल सू लटकती पोटली निकाळ, पूनम र हाथ म थमाई। पूनम पोटली माय सू अेक किरचो निकाळ, गुलाब रै सामी करी ।

'हूं तौ हौस म ई हौं पई। आप मरोगो मौमजा ?'
मन थोरा किया बिना कोनी ऊगै
'तौ ल्यावौ'
'ऊ, हूं ! बाक म'
'म्हे आप ई धर लेसूं'
नी, जीभ ऊपर म्है ई मल सूं'
म्है मर जासूं । म्है अमल नी— —?

पूनम, गुलाब र घर माथ हाथ फेरतौ फेरतौ, वी र बाक तक लेयगौ अर अमल री किरची वा री जीभ माथ धरदी। गुलाब लारले पास मूण्डौ ले जाय, पाछी थूकदी।

हमैं पूनम खुदर बाक मे अमल री डळी घतण सारू गुलाब र सामी करी।
'ठाकरा ! मौमजा थोरा करौ
ल्यौ धरोगो अन्नदाता !
'ऊ हूं ! आप ल्यौ'
'म्हे लियौ, आप मरोगो'

आ क'र गुलाब अमल री थोडो सी किरची, पूनम री जीभ माथै धरी। पूनम, दाता सूं गुलाव री आगळिया दबाय दी। वीं रै मूण्डै सूं हळकी सीक चीख निकळगी।

रोळ' गुलाब मूण्डौ बिगाड र बोली।
'काई कैयौ ?'
'रोळ
देख ! मूण्डौ सम्भाळ'र बोल
'कोई होस में ह तौ वी सूं बात करा। आपन कोई हौस तौ
म्है होस म हौं
'तौ पछ अ लुगाया वाळा छिनाळपणा क्यूं करो ?'
'लुगाई री दाव, लुगाई ऊपर अजमावण खातर'
म्है लुगाई नी मरद हौ मरद
'सबूत ?
'लडालो पजा
लुगाई सूं काई पजा लडावू ?'
पूनम री आगळी म महाराणी री मूण्डी देख र गुलाब चमकी।
"आ बीटी तौ महाराणीसा री थौंई '

"क्यू ? थाळा काळा सग बाप रा साळा ई है ?"

'नी, म्है भलीभात म्रोळखू"

'काई म्रोळग ?'

"म्है महाराणीसा रो म्रग म्रग म्रर रू रू म्राटखू"

'पण म्रा तो बीटो म्रोई, नी तो म्रग म्रोई नी रू'

"म्रर म्रग म्रग न तू क सू म्रोळख '

"म्है थारी मरजीदान डावडो हों । म्यारसै सू की छानो कोनी"

'म्है तो खुद र ई पूरा म्रगा नै नी म्रोळखू"

"जदै ई तो कवू क नाड हो, नाड'

काई मुतळब ? '

"मुतळब साफ म्रोई'

म्है समझ्यो नी"

'म्रो ई तो रोवणो म्रोई'

'म्राडिया मत वळझा"

"म्राडी तो महाराणीसा माती म्रोई । उळभिया म्राप म्है तो दोयू र बिच्च "

'हूँ, तो दोयू रै बिच्च म्रोई तू"

'म्रोई"

"तो लै म्रा मोम्रजी कानो सू तन'

"नी, नी । म्यारळी मौत थोडी म्राई '

"काई मुतळब ?"

"बस, हरेक बात रो मुतळब यांन समभावती रवू । म्है क्यू कवू म्यारळै मूण्ड सू क मू दडी क रो सनाण म्रोई ?"

"मून्डो ?'

'हव, बीटो छल्लो"

'ल छोड छमक छल्लो । पजा लडाय फैसलो करलां । तू जीती तो त्यारळी बात साची म्है त्यारळो चाकर । नी तो पछ

'म्हूँ हारू ई कोनी"

"तो न्हे जाव '

"न्हे जाव'

"बस । डरग्या ? बादर गिणीजो"

'डर तो काई ? हा, सोचू क म्रागळिया उतरगी तो "

'ग्ररे वा, देखी तागत ! हार सू बचण खातर ग्रोला लेवो"

'या बात हवै तौ व्हे जावै'

'व्हे जाव"

दोनू जीवण हाथ रा पजा ग्रापसरी म जोड, खूणिया धूड माथै जमादी। पूनम बोल्यौ 'पला त्यारळो दान'

गुलाब पूरी जोर लगाय ली ही पण पूनम रौ हाथ, वी सू नी डिग्यौ। उल्टो वी री ग्रागळिया काठी भीचीजगी।

"हुम ग्राप जोर ग्रजमावौ'

पूनम, गुलाब रै पजा नै थोडा काठा दबाया तौ वा सिसकारा करण लागी।

"काई हियौ ?

"ग्रई, मौग्रजी मा

इतरै जोर सू ग्रागळिया दबाय नाखो है"

'जोर तौ ग्रजू लगायो ई केत ?"

"इ सू जादा जोर लगायनै काई ग्रागळिया तोडौला !"

'बस। मानली हार ?"

"हार नी मानी।'

पूनम हमै थोडो फेरू दबाव देय वीरी ग्रागळिया न काठी दबाई। हम गुलाब थोड जोर सू सिसकारौ कर, खुणी जमी सू ऊचर उठ य ली ही, वी री ग्राख्या माय सू ग्रासू ग्रायग्या।

"काई हियौ ? घणो गरब होई'

'था कोई मदद होई ?"

"क्यू ?"

'इतरी जोर लुगाई सू सहीजै ?

"पैला ललकार ई क्यू ?"

"मदद न जोस दिरावण सारू"

क गै जोस ?"

"मदद मे ग्रेक मोटी खामी व्हैई। जद वी मे जोस व्है तद वी नै होस नी रव ग्रर जद वी न होस है तर जोस दोरौ ग्रावैई"

"मानग्यौ। इब ग्रापा री पट सकैई ?

"काई मुतळब ?'

"मुतळब ग्रौ, कै जी काम सारू हू जाय रयौ हौं वी काम म त्यारळा मदद मन मिळ सकई"

पला नी मानता !'

'नी, पला तो म्है समन्यो क मन रीझावण सारू, म्यारळ साग ग्रेक रामतियो भेजियो श्रोंई ?

'तो काई रमण री मतो श्रोंई ?'

नी''

क्यू ?

इ वारत क म्है वा रामतिया सू ई रमत करू, जका म्यारळै सुन्दै चित्त चढियोडा व्हैई'

'हूँ फूटरी श्रोंई'

"श्रोंई"

"म्है जवान हों

हव

'पछ काई कसर श्रोंई म्यारळ मे ?'

"पूनम न रीझावणरी'

"क सू रीझै ?"

'ब्याण सू '

भूख लागी काई ?"

'हव'

'कैरी ?"

'पेट माय'

बीजी ?

बाजी, तीजी काई नी, टुकर निकाळ"

टुकर तो नी पचदारो श्रोंई, महाराणीसा खास कर घताई

'व तु था मन तो सोगरो व्है तो दे द

'श्राप सारू तो पचदारी श्रोंई

'क्यू ? सागरो नी ?'

वो म्यारळ सीर री श्रोंई'

'तो सीर पलटला"

"सीर म तो घणी बाता श्रावई श्रन्नाता !"

'सोचू लो !"

"म्है मोभजा महाराणी सा, मोभजो "

गुलाब !' पूनम गुस्सै मे कडकियो ।

'काई ?'

"थोडी जीभ सम्भाळ'र बोल । तू डावडी ग्रोई ग्रर डावडी न ग्रापरी मीव मे रैवणी सोमा देवई'

'सीवा उलाघण री मोग्रजी ग्रादत कोनी" गुलाब बी तडक'र बोली

'ग्री पछ काई बकै ही ?"

'ग्राप ग्ररोगो ग्रन्नदाता, गुस्सै न ग्रळगो धरो, मोग्रजी सीर ग्ररोगो'

'म्है नी खावू, म्है हू भूखी सूय सकू । भूख सू मरां कोनी ।"

"म्है पण पछू ग्रन्नदाता ? कसूर बिसरावो । थाळ ग्ररोगो । '

पूनम, गुलाब रै हाथ माय सू सोगरो खोस र खावण लागी । गुलाब पचदारी पाछी भेळी कर, बाधी । कान्द री पुळी पूनम न भिलाय वा खुद बी सोगरो खावण लागी । साण्डां रै मूण्डाग पालो घर दियो ।

रात, ग्राभै सू उतरण लागी । अन्धारो, पग पसारण लागो । दोनू साण्डा र बिच्च गुलाब री राली ढाळीजी । पूनम खुदरी साण्ड र पच्छम पासै, राली नाख सूयग्यो । पूनम नै जद चेतो ग्रायो, चन्दरमा ग्राभ सू मुळकण लागो । वो गुलाब नै नींद सू जगाई । साण्डा न पालो घराय, पल्लाण रा कसणा काठा किया । रालिया परोट पाछी ठिकाणसर बाधी । एक हावळ करतां ई साण्ड ऊभी व्ही । सारली टाग छोडी कर, मूती री धार छोडी । मीगणा किया ग्रर पावण्डा ग्राग वधाया । मीठो, मदरो वायरियो गावण लागो । नींद री गळा मनवारा लागी । पूनम ग्रलाप छेडियो ग्रर मस्त व्हे गावण लागो ।

"चाल चकोरी, चन्दरमा र देस ।
ग्रो ससारी लोक निकामो,
कर दोवडा भेस ।
जुगत जोडणी, भाग-तोडणी,
पग पग पीड कळेस ।
रोई ज्यू रीत जीवण में,
बतूळया हरमस ।
चाल चकोरी
हुडी हुडी हुवै हुरर हुरर "

★

(१२)

पोगयतां री गरदनां मावण वाळ रै हांमी कुणगो । यासीन मसू" नोव रो आदमी फौज र सुफिया मकम री मुखियो हो । सुलतान र सांमो मुजरा, कर आदाब अर्ज कियो । पहुतर म सुलतान वीं माथै अेक निजर फरी अर बाज ईं पल वीरी निजर तलवार री मूठ सू रमती खुद री आंगळियां माथ जा पूगी ।

यासीन मसू" कवणो सरू कियो 'सुलतान आलमपनाह ! म्है माटिया नगर स्हे आयो हूँ । अठ सू दवखण पच्छम मे तकरीबन सौ मील माथ अो सुदर अर मध्य नगर बसियोडो है । विजयराज भाटा अठै रो राजा है । राजा बडो ही धार पराक्रमी, बुद्धिमान अर दयालू है । नगर म सम्पत रो अणखूट खजानो है । किल बोत ई मजबूत अर मोटो है । किल री भींतां असमांन सू अड । किल ऊपर ऊभ आदमी धार अर तारा हाथ सू ई तोड सक । इत्तो ऊचो तो गरुड बी कोनी उ सक । किलै री अक ई सिर-पोळ है । अर किलै र च्यारू मेर लाम्बी, गरी अ चवडी खाई खोदियोडी है । उठ रा मोट्यारां रा हौसला बोत बुलंद है । राजा री फौज मे दस हजार बांका अर टणक सू टणका सिपाई है, जका राजा र अर देस माथै आपरा प्राण निछरावळ करद । फौज कनै बारा बरस लड जित्ती जिनस जमा है । आपानै उठ सबसू बडी मुसकिल पाणी री व्हेला । बिना पाणी पिया आपार सिपाई नी लड सकला । पूर मारग म धोरा रा डूगर ऊभा है । रस्तो ऊबड खाबड है । जागा जागा भवरिया है, ज्या में अेक साग दस हाथी बी डूब जाव तो फूल पात बी नी लाधै । अठ सू रसद पौंचावण सारू दूजो कोई मारग कोनी । या स री बात र मद्देनजर अठ सू ई पाछो मुडणो ठीक रसी अबार मौसम बी बोत बिगडियोडो है । रात दिन आंधिया चाल । रेत इत्ती उड क आखिया बुरीज जाव । आधी, आप साग मिनख छोड साडा न उडा ल जाव । म्है पाछो अठ किया पूगो हूँ ? ई रो बखाण करण र विचार सू ही धडघडी छूटै । उरफो मार्‌यो गयो अर बाकी सब बन्दी बणग्या है । म्है अकलो भाग'र आयो हूँ ।

यां दिना मे, जद क आपा लोग रोजा कर रैया हा बिना पीणा तो सा लेवणो बी भारी पड जासी । उठ जावणो मौत र सामा पगा जावण र इलावा कं नी है । किल में अणगिणिया परकोटा है अर हरेक परकोट माथ बुरज । या परकोट मे नैंना नैंना तिणा है ज्या मे सू दुसमण आपां न भलीभात देख सकै अ आपा ऊपर पूरी निजर राख सक जद क आपा सारू अो काम बोत दोरो है । अेड हालत में आपा वार बी किया कर सकाला ? किल मे अेक देवी री मिन्दर है । मिन्दर रै बुन मे सारा काफिरा अर राजा री जबरदस्त आस्था है । मिन्दर रो खलीफ

-वामी थी, सारी परजा न ग्रेक सूत्र म पिरो नाखी है। सग बी रो भरोसो कर राजा बी रो हुकम मान। इ मि दर मे हसीनावा रो नाच देखनी ग्रिठिया उरफी सू नी रयो गयो। वो दाद दी ग्रर भेद खुलग्यो।

उठै ग्रदना सू ग्रदना ग्रादमी रो मकान सोनै चांदी सू मंडियाडो है। सोनो किवाडा माथ इ माफक नक्कासी सारू काम मे लियो गयो है जाण वो सोनो नी पीतळ है। बेसुमार दौलत बिखरियोडो पडो है। ग्रापा रै हमल रो सुराग उठ लाग चुको है ग्रर नगर रा सग वासि'दा ग्रापरो सगळी दौलत राजा कन जमा करादो है। राजा पाच हजार रो ग्रेक नुवी फौज खडी करली है। नगर मे माटी राजपूत बौत बादर है। ब्रामण ऊवा राजनीतिक ग्रर वैस्य चालाक। सगळा ग्रक ई धरम नै मान।"

इत्ती देर चुपचाप सुणतो सुलतान हळकी सी खकारो कियो ग्रर सब लोग भाट रा ज्हैग्या। मौत र पला रो सन्नाटो छायग्यो। सुलतान गरज लै बोल्यो 'तू ग्रा कैवणी चाव क जयपाल र जागीरदारा नै नी कोई जीत सकियो, नी जीत सकला? जे हा तो ग्रा कयनै तू म्हारी तौहीन कर रैयो है। ममूद नी किणी सू हारियो है नी किणी सू हारला। दुनिया रो कोई ताकत बी र पाक इरादा न ग्रमली जामो परावण सू नी रोक सक। सुलतान भुकावणो सीखियो है भुकणो नी मारणो सीखियो है मरणो नी जीतणो सीखियो है, हारणो नी। खुदाबन्द मनै पदा ई इ सारू कियो है क म्हे बुतपरस्ती मिटावू ग्रर इस्लाम रो ग्रमल करावू। म्हे ग्रेक काफर री इत्ती तारीफ बरदास्त नी कर सकू। जे ग्राइन्दा सू थारी जबान कोई काफर र हक मे लुली तो जबान खिचवा लू ला।"

सुलतान सोन री सांकळ सू लटकत घट माथ चादी रै बणियोड डड री चाट करी ग्रर गुलाम हाजिर व्हैग्या, सग दिसावा सू जाण कोई खुलजा समसम रा जादूगर रो डण्डो घूमग्यो व्है। सेनापति न बुलावण रो हुकम हुयो। ग्रलउत्बी सुलतान रो गुस्सो देखन डरग्यो पण सुलतान बी र डर न ताडग्यो। वो ग्रापरो ग्रक हाथ बी रो गरदन र सारै कर, बी रो बीटलीदार जुलफा मे ग्रागळिया सू कागसी करणो सरू करदी। उत्बी र गाला सू लोई टपकणो सरू व्हैगो, सुलतान ग्रक हळकी सीक चू टियो भरियो हो।

सेनापति र ग्राता ई बिना बी रै सामो जोया ई सुलतान हुकम दियो 'ग्रागली जुम्मेरात सू पला भाटिया नगर माथ सुलतान रो भण्डो फेरावणो लाजिमी है। उठैरा बुत तोडनै मसीत चुणदी जाव। जुम्म री नमाज उठै ई ग्रदा कर रोजा खोलिया जासी।' सेनापति बोल बी पैला ई सुलतान थोडो जोर देव र बोल्यो "म्हार हुकम री हर कीमत माथ तामील व्है। फजर सू पला कूच करो फौजा ग्राग बधावो।'

सेनापति इसनदुवा की 'हुजूर जहांपनाह ! वागड़ सगा ग्रर वूटा बी माटिया र खिलाफ इमदाद करण री कौल कियो है । हुकम है तो ग्रेक दिन वारी बाट देखली जाव ?"

सुलतान उणी लज म बोल्यो "नी वान खबर कर दौ क व सीधा माटिया नगर पोंच जावै । म्है फजर म ई कूच कर दू ला । ग्रब था लोग जावो, म्है ग्राराम करूं ला । उत्बी र इलावा सग लोग खिसकग्या । सुलतान उत्बी री जुल्फा सू रमण लागग्यो ।

(१३)

'कुरजा'

'कुण हरू ? की ग्रोई ?

"तू तो रणी क्वारी

"तू पछ कुणसी परणीज जासी ?'

'ग्ररे, हूं तो खाण्ड सू फेरा खा लेसू , पण मुसक्त ग्रोई तामजो । घणो चाव करतो ।"

"ग्रर तो कुण मो साकी जलम मर री ग्रोई ? घणा सू घणा दस दिन, मीनो दो मीना "

'हां, साकी तो उमर भर री कोनी, पण की भरोसो ? मा नी कर '
बन्द कर मूण्डो । राण्ड र बाक मे मिरचा घतू म्यारळा '

'हां, तामजो राणो जुग जुग जीव । पण जाण क्यू म्हैन र रै न लखावै क—— ।"

'क, की ? बोल क्यू नी ? चुप क्यान हेगी ?

"म्हैन लागै क हमक इ साकै री कोई ग्रन्त कोनी"

'क्यू ?'

'बस यू ई लखाव । माय सू जीव जाण क्यान ई हे रैयो ई पयो"

'ग्राऊ दादो ! यू की करै तू ? तन मोमजो सुख सवाव कोनी ?"

"म्है तो त्यारळो सोगन साचै मन सू चावू क राणो तन ढोल याळो रै समच फेरा खाय ले जाव, ग्रर म्है नाचू त्यारळ बिया मे"

'हरू !"

'काई ?"

तू म्यारळी साची सई ग्रोई ?'

"वा तो म्है हूं ई कोई दूजी राण्ड ताग्रज साम मूण्डो खोल तो जीभ

करतलू"

'तू केत जाइस हमैं ?"

'देख म्यारळो अेक मामू ओई पूगळ में, पण दो बरसा सू वो दिसावर म ई बसै ई। सुणी ओई, कोई नुवो मामी रो स्यापो घातियो पो। म्यारळो हम कोई ठिकाणो कोनी। सोचू, म्है बी देवी रै चरणा चढ जावू, पण "

'पण की ?"

'पण, सिरदारा रो मरजी आगै तो अेक पावण्डो बी कोनी धर सकू"

"सिरदार काई तैन मोल लायाई क घर म घाती ओई सो अडो बो वई पई।"

'तू साच सुणणी चावै काइ ?'

"झूठ बोलण सू काई मिळैलो तनै ?"

"जावण द्य की करमो सुणन? म्यारळो पोड मन ई भुगतणी ओई।'

'म्यारळी सोगन घतू '

"कुरजा ! सोगन मत घत म्यारळी भण। देख म्है त सू कद कोई बात छिपाई ?'

'सापडन लुकावैई पई अर फेरू पूछै कद लुकाइ ?"

"अनै आ मोअज नडी"

कुरजा, हरू र नजीक गई। हरू वी रै कान कन मूण्डो ले जाय, हवळ मू सारी बात बतादो। सुण'र कुरजा री आंख्या अचम्भ मे फाटोडी रगी। दो यू जवान ही। हरू उमर मे कुरजा सू दो बरस छोटी ही पण ससार नै परखण म चार बरस मोटी।

"इब काई न्हेसी ? कुरजा मूण्डो उतार बोली।

"न्हेलो की ओइ ? सिरदारा सू तो छानो कोनी। खाण्ड सू फेरा खवाय देमी। बाई न्ही तो रेत री पोटली, अर बोरो हियो तो सिरदारा रा पूत तो सिरदार ई रसी। अर म्है ? म्है अखण्ड कवारी।'

हरू !'

'काई ?"

'जीव म आव क सारा बन्धणा तुडाय कठ ई ना'स जावू।'

"वी सू काई न्हेमी ?'

'मुगती"

'मुगती ना सरण में कै मरण में कोनी सई। मुगती जीवण मे, जूझण में ओई"

"त्यारळी हीमत म्हा म कोनी '

"थोई तू कद धजमाई ?"

"म्यारळै धजमावणी बी कोनी"

'काळी थोई तू । समार तो यू ई चालती रैसी । भेर तो आज बाबी थोई । म्हे राण सू मिळ'र सग ठीक कर देसू । सारळै पैना तू भर राणी दोयू मय सू पूरव कांनी "

"पण "

"पण वण काई कोनी, जीवण री जुगाड करणी हवै तो होमन सू काम लेणी पड़सी ।"

'म्हैनै डर लागेई ?

"की रो'

"घरकां री, ग्वाड री, जात री भर राजरी'।

'म सग धूडा ब धण थोई'

तू बी तो बंधण म बंधियोडी थोई", सू नयू नी ?'

"मोधज कोई राणी कोनी, म्यारळै माथै रीभण वाळी'

"तू म्यारळ साग "

'म्हे तङ्ग आई थ्यारळ सू । कीं समझ बी कोनी । म्हैन क्यो डर थोई भर कुण मां री मोटी म्यारळै सारू सेज सजाय उडीकई पयो ?

कुरजां र नणां सू ढळक ढळक आसू ढळण लागा । हरू पापर पङ्ख सू वां आसुवां न पूछ र वी न काळज सू भीडलो । दोयू बिच्च सन्नाटो बोलण लागो । वे दोयू चुप ही । साकळ रूख माथ अेक जोन्गी कम ही । अर तीतरी, जमीं म थ चुपचाप पडी ही । हाडा, वी री आंख्या निकाळली । गुलरिया वी रै मास रा लोया तोडण मे लागोडा हा । गळिया गप्पा मारै ही ।

× × ×

"बापू !

"हाँ बेटा !

'बापू म्यारळी तलवार मन सूपो । हू दुसमण र दळ न बाढ न '

"तू अजू नैनो थोई बेटा ! थ्यारळ बाप अर भाऊ र बठा थ्यारळी बारी अजू केत सू आव ? तू थ्यारळी मां साग मामा रै गाव जा थोथ घणा मेळा मगरिया भर । तरिया तरिया रा रामतियां सू रमण भर खावण पीवण री उमर थोई थ्यारळी"

'नो बापू ! मन मेळा मगरिया कोनी रूच । म्हे तो थांर साग रण मे रमवा जासू"

'तू बोलो बोलो बठ क दू बिगाट री"

बीस बरसा री मोट्यार मोटोडो भाई बडको दियो ।

'देखी ग्रोंई म्यारळी तलवार ?'

हाँ हाँ देखी बादर सा री तलवार । यान का डोका सू तो गुलरिया बो चोनो बीवई'

'बगता !"

'हाँ, बापू"

'तू क्यू ग्रळूभै इ छोटै भाई सू । ई म काई समझ ग्रोंई ? तू तलवारा सारी की सारी बारै निकाळलो कै नी ?"

"हां बापू ! ग्रडतीस ग्रोंई ।"

"हव जा ! छोटू लवार री निग कर धार दिरावां परी"

"जावू बापू ।' बगतो छोट भाई कानी दात काढ'र बारै निसरग्यो । छोटोडो हू हू कर रोवण ढूको ।

'ग्ररे, तू सेर हे र रोव ?'

'वो भाऊ म्याग्ळ "

भाऊ तो कालो ग्रोंई तू काई वी र सरखो ग्रोंई ?"

हूं तो छोटो ई वो सू, जदै ई तो मन धमकात्र ई पयो ।"

'पाछो ग्रावण दय बगत न म्है वीं री सागैडो स्यान बिगाडू"

बापू !"

हा बेटा !"

म्है चालसू तामज साग साकै मे"

'हव बेटा ! जावो ग्रब सू रवो । साकळैई चालसा ग्रापा सागई'

साकळ ग्रागणो सूनो सूनो लखावण लागो । मूवटो सीवा लाग, सूरज री ग्रगवाणी म पूरब दिस री जातरा में निकळग्यो । मोडी ऊपर ग्रेक उल्लू गुरणी बोल हो ।

× × ×

"जसोदा !'

"की कैव ई पई रमवा ई नी दय'

बटो', बासण बरतनां री की कियो ?"

'थोडका सा बार काढ मेलिया ग्रोंई ग्रर बाकी सँग बाड में बूर दिया ।"

'गणा नगदी ?"

गणा नगदी तो गढ म जमा करावण साह्र महजी न सूप दिया । मारय

री खरची सारू पांच सौ टीरलिया राकी पी ।"

गाबा री काई कियो ?"

'गाबा तो सग सागे लेगा पडसी । चार पोटा बोंगी पी ।"

'साकळ ई सूरज निकळिया पैला सिधावणो थोई सोपरा हमार ई सेकलै

"हव बाई, सकू । पण महजी भर भाऊ ?

'वा न अ्रेष ई रणो पडसी"

'क्यू ?'

"वा नै कुण जावण देसी ? काली '

'पण क्यू ?

"मोत्यार साको करिस '

'की र सारू ?'

'राज री रुखाळी सारू '

'कीं रो राज ?'

"राज, राजा रो"

राजा आपा न ढुवकर पढ़ई को घात नी"

'हो स छोरी । तामज जबान घणी बधगी दीस ?"

"हूं तो राजा आपा न की ग्याल करैई पयो, वो तो मैला म मोजा माण अर वी री रुखाळी सारू आपणा महजी अर भाऊ मर । भो कुण सो न्याव ओई ?"

"छोरा ! घणी लपरचटी व्हेगी, की सको ई कानी, राज म बात पोंची तो गरदन उतार लेइस '

म्हे कीं सू बीवा करां कोनो । भल ई गरदन उतार ल '

'जसोदा ! तू सफा बावळी तो नी व्हेगी ?'

'बावळी म्हे नी बाई बावळो थोई अप रो राजा । लुगाई टाबर जावो पा अर मडद या सारू कट जावो । लुगाया पछ काई या बापखावणो रो स्यापो घातण सारू जाव ?'

गुस्स सू भरियाडी अमका हुम जसोदा री चोटी पकड र, अेक चिणगट धरी। अर लाता धूसा सू वी न अधमरी करदी ।

"राण्ड कदकी कां वा करई । बापखावणी सू बोलो बोलो नी रइज ।"

"नो हूं चुप तू भल ई मार काढ"

"जसडी ! तू क्यू मरणी चाव मौअज हायां ?"

"तू म्यारळ महजी अर भाऊ न मरावणी चाव । मा कै री? तू डाकण थोई ।"

'घणा लपचप मत कर कुत्तडी ! हमार नाणी कर डांम चेढ देसू राण्ड रै"
'म्है त्यारळी धाकळ सू पछई को बीवा नी ।"

साकळ, सलाखां सू उखोळियोडा, गोरी चामडा रा छुतरकां न, कीडिया घीस'र ले जावती। सूनो डेरो साव साव गू जण लागो। मू जडी बळगी बदाण वरतीजगी। सर भूना री रैवास बणग्यो।

※

(१४)

रात रै तीज पोर पूनम, गुलाब कनै पाछो पूग्यो।
'गुलाब !"
आँखिया मसळती थकी गुलाब आळस मोड'र ऊठी।
"पधारग्या'
त्यारळै भाग रो बच'र आयो हूँ"
'क्यू ?"
'सारो भेद खुलग्यो।'
"पछ ?"
"पछ की ? च्यारू मेर सू घिरग्यो।"
'सफा कूडा' गुलाब मूण्डो बिगाड'र बोली।
"तनै म्यारळो भरोसो नी आवैई ?"
था ऊपर भरोसो करन कोई क्यू आफत गळ मे लेवै ?"
"क्यू ?"
आया बडा तोजसी ? बापड सेनापति नै "
"वो घणो हुसियार औई
'था सू कम"
"क्यान ?"
'साची बात तो था म्हैनै बताई व्हो, तो वी नै बतावो'
'त्याव त्यारळो हाथ देख'र साच साच बतावू"
"म्यारळो हाथ काई देखसो ? सिकल देख'र नी बना सकोई ?"
"सिकल सू तो लोमडो लागे ई पई।"
"म्है चालाक लागू पई ?"
"नी तर की ?"
'खुद तो कागल सू बी डाया लागो ई पया।"

मळ नी वठ । साकळ ई तू पाछी वळजा ।"

"क्यू ?"

'क्यू को ? म्है कवू जी सू"

"पण म्यारळी काई कसूर श्रोंई ? सु ई तो म्हैन इया तवा री खोटी मरो सुणावो ग्रर ऊपर सू दबावोई"

'म्है, कै र वगा दबावू ?

'हूँ तो पछई को जावा नी"

'काली न्हेगी काई ?"

"काला तो ग्राप न्हियोडा दीसोई पया, दारू घणो पी काढियो दीस ।"

'तू क्यू बळ ?'

'बळ म्यारळी सौक राण्ड, म्है कै रै वगा बळू ?

"तो पछ भाग ग्रठ सू"

"म्है थान काई दुख देवू ?"

"दुख तो म्है देवू ई पयो । सुण !'

'मोग्रजै की नी सुणणी"

'मसखरी छोड, काम री बात सुण ग्रर समझ

"हुकम करो'

'पेरू थोबडो चढ़ा'र बात करई"

"भगवान सिकल ई ग्रडी घडो श्रोंई

'भगवान तो खासी भली फुरसत सू घडी श्रोंई पण '

"पण काई ?

"भाग म पासवानी लिखदी'

'था तोजसी हो, छुग्ग्यो ग्रा जूण बिया करलो म्हासू '

'घणी मूण्ड लागगी तू"

"चाकरी मरू रावळ"

'सभी चाकरी । देख ! म्है सारी विगत समझावू सो याद राख'र राव नैं पूगतो करणी श्रोंई

"म्है ग्रेकली जावू ग्रेथ सू ?"

"ग्रकली नी तो कीं री मा रो मोटी ग्रथ बैठो श्रोंई निकामो ?'

"क्यू ? ग्राप ?"

'रुकणो पडसी, सेनापति रा भाग खोलणा श्रोंई ग्रर गाव बी जाणो पडसी

'ग्रक तो मोग्रजा खोल्या भाग ?"

'त्यारळा भाग तो यू ई घणा उमदा श्रोई'

"पोमावणी तो कोई था सू सीख'

'सीखल। काम श्रासी"

"म्है साव श्रेकली क्यांन जासू ? नी नी करतां सो कोस री श्रों व्हैसी।"

'क्यू खाव कोई तनै ?"

'मार जी न मह्लो मारै, मह्लै न कुण ?"

"जद टाळमटोळ क्यू करै ?"

"गला सू श्रणजाण हू।"

"श्रथ सू दो कोस ऊपरां पेमजी री तळो श्रोई। श्रोथ सू दो मानखा त्यारळै साग चालसी। मारग मे सग गावा नै सावचेत क्रिया। बी गैल ई फौजा श्रागै वधली।"

'श्रापर साक राव नै काई श्ररज करू" ?

"श्ररज काई परचावणी करणो श्रोई।"

'काई ?'

"हाँ, परचावणी करणो श्रोई कै घणो बोग्गे मिनख हो चोखो व्हियो कै "

गुलाब पूनम रै मूण्ड श्रागै हाथ दे'र वीं रो बोलणो बद कर दियो।

"सौगन श्रोई श्राग श्रेक बी श्राखर बोलग्या तो'

"पूनम मून धारली।

"हाँ, की विगत श्रोई ?"

पूनम चुप।

"बोलो कोनी काई ? काई कैता ?'

पूनम फेरू चुप रयो। हम गुलाब पूनम री पासळियां में श्रांगळी सू गिलगिलिया करण लागी श्रर खुद हँसण लागी पण पूनम नी हँसियो नी बोलियो। जद गुलाब दोयू हाथां सू पूनम र गिलगिलिया करण लागी तो वो, वी रा हाथ पकड लिया। गुलाब इब कोई दाव चलतो नी देख जीभ मूण्ड सू बार काढी श्रर पूनम र गाला ऊपर फेरण लागी। पूनम वी रा दोन्यू हाथ छोड र हळको सो धक्को दियो।

"ल्यो माफ करो, बोल जावो। सौगन श्रोई थानै "

'देख ! म्है श्रेक'र सौगन मानली, घडी घडी सौगना नी मानू ला।'

"रिसाणा व्हैग्या।

"हूँ"

'की किया राजी व्हो ?'

"म्है हमें राजी नी व्हैण रो'

"उमर भर रूस्योडा ई रसो ?"

'उमर भर रो मोमज काई वास्तो मोंई त्यारळै सू ?"

'म्हारर मी व्हैलो मोमज तो मोंई'

"तामजी तू जाए'

"खर ग्राप सनेसा देवो "

सनेसा ?"

"हू ग्रेक राव खातर ग्रर बीजो महाराणी सा सारू"

'महाराणी सा सारु तू ग्राप, ग्रर राव सारू सनेसो मेलू सो सावळ पूगतो नी क्यिो तो त्यारळा फूटा।'

'मोमजा तो खर फूटोडा ई हुता

पूनम सुलतान रै फौज री विगत, सुलतान रा इरादा हमलो करण री सगती, मोरचा जमवण रा पतरा गलो ग्रर दूजी छोटी मोटी बाता जकी बो जाण सक्यो वे सारी गुलाब नै समझायदी।

"राव, ग्राप बाबत पूछ तो ?'

'म्है सुलतान सू पला पूगू ला'

'जे नी पूग सको "

'तो समझल क पूनम दुसमण र हाथा मारयो गयो'

गुलाब थोडो ताळ साल गळगळी हेगी। वीं री काळजो धक धक करण लागो, वीं र मन में ग्राई कै ग्रेक'र बिछडया पला पूनम वी नै सीन सू चिपायल। पण पूनम तो भाट री बण्योडो ही गुलाब र नणा री कोर ऊपर ग्रासू ग्रा'र रुकग्या। वा, भरयोडा नैणां सू पूनम र सामी जोयो। पूनम ग्रापरो मूण्डो दूजी दिसा में फौर लियो। गुलाब वी रै पगार हाथ लगाय खुदरै नैणा ऊपर लगाया। पूनम लारै खिसक्यो। गुलाब वी र पगां हेटली रज लेय ग्रोढ़णी रै पल्ल बाधली। दो साण्डा ग्रामी सामी दिसावा म ग्रदीठगी। कुम्मळायोडी गुलाब, बायरिय सू बिम्बरण लागी।



(१५)

'दगो दे गयो बरी,
चौमासै रो चाकर,
काळ कमर में दी हळवाणी,
जीवण व्हेग्यो भाखर रे भई
दगो दे गयो बरी।"

अेक मह्द ग्रर अेक लुगाई मस्ती मे नाच रया है। पास बठा दो मिनख ढोल, तासक बजा रैया है ग्रर टेर मेळो टेर मिळाय झूम झूम र गा रया है 'दगो दे गयो बरी।"

'क्यू र किसना ! पूख किता ग्रागळ ऊँचो ग्रायो ?' चिलम रो अेक घुट्ट खचता थका, ठाकर जेतसी भाटी पूछियो।

'अेक बत दो ग्रागळ।'
'हा भई, ग्रागै कैवो दूवो।'
मह्द—किसन, बिलेरघा दागा दोय,
माटी मे कद मोती होय ?
लुगाई—सीच रात दिवस कर हेत,
तो मोनो उपजावै रेत।

'जीवती रो जोडी' भीड माय सू अेक मोट्यार बोल्यो। लुगाया, घूघट मे खीं खी कर जोर सू हसी। ढालक वाळो जोर सू थापी दी। ढोल वाळो रो झरणाटो हमे तेज व्हेगो। नाचण वाळा बी हमें पूरा मस्ती में ग्रायग्या। लुगाई घणो सरीर नै तोड मरोड न कदेई नीची झुक कदेई लारै। मह्द बी न थामण साल्ह ग्रागै बधै पण वा हाथ रा फिटकारा देय ऊँघो फिर जाव। भीड माय सू लुगाया जोर सू हँस।

'जसू !'
हा, बापू।'
'मावो'
'तावडै मोट हेट ई तो पडी ग्रोई डबलो।'
पांणी ग्रर तासळो ला बेटा।'

जसू पांणी री अेक छागळ ग्रर अेक तासळो लाय बाप रै कनै मेल दियो। ठाकर, ग्रमल रो अेक मोटो डळो वीं तासळै मे मेल पाणी माय ग्रमल गळावण लागा। नाच हम खतम व्हे चुको हो। मह्द-लुगाई अेवानै पूठ फेर पसीनो सुखावण साह गाबा र पल्ला सू हवा करता हा।

ठाकर, हथाळी माय चुल्लो भर गाव रा सबसू बूढा अर रिस्त म काका, खगार रै हाटा ऊपर हथाळी ऊधाइ काका खगार ग्रेक खकारै रै समच सबडडड करता, हथाळी खानी करदी।

'सीरी, नी आई ?'

हुमक मावो की फोरी ग्रोंई काका, ल्यो फेरू ग्रळीवा' ग्रा के र ठाकर जेतसी ग्रमल रो ग्रेक डळी तासळ में घसियो

हा काका हुम।'

बूढो सबडको लगाय ग्रेक खकारो कियो ग्रर मूछा माथै हाथ फेरियो।

'सीरी ग्राई काका ?'

'हा भई जेतसी, हुमकै जोर री सीरी आई, तू कजूस घणो हेगो रे।'

ठाकर जेतसी बारी बारी सू सगा न ग्रमल रै पाणी रा सबडका लगवाया। खुद चार पाच सबडका लिया ग्रर ग्रक किरची जीभ माथ धरली। ग्रमल री ग्रेक मोटी डळी मागणयारा सारू मेली।

वयू रे रवत ! काळी साण्ड री कोई बावड ग्रोंई क नी ?'

'ग्राथूणा रा गाव रा बावड ग्रोंई। मागणयार उठाई।

'मागणयार, उठाईगिरी कद सू सरू की ?'

ग्रसली मागणयार तो माग न ई खाव ग्रन्नदाता। हा, हुमै लगा घणा लफगा हुग्या। भाटिया री मूछा म हाथ घातण री मसखरी वे ई किया कर। ढोलक बजावण वाळो बोल्यो।

'मसखरी री मजो चखाया ई सरसी, क दिया तांग्रजा सिरदारा नै जेतसी थोडो गुस्सो भर बोल्या।

हुकम ग्रन्नदाता पूगती कर देसू।'

काई ? बात, क साण्ड ?'

'हुकम बात।'

हवै। कोई बात केवो '

कवा बात भटापट री

ग्रा खटपट री ग्रा लटपट री

ग्रा टिटपिट री, ग्रा किटकिट री

म्है कवां बात खटापट री।'

नाच फेरू सरू हैगो। ठाकर पिनक म ऊंघवा लागा।

ठाकर जेतसी र नाव माथ ई ग्रो गाव बस्योडो है। गाव म कोई पचास घर है ज्या मे सू घणकरा तो भाटी राजपूता रा ई है। सग पाचमी पीढी मे जाय ग्रेक

बाप रा व्है । दो चार घर मेघवाळा रा ग्रेक वाणियै रो, ग्रर ग्रेक घर बामण रो है। यां न घर मनेई कैवो, है मग रा सैग भूपा। ठाकरा रो रावळो भाटा सू चुणियोड़ो है। बाकी सग घर माटी ग्रर गोबर सू नीपियोड़ा है। ग्राधा घर, ऊपर सू उघाड़ा, ग्राधा माथै लकड़ी री छाण्ड।

लारलै साला बिरखा ठीक ठीक व्हैगी। बिरखा तो ईं बरस बी न्हो पण सातरी नी। हां तळाई म छ महना रो पाणी जरूर भराग्यो। खड़ीना में बाजरी रा दाणा बिखेरिया। पूरब ग्रेक बत दो ग्रागळ ऊंचा ग्राया है। यू सिध इलाको नजीक है इ वास्त घणो दौराई कानी। गाव रा घणाकरा घर, मवेसी पाळै। पाच सौ साण्ड, दो सौ ऊंट, सौ गाया, तीन सौ भेड बकरियां है गाव री कुल सम्पत। सग ग्रपणायत सू रैव। काळ पड जद छागा ले'र दूजी तळाई माथै डरा लगाव। यू गाव रा मिनख चार छ महना इ गाव म रैव, जद तक तळाई रो तूण्डो नी निकळ।

ग्रधार पख री सातम ही। च दरमा ग्रजू उगो नी हो। इ वास्त मसाला चेनन करीजो। मागणयार लच्छेदार बाता सुणाय सुणाय सबा न राजी करण मे लागोड़ा हा। टाबर टीगर, नीद मे सूयग्या। थोड़ी ठण्ड बी पडण लागी। धोरा री धूड, हम हेम ज्यू ठण्डी हेगी ही। ठाकर जेतसी मूनो करण स रू थोड़ा पावण्डा ग्राग बधाया ग्रर वा न जीवणी दिसा सू कोचरी री ग्रवाज सुणीजी। ठाकर थोड़ा रुकग्या। पगरखी खोल सुगन फोरघा। दो पग बी ग्राग नी बधाया ग्रर डावी कानी सू ग्रेक काळो नाग फू फाड़ो करतो सामो दीस्यो। ठाकर र काळज में भो वड़ग्यो। ग्राज सिड़्या पला बी ग्रेक उल्लू वा रै रावळै ऊपर खाला बोल्यो हो। ठाकर बिना मूनो किया ई पाछा मुड़ग्या। ग्रमल रो ग्रेक मोटो डळो बाक मे घत'र वे पाछा, मोड माय, ग्रापर ग्रासण माथै ग्राय बठा ग्रर हुकम दियो।

'हम ग्राज रो तमासो बन्द करो। सग लोग पैला म्हारी बात सुणलो।

ठाकर बात कवण पैला वी दिसा म दीठ फकी जीं दिसा मे वे काळो नाग देखियो हो। पूनम उठ साण्ड न भेकतो हो। वे पूनम नै हाक्ळ करी।

'बापू! मगां न ग्रेय ई रोकलो ग्रेक ऊण्डी बात ग्रोई।'

सगा रा कान पूनम री बात सुणण खातर सावचेत व्हेगा। लोग पाछा जमी माथ वठग्या। पूनम, बापू र कान कनै मूण्डो ले जाय वा न सारी बात बताई। लोगां नै कोई मतब री बात लखाई ग्रर वे बात सुणण सारू उतावळा हेगा। ठाकर पूनम र माथ हाथ फोर लाड कियो ग्रर बोल्या।

'सुणो रे भाई सैग ध्यान लगा'र सुणो। कौन मतब री बात ग्रोई', थोड़ा सोच'र बोल्या ग्ररे मागणयारां था जावो। हमैं गाव में खेल कोनी कराणो।

पूनम कोनी मूण्डो कर बोल्या, 'पूनम, या न श्रेरानो लेजा'र रवानगी दे द।'

पूनम उठै सू व्हीर व्हियो। मागणयारा नै हाकळ करी, 'श्रावो, म्यारळ पाछ श्रावो।

मांगणयारां री टोळी, ठाकरा नै मुजरो कियो, ज बोली श्रर विदाया।

हमै ठाकर सगा न हुकम दियो, वै नजीक सिरक जाव बात बोन छानेरी श्रोई।

सग लोग ठाकर र श्रेड छेर्ड नजीक सिरकग्या ।

गजनी रो सुलतान ममूद तनोट माथ धावो करण री नीत सू श्रावैई। वो सिन्धु नदी न पार करली श्रोई श्रर वी रो लस्कर श्रापर्णे गाव सू निकळला । श्रापां लागा न साको करणो पडसी। सो मोट्यारां कमरां कसलो।'

सुणता ई लुगाया र धडबड लागगी। सग श्रापरा टाबरां न सम्भाळ वा रो लाड कियो। वे थोडी घणी गुसपुस बी सह करदी। ठाकर थोडा तडक न बोल्या—

'चुप व्हो, सुणो बात'

भीड माय सू श्रेक मिनख बोल्यो, चुप व्हो र, सुणो ध्यान सू।'

'गाव मैं कित्ता मोटयार श्रोई ?'

'बूढा समेत तीन सो।' श्रेक श्रवाज श्राई।

ठाकर थोडा कडक'र बोल्या—

'बूढा सू कांई मुतळब ? इ गाव म कुण पागळो श्रोई ? सग साज सरीर रा श्रोई! म्हन देखो साठ बरसा रो हूँ। पण था जडा चार मोट्यारा न श्रेक साथै पछाडू। श्रेक वार सू चार माथा काढू। साको राजपूत रो घरम श्रोई। सग त्यार हो कै नी ?

'भीड श्रेकै सागै हुकारो दियो, पण श्रक मिनख ऊभो व्हे बोल्यो हूँ त्यार कोनी।'

क्यू ?

इ वास्त क मीग्रज, सुलतांन सू कोई वैर कोनी।'

'कांई मुतळब ? राजा रो दुसमण श्रापां रो दुसमण कोनी ?'

राजा म्हानै कोई नाणा मुफत रा कोनी देव। खुद री मैनत मजूरी कर पेट भरां।'

ठाकर थोडा गुस्स में भराया। 'राजा सू विद्रो करण रो दण्ड कांई व्हे श्रा सायत तू जांण कोनी ?'

'म्यारळै जाणणी बो कोनी, क्यू क नी तो हूँ कोई चूक करी, नी मनै कोई दण्ड द सकै'

'इ गाव रो गाव री धरती श्रर धन रो मालक राजा श्रोई तै कै त्यारळो बाप कोनी।'

'देखो ठाकरां, म्हारळै मूयोड बाप रै सामै जावण री जरूरत कोनी। थानै राजा री चाकरी करणी व्है तो करो म्है मुफत मे मरण नै त्यार कोनी। राजा म्हान त्याल कोनी कर।'

'हूं' ठाकर थोडा देर सोच'र बोल्या 'म्हारळै, भेजो कम ओंई नी तर म्है तन समभावतो सारी बाता। खर, तू म्हासू अेकल म मिळजे।'

वो मिनख उठ'र व्हीर व्हेगो। लारै सू लोग वी नै फिटकारा देवणा सरू किया।

ठाकर फेरु बोल्या, 'मुलतान री फौजा आग बधई पई अर काल सिंझ्या कै रात, आपण गाव तक पूग जासी। या लोग तो जाणो ई हो क तन्नोट साक मारग, आवण गाव न्हैं न ई ओंई। आपा न आज रातोरात गाव खाली करणो पडसी। खावण पीवण री जरूरी समान, गैणा, नगदी अर काम चलाऊ गाबा अर बासणा रै इलावा सस्तर सागै ले लो। झूपा नै तोड भाग द्यो। बासण ठीकरा अर घरबिकरी सग तळाई माय फकदो। घास न लाय लगाय दो अर गाव नै पूरो खाली करदो। चारो, जित्तो ऊट साण्ड माथ लाद सको द्यो साग ले लो बाकी होम द्यो। साकळ ई आपा न अेथ सू व्हीर व्हे जाणो ओई। लुगाया पला घरै जाय न सोगरा सैकलो। मडद पला जाय न खडीना में ढोर न छोड द्यो। पाणी रा मटका अर छागळा भर, गधा माथ बाध बू धलो। कम सू कम अेक पूरो दिन लागिस, छोटारु पूगण म। जावो अर हडक सू सग काम नकी कर द्यो।

भीड चुपचाप व्हीर व्हेगी। ठाकर, अेक डळी फेरु आक म घती अर रावळै र कोट कानी व्हीर व्हैगा। बाठी बाथा फडकण लागी, मुटियारी र दिना री सुध कर, वे अेक'र खुद न मोट्यार समभण लागा। वा री कमर सीधी, अर चाल तेज व्हेगी।

गाव में धडबडाट लागगी। सग लोग ठाकरा र बतायोड काम मे ढूकग्या। कोई सस्तर भेळा कर रैयो है तो कोई झूपै रा लेवडा उतार रैयो है। कोई घास रा भारा बाध रयो है तो कोई कपडा री पोट ने सम्भाल रयो है। ढोरा न खडीना मे छोड दिया। ऊंटा साण्डां र, पलाण कसीजणा सरु हुया। लारै बिछावणा अर एक दो बोरा धान रा, घी री कूपी सू ले'र पाणी री छागळ तकात ऊंटा माथै बांध दी। घर रा ठीकरा अर अणूता बासणा इत्याद नै तळाई मे नाखण र पैला सब लोगा रा घडा पाणी सू भर लिया। डागरां न धपा र पाणी पाय दियो। भाझरख तक स कोई त्यार व्हेगा। खुद र हाथां सू लोग आपरा झूपा तोड ताड र वा र लाय लगादी। ठाकरां र रावळै माथ करसल बिछगी पण अेक झूपो अजू साबतो ऊभो हो। ठाकर उठ पूग्या।

'कालो तो म्हावो मुलक -हैई पयो, बापू बी काला हे रैया म्रोंई, सुलतान बो कालो -है रयो म्रोंई राव बी काला -हैई '

'काई मुतळब ताम्रजो ?'

'मुतळब काई, लडाई जरूर व्हे सक, पण हरेक माणस लडाई में पड ई, म्रो जरूरी नी

'ताम्रजो इसारो केसर कानो तो नी म्रोंई ?'

' '

हूं समझियो ।

पूनम घुडकी ताळ सोचतो रयो । पछ चिपगी बजा'र मुळकियो । वो साण्ड न पाछो ऊंधो दिसा म फोरी । बापू कन पूग'र बोल्यो 'बापू ! म्रा हिरणी म्रज मोम्रजा हाडका भाग मेलिया ई । हूं, दो रातां सू सूयो कोनी । म्रजू को दिन म्रोंई । परमें तो राव का पूगणो जरूरी म्रोंई । ताम्रजी साड भली म्रोंईबदळा परी' ।

'तू परबारो तनोट जा मोम्रजो कानी सू ।'

नो बापू ! हूं समचार तो भेज दी-हा पा, म्रर म्रजू नो घणा दिन लगसी सुलतान न म्रोब तनोट पूगण में । हूं पूग जाइस बिळियासर'

जद ताम्रजी मरजी मोम्रजी कानी सू '

'नो बापू, हूं मर जावा भलेई, पण राव री इग्या रो पालण करण सू कोनी चूकां' ।

दोयू बाप बेटा साण्ड झेकी ।

केसर री हालत बोत खराब व्हे चुकी ही । वी रै सरीर में जागा जागा रगडा म्रायगो ही म्रर लोई छकण लागग्यो । वीं रा गाबा झीर झीर हेगा हा म्रर वा में भुरट ऊपर भुरट चिपियोडा हा । मूण्डो भुरटा सू छुलग्यो हो ।

म्रापरी साण्ड बन्ळना थका ठाकर जेतसी कमरी न खुदरी साण्ड री पूंछ सू खोल र हिरणी रै बाधण सारू म्राग बधिया तो पूनम बोल्यो—

'बापू इ न ब ध्यो रवण दयो । हिरणी र पूछ रै बाल कोनी, रास फिसळ जाइस'

ठाकर म्रेक निजर केसरी कानी नाखी । वो म्रधमरियो हे चुको हो ।

'नचीता -हे जावो बापू' पूनम लान लगा'र साण्ड नैं उठाई । ठाकर हिरणी र म्रेड मार, मोरी खाची म्रर पलक फलकता ई हिरणी काफल र ठेठ म्रागै जाय पूगी । थोडी सो म्राग ई म्रेक धोरो हो । काफलो धोरा ऊपर चढ चुको हो । ठाकर

धोरी पार कर, कद का ग्राग नीसर चुका हा। घूड रै उडण सू दो तीन साण्डा र माग पाछ कीं निजर नी ग्रावतौ। पूनम साण्ड न हुकम दियौ 'भँ भ भ'

साण्ड नीच बठगी। मूमल री ग्राह्या रोवणै रै कारण सूफगी ही। पूनम साण्ड सू नीचै उतर, केसरी रा ब धणा खोल्या, वी रा गाबा पलटाया ग्रर घावा ऊपर पाटिया बाघ दी। वो छागळ सू पाणी ले'र वी री ग्रारया धोई, ग्रर पाणी पायौ। हम केसरी नैं की चेतौ ग्रायौ। वी रौ सरीर बुरी तरिया सू टूटतौ ही पूनम वीं न सा'रौ द'र बठायौ तौ वो पाछौ जमी माथ लुढकग्यौ। पूनम ग्रापरै खावा ऊपर उचाय, केसरी न साण्ड र पल्लाण ऊपर सुवायौ ग्रर दो यू भाई वण पाळा चालणा सरू व्हगा।

मूमल, माई न काठौ पकड'र चिपगी। पूनम वी र माथ हाथ फोरियौ ग्रर नैंणा रा ग्रासू पूँछ र धीजो दियौ।

सिंझ्या धीम धीम पग पसारण लागी। लोग थाक चुका हा। घोटारू ग्रजू ग्राठ दस कोस री भौं माथ ही। ग्रेक धोर र ग्रोल पडाव ह्यौ। साण्ड न मेलाय पूनम सीधौ बाप कन पूगौ। ठाकरा री मसा रातोरात घोटारू पूगण री ही। पण सग लोग थाक चुका हा। ग्रधारी रात ही, इ वास्तै वाद निकळियां पैला ग्राग बधण मे लाचारगी ही। पण ठाकरा रै ग्रणूती उतावळ ही। पूनम न ग्रागलै मारग रा सैनाण बनाय ठाकर बाकै मे ग्रक मोटी डळी ग्रमल री मेली एक डळी हिरणी न चगायी ग्रर पूनम नैं भोळावण देय, घोटारू सारू पलायण कर दियौ।

बापू नैं व्हीर कर, पूनम पूर काफलै र लोगा नैं सम्माळनौ खुदरी साण्ड कन पूगौ। मूमल कसरी रौ माथौ दबावती ही। इ र साग ई बुचकारा बी लेवती जावती। ग्रधार मे पूनम बुचकारा सुणिया तौ वी र सरीर मैं ग्रेक भरणाटौ चालग्यौ वो नजीक ग्रायौ तौ वैंन री गोद मे केसरी रौ माथौ हौ, वी न थोडो थोडो चेतौ हौ। पूनम न देख, वो मूमल री गोदी सू ऊठण लागौ पण पाछौ पडग्यौ। पूनम मूण्डौ ऊधौ फोर ऊभग्यौ।

'म्है थोडी ताळ सू पाछौ ग्रावू बाई, तू डर तौ नी ?'

'कीया जावोई ?'

'म्है बगौ ई पाछौ ग्रा जासू

'नी माऊ' मूमल केसरी र माथै हट तकियौ देय, खुद नैं मुगत करी, पूनम कन ग्राय ऊभी'

'हां, हम फुरमावो कत जावण रौ विचार ग्रोई ? चम्पा र गांव ?'

हब

नी ग्राप ग्रोथ नी जावो'

क्यू'

'म्है दुसमण र गांव आपन नी जावणू द्यू।

'मोरज कन तलवार कोई।'

नी भाऊ, तलवार म्यान में ई पड़ी रै जावै अर माथा कट जाया कर।'

'मोरज हाथ म विलिया कोनी

'नी, पण म्है जाणू क आपरो कोप जावणो ठीक कोनी'

'म्है तो वां लोगां न मावचेन करण री खातर जावू ई पयो।'

एक दुसमण रो दूजो दुसमण भरोसो करसै, आ कण्ण बात कोई।"

'तो पछै म्है काई करू ?

आप ? म्है क्यू ज्यू करो।'

आप बठो हूँ जावाई'

'नी, तू कत '

पला आपा टुकर तोडला पछ आगैरो बात मोरांला।'

'भाऊ! टुकर आप तोडो, म्है चाली '

नी मूमल ठरजा, सुण बात'

'काई ?

'बैठ

इमै केसरी बी ऊठ बठो वो पाणी माग्यो। पूनम वीं न खागळ उवाय पाणी पायो अर दो सोगरा ऊपर गुळ री डळी अर कान्दा धर केसरी नै आपर हाथा सू कवा देवणा सरू किया। मूमल मन में मुळकण लागी।

केसरा अर मूमल, साण्ड माय सवार व्है, जा चुका हा। पूनम धोरा माय पसरग्यो। चम्पा र सुपनां री मक सू बी रै सरीर म मस्ती वापरगी। थाकेलो मेटण सारू नीद आय पूगी। कापनै माय सू एक सतरा बरस री छोरी 'पूनमी' आ'र पूनम र पसवाड पडगी। सुपनां म उळझ्योडो पूनम चम्पा री चोटी पकड र आपर कानी खचो। पूनमी रो सरीर काठो भरयो सुगन सू भरपूर, चम्पा री मक मे घुळ मिळग्यो ठण्ड सू सुकडीजती पूनमी पूनम रो धोतियो खाथ मोड लियो। घणी मीं र टाण्ड री थकाण अर सुपना र रस मे भीजियोडो पूनम, नण खाल, सुपना सू बिछवो करण री हालत म नी हो। हवळै हवळ रैण गळण लागी। धोरा रो मुखमली पथरणो गिवण लागो। पूनमी र होटा माय अडियोडो सिसकारो, बायर साग उडग्यो। उत्तर दिस री सूनियाड में दखण मे हो, काफर रो पड़ाव। कीं सिसकारा, की हूँकारा की बुचकारा, पूनमा रै काना ऊपर रळकिया। पिरतख रो नजो सो ससार ई हो पूनमी रो साच। अर छिन रो साच, जीवण भर री हाल।

★

(१६)

दो पोर रात ढल चुकी ही। तारा री चमक मन्दी पड़ती। धोरा री इ सूनियाड में फौज रै जमघट रै कारण जोरदार हाका हू मचियोडो हो। हजारा मसाला अक साथै चेतन व्हेगी। ऊंट बळद, घोडा इत्याद सजधज नै कतारा मे ऊभा हा। सिपाई, बन्थिया पैरियोडा त्यार ऊभा हा। ऊंटगाडिया माथ समान लादीजण लागो। पाच मील लाम्बी फौज री काफलो तरोट माथै चढाई करण सारू कूच करण न त्यार खड्यो हो। हजारा झिण्डा हवा म फरावण लागा। नगारा सहनाई तुरई, ढोल इत्याद री भेळी गू ज सू धोरा धरती रा कान गूजण मरू व्हेगा। सुलतान मैमूद गजनवी री फौजा कूच कियो तो अडो लखायो कै करोडा री गिणती मे धरती रा सारा मानखा अक जागा भेळा व्हेगा है। पग पग डर लागतो क इ टोडो फाक सू धोरा री धरती री कवळी कायाक ठई छुल नी जाव। धोरा र ऊबड खाबड टोला ऊपर चढती अर उतरती फौज, घोडा ऊँट, इत्याद सू जमी धूजती व्है ज्यू लखावती। जाण सपनाग नीच सू आपरो फण हिला रयो है। नगारा निसाणा समच सिपाइया री कदमताळ सू धरती धूजती। जाण अक पूरो सैर, माथ उचाया, धरती आभ कानी घूम रयो है। तम्बू, वदिया रसद, सस्तर अर पाणी उचाया गाडिया री कतारा आगै आग सू अंडी लखावती जाण बाजरिया बिच्छुवा री फौज कूच कर दियो है।

हरावळ मे उप प्रधान सेनापति अर मैमूद कासिम खुफिया सरदार, हथियारा सू लस, फूटरा अर सजियोडा, काठी कसियोडा घोडा माथ सवार हा। वार ठीक लार पाच सो घोडा अर चार सो ऊँट, दस दस री कतार मे चाल रया हा। या र लार चार हजार पदल सिपाई हा ज्यार लारै दो सो घोडा अर सो ऊंटा रो अक काफलो हो। या रै पिछाडी पाच सो अरु पैदल सिपाई हा ज्यारै लारै सुलतान ममूद गजनवी रो इरानी घोडो हो। औ घोडो बौत ई मजबूत पगा वाळो सावण र पाणी भरिया काळा बादळा दाई काळ रग रो हो। घोडे रो सिणगार देखण जोग हो। वी र पुट्ठा माथ रग बिरगी कोरणी कियोडी ही। कमर माथ खूबसूरत अर कीमती रेसमी डोरिया सू कसन काठी बाधियोडी ही। इ घाड माथ मैमूद रो रूप, डोल डोल, तेज चौगणो निजर आवतो। सुलतान रै घोड र डाव हाथ कानी अल हबी रो ऊँट अर जीवण हाथ कानी प्रधान सनापति रो ऊँट, घोड सू कदम मिळावता आग वध रैया हा। सुलतान रै आग लार अर आखती पाखती वी रा मझूरखाळ नागी तलवारां हाथां में लियोडा अर घोडा माथ सवार हा। सुलतान रो अक हाथ वीं री आदत मुजब तलवार री मूठ माथै हो, वीरा नण फने रा सुपना में उळझियोडा हा।

छकड़ां ग्रर ऊंटां गधां माथ खावण पीवण रौ सामान लादियोड़ो हो। घोरां मे ठण्डी रातां म सहनाई रा सुर, हिड़दै मे टीस उठा देवता। ठण्डी हवा रा झोला नींद रो न्यूतो लिया कानां मे फुसर फुसर करता। पण ममूद गजनवी प्रकृति सू बी भिड़ण री सामरथ राकतो। बी माथ बायरै र झोलां रो, की असर नी व्हियौ। फौजां, तारां री दिसा पकड, बरोबर ग्रागै बढ़ती रयी। घर मजला, घर कूचा, कोस दो चार, दस, बीस कोस पूगता, रात री उमर खूटण लागी। बायरो पला सू तज ग्रर ठण्डो व्हेग्यो। सरीर मे थड घड़ी छुडावण वाळा बायरिये रा तरकस सरीर न बींधण सारु उतावला हा। फौजिया रा नींदाळका नण झपकियां खावण सरु हिया। इ घड़ी मे जीवण रौ सबसू मोटो सुख, बायर री थपकियां खाय नींद लेवण मे ई लखावतो। रात भर जागियोड़ा सिपाइयां नै लखायो क नींद बी जीवण रो बो मन्तर है जको जागरण रो जर उतार न मिनख नै ताजा खिलिया फूलां री ताजगी ग्रर सोरम बगस। सोवण बरणी रेत री गोदी मे दो छिन सोवण रो सुख, उठावण री हूंस र र नै कळपावती पण सुलतान रै गुस्स री याद ग्रातां ई सिपाइयां रा सरीर सीतळ पड जावता।

× × ×

मुटठी सू रिगसती रेत दाई रळियावणी रात विलूमगी। पूरब दिसा में पसरियोड़ा घोरां लार सू रातड फूटण लागी। धूड री सौवणी रूप सिपाइयां री निजरां में चितराम दाई मंडग्यो। पूरब दिसा सू हिरणां रो भुण्ड फलांका लगावतो घोरां ऊपर ग्राय ग्रेक छिन थमग्यो। ब घणा तुडायोड़ै बळद दाई ग्रो भुण्ड पवनवेग सू घोरां रे समदर मे डूबग्यो। हिरणां रो पीछो करता किरणा रा तीर घोरां धरती में जागा जागा बिखरग्या। रेत रा कण, सूरज री किरणां मे पलपलाट करण लागा। ज्यू ज्यू फौजां ग्राग बधती सूरज, घोरां रो ग्रोटो छोड खुल ग्रर मुगत ग्रसमान म ऊपर चढ़ण लागतो। बायर रो वग हुमैं धीमो पड चुको हो। धीम धीम सूरज री भट्टी तपण लागी। लाखां मीलां दूर सू धरती माथ पूगणवालै ई ताप सू रजकण तपग्या। ठण्डो बायरियो लू बणग्यो। सरीर पसीने सू लथपथ व्हेगा। घोड़ा ग्रागली टांगां ऊंची कर, हिण हिणावण लागा। पदल सिपाइयां री पगथाळियां मे रेत री गरमी जरका न बो घ नै, ठेठ मांय पूगगी। नीचै सू रेत री गरमी ग्रर ऊपर लाय बरसावतो तावड़ो ग्रर खीरा चेढ़तो सी लू कमर न बोंधतो सूरज री किरणा। हलक सूखण लागा, थूक रो खजानो खूटण लागो, कंठ चिपण लागग्या, लू र सागै रेत बी उड़ण लागगी। बतूळिया ग्रर ग्रांधिया सू ग्रांखियां बूरीजण लागी। धरतीकण नणां मे गुस'र घावा मारण लागा। सिपाई ग्रास्या मसळ मसळ काया व्हेग्या। ग्रठै देही री चमडी काळी पडण लागी ग्रर सरीर तव दाई तपग्यो। माथा चकरावण लागा।

सरीर र मायली अर बारली गरमी पाणी री छुड़काव माग पण रोजा रा दिन हा, रोजा मे दिन र उजास म थूक गिटणो बी हराम हो सो पाणी पीवण री तो सवाल बी पैदा नी व्हैतो। आंधिया अर धूड सू गनो माफ निजर नी प्रावतो। फौज री कतारा बिखरगी। फौज री कवायद रो हिसाब न तो कोई राख सकतो न फुसरसत ही, सग आप आपरो जीव बचावण री धुन म हा। गरमी अर तिरस री मार सू तकरीबन पाच सो सिपाई पचास घोडा अर दस बळद चक्कर खाय धरती माथै गुडग्या। बेहोसी री हालत मे वे धरती माथ पड़ियोडा सिसकता रया। भागादौडी में लागोडो फौज यान कुचळगी क आधी सू उडतो धूडो या न बूरग्यो, ई रो वेरो ई कोनी। मारग में तळा पणकरा तो सूखा इ पडया हा। को खाडा खोचरा मे कादो हो। जिनवरा माथ तो रोजा रो दण्ड हो कोनी। घोडा, बळद इत्याद ई कादै न ई चाटग्या। ई सू बारा पट फूलग्या अर उण ई पसरनै दम तोड चुका हा। पण सुलतान रा होसलापस्त नी व्हिया। वो लगो लग आग बधतो रयो।

मारग में केई भाटी सिरदारा री नानी टोळिया री सुलतान रै सिपाया सू भिड त व्हैगी पण ई लस्कर नै रोकण री सामरथ वा म कठै सू आती? ई टळकी सी भिड त में बी हलक ई हाय पाच सो भाटी सिरदार श्रीजी शरण व्हैगा। अर हजार भाटी सिरदारा री अेक टोळी चुतराई सू काम लियो। सुलतान री फौज मे खावण पीवण रै समान री बाळद लार ही। अै लोग उपरवाडै र मारग सू घोरा रो ओलो ल लार पौंचग्या अर खावण पीवण री समान लूट लियो। यार अचाणचक हमल सू रसद रा रुखाला घबरायग्या। बळद भी मरग्या अर व उण्या पगा पाछा भागण लागा। तकरीबन पाच हजार फौजिया रै महीन भर रा जिनस अ भाटी सिरदार गाडिया समेत लूट न लयग्या अर गाडिया में बळदा री जागा ऊट जोत दिया। ई भात सुलतान रा फौज मे घणा ई बेला बीत्या।

लस्कर री चाल धीमी पडगो हो पण सूरज री जातरा अेक गन सू अधि मोडी ही। माथ मण्डियोडो सूरज, पच्छम कानी टिपण लाग्यो अर धीरो ताप मोळो पडण लागो। सुलतान री फौज में पाछो साच आयो। हमे धूडो बी साफ व्हण लागग्यो मारग साफ सूझण लागो। पच्छम दिस म धोरा रा कगूरा गो दाई बाको फाड न पसरियोडा हा। सूरज हम ई गो र बाक म घुसण साहू लाचार हो ज्यू वी न चन्त नै रोकण मे कोई सिमरथ कानी वी भात ई वीं नै ढलण सू रोकण री सामरथ वी ई धरती र नैवाभिया म तो कोनी।

गाजा खोलण साहू अजान व्हैी। सुल्तान फौज रा सैंद सिपाइया सागै

नमाज पढी। पण सुलतान रो हुक्म हो क चाद निकळता ई कूच कर दियो जाव अर फजर पला ई किले रो घेरो घाल दियो जाव। मुरग री पली बाग र समच ई हमलो बालण रो सख्त हुकम हुयो। सुलतान फौज रा सग मोटा अफसरा न बुलाय वासू सलाह मशवरो कियो अर फौज न दो हिस्सा म बाट दी। वाराह अर लगा री फौजा अजू लग पूगी कोनी ही पण वान उत्तर दिस सू हमलो बोलण रो हुकम हो। खुद री फौज नै वो पूरब अर दक्खण सू आग बधण रो हुकम दियो। वी न दौलत लूटणी ही, इस्लाम फलावणो हो अर बुतपरस्ती न नस्तोनामूद करणो हो। बुता न तोडिया सू वी न जन्नत नसीब व्हे सकती ही। ई सारू वो पाखण्डी पुजारिया न कतल करन वारी जागा इमाम मुकर करतो।

राजा री त्यारी अर हौललो भावण सारू खुफिया छोड दिया गया। सुलतान खुद बी लडाई मे जूझणी चावतो ई वास्तै वो आ जाणण सारू उतावळो हो क बीरी भिड त राव विजयराज सू कठ व्हे सक? सनापति अर अफसरा आप आपरी टुकडिया सम्भाळली सितरज रा प्यादा सुलतान रै हुकम री तामील में तक्मीम व्हेगा।

※

(१७)

मीठा सुपना में रण बीतगी। पैला चम्पा सू रगरेळिया पछ सुलतान ममूद नै मारण रो मो", राव सू सिरोपाव अर जागीर लेवण सू ल'र चम्पा सू ब्याव तक री जातरा ढळती रात रो सुपनो अेक पोर में पूर' करलो। पूनम री जद आंख खुली तो सामी पूनमा पाणी री छागळ अर कनेवो लिया हाजरी में ऊभी ही।

रात भर काई सुपना सू रमता रयाई कवर सा?"

पूनम अेक र पूनमी री आंखिया म आखिया गडा र हसियो। पूनमो लाज सू नण झुका लिया। पूनम वी रो हाथ झाल खुर नडो खाचली।

तन वगा कर ठा पडो कै म्है रात भर सुपना सू रमतो रयो?"

'अ तो आपरा नण ई भे" खोल कवरा'

'हो तू नणा री भासा रा आखर ओळख काई?"

'हव, थोडी घौत विदिया सीखी अोई"

क सू ?'

'आप सू ई'

म्हासू ?"

'हा"

कदी ?"

'रात"

"रात ?"

"हू।" पूनमी फेरु लजायगी। पाणी सू आंखिया अर मूण्डो धो र पूनम कुरलो कियो। सोगर माथ पडिया घी र लू द अर गुळ री डळी सू कवो भर पूनमी, पूनम र सामो कियो।

"लिरावो"

'पूनम, पूनमी रो हाथ पकड'र खुदरो मूण्डो वी र हाथ रै नजीक लयग्यो अर बारो फाड र वीं री आंगळिया बाक म दबाली।

'छोडो ऊँ हू'

'हैं, हैं।

नो, कोई देख लेसी तो — "

"कुण देखई ?"

'मोधजा नण'

"ढापल"

'ढांप लिया"

हमैं कुण देखई ?"

"आप"

'ल, म्है बो नैण ढापलू। हमैं कुण देख? कुण दीसै ?"

"आप'

'पूनमी!"

'हू"

'तू बोत मूण्ड लागैई"

भटको देय पूनमी हाथ छुडायो अर ऊभी व्हेगी।

"माफ करो अन्नदाता'

'रूसगी ?"

'हू'

क्यू ?"

'व सुपना सू ई रीझ्या करो, पिरतख नै तो दुतकारा ई द्यो'

पूनम थोडो सोच में पडग्यो पेछ थोडो मसखरी करतोडो बोल्यो—

म्है तांप्रज जैडी काळी, कळूटी न सुपना में सम्भावू ? पिरतख बी कोनी राव।'

हम पूनमी मोग ी उठ ै नाख र ब्होर ेहेण लागी । पूनम थोडी ऊची हेर पाछी वी रो हाथ भाल लियो ।

पूनमी!'

की ग्रोई ?' पूनमा थोड मान ग्रर ग्रक्ड र साग बोली ।

साण्ड ग्रोइ, हिरणी री जोड री ?'

ग्रोई तो, पण वा दूज ग्रसवार सू कोनी ढब'

म्है ढाब लसू'

पूनमी थोडई ग्रोई क हाथ भाल र मीठी बाता म भरमा लनी

म्है तन कद भरमाई ?

'रात

''रात ?

भूठी'

भूठा त'

बात खोलन बता'

'बात तो बगत ग्राया ग्राप ई खुल जासी ।

मोग्रजो सुपनो सुणली तो ईसक सू बळ र राख व्हे जासी"

'बळ थारा बरी दुसमी बळ म्हारी सोक । हा काई करो साण्ड न ? सुपन में गवाई परी ?'

सुपन म नी जागत म

'ग्र

देख मसखरी बन्द करा ग्रर मुतळब री बात करा

मसखरी म्है करूँ क ग्राप? क्दका छेडो होई पया'

'ग्राज ऊठना ई ताग्रजो मूण्ढो देख्यो भस रो'

'देखो क्वर सा ! थोडो सोच समझ र बोलजो । हमक भस कयो तो ठीक नी रैसी

''की ठीक नी रसी ?

पूनमी हम पग सू फटकारो देय चार पावण्डा ऊँधो फिरगो । पूनम रो मस्तो ग्रजू उतरी कोनी । वा पाछ सू जा र वी रा चोटी पकडली। पूनमी रोवण जडी सिक्ल करी ग्रर पूनम वीं री चोटी पाछी छोड, वी रो हाथ झाल लियो ।

''ग्रेक बात रो वचन द ।"

''काई ?'

"पला वचन दे'

'पैला बात बतावो'

"पला वचन पछ बतासू ।"

'वचन पछ देसू'

"नी पला वचन द"

"दियो'

"की सू ई नी कव ।"

"नी'

'देख पूनमी ! मूमल ग्रर मेसरी रानै ग्रेय सू निकळ चुका ग्रोई पाछा नी ग्राया, मन, बात सोधणी ग्रोई नी तर बापू मन काचै नै खा जासी ग्रर बात दो'यू नै जीवता नी छोडसी' ग्रक'र तो पूनमी रा होस उडग्या पण दूज ई छिन वा सम्भळ'र बोली—

साण्ड ग्रोई ग्रेक हिरणी सू बी तेज गत री पण "

'पण की ?"

'मन साथ चालणो पडसी"

क्यू ?

ग्रस घे ग्रसवार नै कोनी चढावै'

'म्है, सून न पादरी कर लेसू'

'ग्र लक्खण माण्ड लेजावण रा नी ग्रोई"

तो पछै म्है की करू ?'

'करणो की ग्रोई ? मारग जाणो ? ग्रेय सू केय किण दिसा मे जावणो ग्रोई ?'

उतराद'

"उतराद में तो जेतसी गाव ग्रोई"

'नी ग्रोय नी, पूरब कानी'

पूरब मे तो मारवाड ग्रोई'

'ग्ररे इव तनै की बताऊ ।"

"मन बापडो नै मती बतावो, पण साण्ड पिमरणो ग्रोई, मेक्ला न सूप, जीव जोखम में नी नाखू"

'म्है पाळो ई चल्यो जासू"

'पाळो, कित्ता बरसा सू पाछो ग्रावण रो विचार ग्रोई ?"

"पाछो क्यू ग्रासू ?"

'जद साण्ड कोनी मलाई में साण्ड गमावू"

'ग्रेक बात ग्रोई"

'अेक अक करता जाण कित्ती बातां कयदी अर अजू अक मतो कोनो ?'

'कोइ असवार कोनी जको छोडर पाछो आ सक ?"

'छोड सक पण पाछो आणो हाथ कोनी'

'क्यू ?'

"मोअर्जी मनरी म्है महाराणी होंई था कुण व्हो पूछण वाळा ?'

'म्है म्है हा म्हैं कोई कोनी पूछण वाळो पण हमें बैग कर पण

'फेरू पण अब वठा रवो काफलै न धोरो पार करण दयो पलक भपता चक्मो दे र पाछो आवू"

पूनम न दो पल दो दिना सू बी लाम्बी अर मोटा लागण लागा वीरी खासी मस्ती रो नसो हमें सोच फिकर म बदलग्यो मूमल अर केसरी रो सोच, चम्पा रो सोच बापू र गुस्स रो सोच, सुलतान न मारण रो अर जागीर पावण रो सुपनो कूडो पडतो लखायो।

काफलो कूच कर दीठ सू ओभल हे चुको हो। अेक साण्ड वी र नजीक आय ऊभी व्हेगी।

वी पर वठोडो मडद ऊपर सू हाथ नीच कियो अर पूनम न हाथ मिळावण री सैंनी करी। पूनम अेकर तो अचम्भ सू वी मरद कानी देखण लागो पण दूजे ई छिन बिना सोच्या बिचारया हाथ म हाथ भलायो अर साण्ड र पेट माथै अेक पग माण्ड, हब करतो साण्ड ऊपर सवार व्हेगो वी र, ठीक लरिया ठेण सू पला ई साण्ड उडण लागी। पूनम न लखायो साच्याणी वो ई साण्ड न नी ढाब सकतो। साण्ड री तज चाल सू जोर रा हिचका लागण लागा पूनम आग वठ असवार र खाधा ऊपर सू हाथ अळगा लेय वी र दो यू हाथां र बीच सू निकाळ वी री खाक सू थोडा बार काढ लिया। वी असवार र पतलें पेट ऊपर सू हाथ जद फिसळण लागा तो वो हाथा नै ऊचा ले आयो वीरी आगळिया मे अक भणणाटो चालग्यो। असवार, पूनम र हाथा न आपरी खाक म काठा दबा लिया। पूनम रो माथो असवार र खाध ऊपर टिकग्यो, असवार मूण्डो नीचो कर पूनम री आगलिया री बुचकारो लियो अर माथ ऊपर ल फटें न थाडो ऊचो लेय आपरा केस पूनम र मूण्ड उपर रळका दिया। पूनम रो हियो पुलक उठ्यो। बसुधी में वो हथाळिया री दाब वधादी। असवार अेक सिसकारो कियो अर साण्ड री मोरी न थोडी खाच दी हमें पूनम असवार सू काठो चिपन बठग्यो। वी री हथाळिया गरमास अर गिर सू भरियोडी ही। भौं री भाखर काटती साण्ड झाफण लागी।

जाणो आँई केत मुसाफिर ?
जेत ले जावै असवार'

'पाणी न पग दीस पया तनोट कानी रा'
'पाट नगर मे, ले चालौनी मिणियारा'
आ हिरणी री मा जायी'
'भूल गयो स मनचायी
'बोल बणाली अजर गुलाम ?'
सूपी ताअज हाथ लगाम'
देल चुकाजे पूरो सम'
'सह्या न जासी ताअजा तेग'
'आपस री छोडा तकरार'
'हैन करा, ल कर मनवार'
मनवारा मगर चढसी।'
'लाद्योडो धन कुण लेसी ?'
'माअजो साचो धन पूनम'
'लेणा पडसी लाख जलम'
लाख छोड म्है, लेवू क्रोड'
'हम छोड द माथा फोड'
'पला मोटी हाथ जोड'
कइयां जोडू बन्धिया हाथ ?'
ढोल तिढै झट घालो बाथ
'हाथा म पडिया खीरा'
'किण नणदो री भावज रा ?'
'जिणरी किस्मत म हीरा'
'सूरो मारग लूटै लाग'
'थाकी साण्ड चरावो फोग'

झ झ कर असवार साण्ड न झैकी। पूनम असवार रै खाधा री मा'री लय आचै उतरियो अर वीं सू विलूमग्यो। माझळ रात मे धोरा री रळियावणी रेत रामतिया री रमत मण्डगी। लाजा मरता बादळी तारा रो पडदो कर लियो।

◐

(१८)

"तू काई सोचै मूमल ?"

"हूं जाण मूमल सुपना र आभ सू धरती माथ आ पड़ी।

'मूमल'

"हू, इया मूमल, मूमल री रट लगाता रसो क काई मुतळब री बात बो करसो ?"

केसरी, मूमल र गळ में दोयू बांयां घात र वी न काठी भीचली।

छोडो'

'नी'

"म्हे क्यू छोडो'

"रूसगी काई ?"

"हूं। बात ई रूसण री कोई ?"

क्यू ?"

"लारै पादरा नी बठा र सको तो मन उतार द्यो मू पाळी घाल लसू।"

केसरी चालतो साण्ड सू कूद पडयो 'न हूमैं राजी'

मूमल अजू आपर मनगत में मालूमियोडी ही, वा बापू रैं गुस्स री कळपणा म डूबोडी ही वा जाणती ही क दोफार तक वा अस्पापूर मुसकिल सू पोच सकली अर उठी न साकळ ई जद बापू वी अर केसरी न नी देखला तो पूनम री चमडी उधेड देसी वी र सरीर मे चाणचक थड़थडी छूटगी अर जाण कद वीर हाथ सू मोरी खाचीजगी। साण्ड सपाट हवा सू बाता करण लागी। दो चार पाच कोस पूगा पछ वी न चेतो आयो।

'या म्हासू साचो हेत राखो क दूजा लफगा दाई कोरा सुन्दर रमण सारू मन रामतियो मानोईग्या'

पडत्तर कुण देतो ?

'बोलो कोनी ? नाराज व्हेगा काई ?

मूमल री अवाज पाछी वी र कानां सू टकराई हूमैं वा थोडी लार झुकी। वी रा होस उडग्या। लारली पासी खाली ही। मूमल लारल पाम पैला हाथ फेर तसल्ली करणी चायो। पण जद जागा खाली लागी तो लारली कानी मूण्डो कर जोयो। रिन्द रोई म खुदन अेकली देख अकर तो वा घबरायगी। घबरायोडी वा साण्ड न पाछी फोरी। हडबडाट में वा दिसा भूलगी। साण्ड बी थाक चुकी ही। एक बावळियो देख, साण्ड उठ ई रूकगी। मूमल रो कालजो

धड़कण लागो। वी र नणा म प्रांसू आयग्या। वा खुद माथ घणी ई गुस्सो करण लागी। नी बावत री रयो नी बाथिया आवशियें री। अ धारी रात मे जाव बी तो केत ? तारा री चमक बी फौरी ही। पैला तो वा सोची क साण्ड लै जाव जत चली जाव। पण सुलतान री फौजा रै भौ सू वी रो कालजो अक'र फेरू जोर सू धड़कण लागो। वी रो कण्ठ सूखग्यो अर दात चिपग्या। वा बहोस ह्वियोडी साण्ड माथ सू खिरगी। बेहोसी मे वा जमी माथ पडी पडी टसकण लागी। मोरो ढाली व्हियां सू साण्ड रा नकेल रो दबाव जातो रयो। वा मुगत व्हेगी, अर मतो धोरा म विचरण निकळगी।

अ घारी रात में केमरी सावचेती सू डग भरतो मूमल रो पीछो करतो आग बध रयो हो। वो पाच छ कोस तक चाल'र थाकग्यो। वी र सरीर में फेरू टीसा हालण लागी। लाचार हे वो अेक धोर माथ पडग्यो। पडता ई वीरी थकाण भरी देही माथै नी द हमलो बोल दियो। सूरज री तेज किरणा वा न चतो करायो। वो रै मामै काई स धो मारग नी हो। च्यारू मर धोरा अर धू मर ऊपर सू लाय बरसावती सूरज री किरणा। खुदर भाग माथ वी नै तरस आवण लागो। वो मनम घणो ई पछतावो कियो पण हमैं बी साम कोई मारग नी हो। सूरज री गरमी सू बचण खातर वो अेक धोर गै ओलो छोड बीज धोर री आड लवतो अर बीजै सू तीजे रो। वीरो गळो सूखण लागो। सारै दिन वो थूक गिटतो रयो। जद कण्ठ रो थूक बी सूकण लागो तद वो रोवण लागो पण नणा रो पाणी बी सूख चुको हो तिरस बुझावण रो कोई उपाव नी देख वो खुन्रो पेसाब धोबे मे भर न पीयग्यो। पण तिरम र रै नैं धावो करण लागो। सेवट सूरज आथमग्यो। हम केसर री निरस की मोळी पडी। वो खुन्री पसाब पीवण री बात माथै लचकाणो पडग्यो। वो खुन्नै मोन रै हाथा सूपण सारू नण मूद लिया अर दोयू हाथां सू कण्ठ नै दबावण लागो।

अ ! कुण ओई तू ?" ठोकर लगावता थका अेक मडद रो कडकतो सुर केसरी माथ पडयो।

"म्हू केसरसिंग भाटी गांव जेतसी रो'

'हूं ! काई लेवा आयो अेथ ?' वो मडद पूछयो।

'

'ठीक समझग्यो ऊठ मोप्रअ साग चाल'

केत ?'

'भूप री मन्ती देवा

मोग्रजी पोर्‍ भपो कोनी म्हे कर् म्हे कसगी हूँ जेतली रो माटी '
'हा हा सुण लियो ऊठ क दू लात रो दो चार ।
' लात री थयू ठाकरा तलवार री दयो नी सो पापी प्रांण तो नीसर"
' प्राण तो थारा लेसा ई पण पना थारो परख तो करलां'
' की रो डीकरो मोंई तू ?
' भरजण सिंग रो
' कसो जोड री भूभार ?'
हव
-- तद तो तू मोग्रजो भाई हियो । काई बिखो पडयो ? मिणियो दाबनो हो"
केसरी र नणां सू दो मोती टप देता सिरग्या । वो मदद वी न गळ सू लगाय लियो ।
' चाल डेरे '

केसरी भर गज दोन्यू भेळा बठ न्हाणू कियो भर ऊपर सू गरम दूध पियो । केसरी मे पाछी नुवी सगती वापरगी । हमैं वीं न मूमल री भोळू सतावण लागी ।

दो साण्डा पल्लाण कसियोडी त्यार बठो ही । केसरी भाज पैली वार कमर सू तलवार लटकाई । आधी रात र लग टगै गज भर केसरी चम्पापुर पोंचग्या । भधवळिया भूपा सू निकळती चिणगारया सारी कथा बखाण करदी । समसाण जडी गिव सू वारा माथा भिन्नावण लागा । च दरमा हमें उजास कर गाव री हगीगत न सावळ उघाडी कर दी । इया हवा भधमरिया बूग ठाडा रा भधकिचरया सरीर टसकता हा । जागा जागा खाडा भर मळबै र ढलावा की खोपडिया कटियोडा हाथ टाग टाबरा रा विरचा कियोडा सरीर भर जिनावरा री बन्दू देवतो हड्डिया रा पजर सुलतान रा दो--चार सिपाई गाव मे भठ्ठ घूमता हा । गज वा री गांटकिया उतार बदळो लेवण रो भलाग कियो । केसरी चितबगतो व्हगो । वो तो मूमल रो भोळू मे खुदरी सुध भूल घगो । भ्रेक दो जागा लुगाया रा कटिया सरीरा कन पुग, वो भोळखण री कोसीस करी । पण गज रा भ्र बोल 'काला ! जवान छोरी न कतल कर जडा म गाफल नी भोंई । स्यात मूमल न मैमूद रा सिपाई झालली भोंई" वी र काळज न बो ध नाख्या ।'

"होमत राक । भापा लेसा बदळो । म्हे मूमन न नी छुन्नाय लाडू तो भमल रजपूतणी रो चू गायोडो नी । सोगन तन्नो री, जे तांग्रजी मूमन म कन लाय नी ऊभी करू तो । पण तन मोग्रज कवण म हालणों पडसी ।"

"म्हे नी जाणतो क ममूद भडो जालम माणस भोंई, डाया मिनखा न यू

बरशा" करण रो वी नै काई हक ?"

"हूं। हमै बाता कम कर जाणनो तो कांई कर लतो ?'

"म्है वीं न इण दिस में घुमण बी नो देतो"

'हू, ग्रेकलै सू ग्रेक छोरी तो ढबी नो अर लश्कर न ढाव लेनो। ज" केड़ क जनमी रा ठाकर डीगा हाकण में हुसियार ग्रौं", होमत रा पोचा ग्रौंई, साव पाचा।'

'देख गजू! मन गुस्सो मत ग्रणा"

'केसू! ग्राव ग्रेक'र गळै मिळजा। ग्राज बोस बरसा पछ मनै कोई इं नाव सू बतळायोई।"

दोयू ग्रक दूज सू गळै मिळग्या। ग्रेक मळव रो ग्रोलो ले'र दो यू बैठग्या।

"देख कसू! इ लस्कर सू लडण रो तागत नो त म ग्रौंई नो म्यारळी। ग्रापा या सू भिड मल ई जावा, मलई दस बीस सिपाइया न ठिकाणै लगादा, पण मवर ग्रापां न मरणो नो ग्रौंई। मूमल नै मुगत कराणो ग्रौंई। अर इ काम सारू बारी सू जादा हुसियारी ग्रर ग्रकल जोइजै"

'पण'

'पण की ग्रौंई? जे पेला बुध सू काम लतो तो क्यू मूमल नै हाथा सू गमातो? ह्वो सो ह्वो। हम म्यारळो बुध ग्रर तामजो सुध। समझगो?

'हव भाऊ समझग्यो'

"तो, खोल गाबा

गावा?" चमक'र केसरी भेळो व्हेगो।

"हां मोग्रजा बाप या गा.बां मे तो मरण रो ई मैतव ग्रौंई"

'पछ?'

'पछ की?' ग्रापा मैमूद रा चार सिपाया नै मारया कै नी?"

'हां"

'बस तो पछै ग्र गाबा उतारो, वे परो, ग्रर सीखलो सध मारणो।

गज री सूझ ग्रर समझावण सरूप दो यू जणा ममूद रै मरयोडा सिपाइयां रा गाबा पर लिया। वां गाबा र ताजो लोई लागा"ो हो। दाग्यू जणा तलवार सू सु" र सरीर माथ दो चार जागा, खासकर डाव हाथ ग्रेक टाग कमर ग्रर मूण्ड माथ छाग छोगा घाव कर लिया। धूड में लूट'र सरीर नै धूड सू भर लियो ग्रर सुरतान र काफर म भेळा भिळग्या। सुलतान रा सिपाई वा न घायला र तम्बू मे पुगाय न्या। उठ हकीम साब वार घावा न धोय वां माथ ग्रोसलो लगायदी ग्रर पाटा बांध दिया।

(१९)

पूनमी '

हव '

'तू चम्पा नै देखी ? '

''देखी नी सुणी ओई''

की सुणी ?'

सुणी क बौन ई अकड छोरी ओई कोई धाडेत वी न उडाय लेयग्यो, अर इव बा काली फिरयोडी फिर ।'

काई बात करई ?''

हूं साव साची बात ओई पण आपरै की लेणो ओई वी सू ?''

'म्है वी सू ब्याव करला'

ब्याव ? पूनमी रो मूण्डो उतरग्यो ।

'क्यू ? बोली नी''

हा करो ब्याव हम काली छोरियाई ब्याव करण जोग रैगी ओई''

बात रो रुख बदळण सारु पूनम दूजो सवाल कियो ।

"सुलतान ममूद रो नाव सुण्योई ?''

हा सुण्योई वी सू तो ब्याव नी करणो ?''

पूनमी थोडी गुस्सो भर बोली—

ब्याव नी वी सू लडाई करणो ओई अर वी रो माथो काट राव न भेंट करणो ओई'

'हू। सुलतान ओई काई उन्दर रो बचियो क ताग्रज हाथा माथो कटासी

क्यू ?म्है मे बळ कोनी ?

बळ तो घणो ई ओई कवर सा अजू मौग्रजा हाडका अर सरीर दूखई पयो, पण कळ कोनी''

'को मुलळब ?

''मुतळब ओ क खुद सू दुसमण न जीतण सारू चार ळळा जाइज अेक सू पार कोनी पड'

वे की ?'

'ल्यो। साकी करवा चाल्या अजू इतरो ई ग्यान कोनी''

तो तू समभ्ना्द, बडी पसर ई पई

तो सुणो। खुद सू जादा बळ वाळ दुसमण न जीतण सारू बळ रै साथै दळ, कळ अर छळ न बो काम में लेवणा पडई, की समझिया ?'

"तू तौ बौत हुसियार निकळी"

"वा तौ हू, ग्रौर्दै जद तान भाल फीटा किया"

'तौ मनैं बी सिखाद'

'क्यू ? मसमासुर वाळो दाव मोमजै ऊपर ई ग्रजमावण री विचार ग्रोंई ?"

"तन को जीतू ? मन तो मैंमूद माथै वार करणो ग्रोंई"

'रजपूता में ग्रो के तो ग्रौगण ग्रोंई साम पगा मोन रै मूण्डै ज्यावई"

"का मुतळब ताग्रजो ?"

'मुतळब साफ ग्रोंई । केत ममून री लस्कर ग्रर कन राव रा गिणती रा भाइन ग्रर धाइत ?'

'मादी धाइन ग्रर भाइन ग्रोंई ?"

हाँ हेवै । ग्रर ग्रकल होण बी । तनोट ग्रावण री बार उडीकै क्यू नी बी सू सीदा माथ ई भिड'

इ सारू बौत जादा सिपाई जोइज'

'ग्रा ई तो म्है कवूं ई, जन मुकाबलो करण री पूरी सिमरथ नी व्है तद दुसमण सू राजीपौ कर लणो जोइजै'

'ज दुसमण नी मान तो"

मान क्यू नी ? ईं मे वीं र बाप री की जावैई ? वी तो नफ म ई ग्रोंई बिनां कीं गमाया वी र हाथा की लागई तौ वो क्यू नी लव ?'

पूनमी री बातां सुण'र पूनम ग्रचम्भ म पडग्गो । वी न मन ई मन पूनमी री ग्रक्कल माथ गरब व्हेण लागो । वा घणी ताळ सोचती रैयो । गाव खालो करण सू व्हे'र मूमल ग्रर केसगे ग्रर खुवारी हालत र बारै मे वा खूब साच्यौ । सगळा री बरबादी रौ कारण हौ जुद्द । वो पूनमी न ग्रम्भेरी । पूनमी वी र पसवाड कधी पडी ग्राराम सू सूती ही ।

ऊठ ! तनोट री मारग पकडा "

'क्वर सा, म्हैनै डर लागई । मोग्रजो क्वल बस ग्रापन पौंचावण रो हौ । ग्रर दिन ग्रर ग्रक ग्राधी ऊपर रैण बीतगी ग्रोंई इबै म्हैनै मोग्रज टिकाण जावण दयौ

''पण तू तौ पाछा जावण सू नटती हो'

म्है की तामजै थोरा सू थोडो ग्रोलो ग्रोंई ?'

इब कूं थोरा"

"तौ करौ थोरा'

'बयान करू ? मान जा बडभागण''

'ऊ हूँ यू नी मौम्रजा पग पकडो''

''पग पकडै मौम्रजी बलाय' श्रा कयर पूनम दोनू हाथा सू पूनमी न ऊँची उठा र साण्ड माथ वठायनी श्रर खुद बी साण्ड ऊपर चढ सवार व्हेगो। पूनमी साण्ड री मोरी जाए कर ढोली छोडदी। साण्ड धीर धीर पावण्डा श्रागै बधावण लागी। पार पार, साण्ड खुल मदान में चालण लागी। कोस भर री भौं पार करण म खासी ताळ लागी। पूनमी तो मन में सावचेत ही क इ चाल सू बी वा दोपारी ताइ नर्म सू तनोट पूग जासी, पण पूनम र मन म घणा उतावळ ही। मारग म घणा इ ऊँट सवार श्रावता जावता मिळिया। पण स कोई श्रापस री म बस ज माताजी री कर निकळ जाता। श्रेक न्दो सवार पूनम सू सवाल जवाब किया पण पूनम रै पड़ूतर सू बारो कम जावतो रयो। परभात री पुळ, पूनम तनोट री सिर श्रोळ र सामै साण्ड झुकी।

(२०)

गुलाब श्राई जद महाराणी र मल रा कपाट ब द हा। वा खासी ताळ बार ऊभी रयी। राव सू मिळिया पैला वा महाराणी न समचार देवणा चावती। सूरज श्रसमान मे निरो ऊचो श्रा चुको हो। कायी व्हे र गुलाब राव र मल कानी गई पण राव श्रोय नी हा। पगां न घीसती वा पाछी महाराणी र मल कन पूगी। गुलाब न श्रावती देख चम्पा धब करतो महाराणी नै श्ररज करण न दौडी। गुलाब रो मन उछाळा लेवतो क वी र श्रावण री सुण महाराणी सा सामा पग श्रावैला। पण खासी ताळ व्हेगी श्रर चम्पा बी पाछी कोनी वळी तो वी रो मूण्डो उतरग्यो। वी न श्रडो लखायो जाण वा कोई श्रसैंधै मुलक में श्रायगी है क जाण वा कोई बौत मोटो श्रपराध कियो है श्रर वी रो दण्ड भुगत'र पाछा श्राई है। वी न लखायो क वा नै कोई घर सू काढ दी है। श्रेक छिन सारू वीं न विचार श्रायो क वी न श्रठ सू ई कारण काढो ही क वा पाछी नीं श्रावै पण

वा विचारा म श्रळूभियोडी लारै पावण्डा धरण लागी। इतरै में कस्तूरी श्रायगी। वा गुलाब रो बाहुडो पकड र वा न जमेडो श्रर छाती सू चिपटगी। किस्तूरी गुलाब न बाथा म भरन कसली। गुलाब र नणा सू श्रासू ढुळता रैयग्या। किस्तूरी वी न पकड'र महाराणी र मल मे लयगी। महाराणी पिलङ्ग माथ श्राधी पोढियोडी ही। चम्पा पग दबावती। गुलाब लुळ न पाय लागण वियो। महाराणी थोडी सी मुळकी

'श्राव गुलाब ! कद श्राई ?''

'खासी ताळ व्हगी श्राया नै तो श्रन्नदाता'

'कोई दुख विपदा तो नी पडी ?"

"नी अन्नदाता। आपरी किरपा सूं आण द रयौ"

"थाकोडा व्हैला ? जा थोडी ताळ आराम कर, पछ मिळजे'

'आराम तो पछ बी करणोई ओंई अन्नदाता। पैला राव सूं मिळणो जरूरी ओंई'

"क्यूं ?" राणी थोडी खारी निजर सूं देख्यौ

'सनेसौ अरज करणो ओंई अन्नदाता"

'क रो सनेसो ?'

"पूनम सिंगजी रो अन्नदाता"

'क्यूं ? वो खुद केत ओंई ? जीवई क ?"

'व्हीर ही जद तक तो जीवता ई हा"

'तो पूनम सूं पुनरमिल जी व्हैला।"

"जी महाराणी सा "

'खर। छोड इ बात न, तैन काल अेथ सूं मोप्रज पीर जावणो ओंई, राजकंवर री धाय बण न, समझी ?"

"हुकम अन्नदाता'

'हा तो काई सनेसो ल्याई ?"

"आप सारु तो की नी अन्नदाता। राव सारु पूगी विगत ओंई'

हव, राव न खानगी म बताइजा तोज कान ठा नी पड। बोल बदळगी।"

"गुलाब थूक गिटगी। नैण बन्द कर आसुवा न पलका में रमा दिया।

'गुलाब! की चुभग्यो काई ?"

गुलाब मूण्डो नीचो किया माथो धुणियो। 'चुभूं जी रैं म्है चुभूं अन्नदाता"।

'मन त्यारळो पूरो भरोसो ओंई'

"गुलाब! म्है बोत दुखी व्हैगी ?"

नी केत ?"

"खर। तू जा पैला थाळो जीमलै। राव ो सनेसो देय, तीजो पौर म्हासूं मिळजे।

'हुकम अन्नदाता" कैर गुलाब ओय सूं सपाटै सूं बारै निकळगी। बार आर वा डुसका डुमक भरीजगी। हावळघर रा किंवाड बीड, वा फाट फर रोवण लागी। हमैं वी रो जीव की हळको व्हियो।

गुलाब, महाराणी सागै विया र दायज म आई ही। लाम्बा दो बरसां सूं वा महाराणी री खास मानेतण व्हैगी ही। महाराणी री कोई बी बात वी सूं छानी नी ही। वा भेरलो डावडी ही जकी क महाराणी र मल मे अर क द

बद ई महाराणी रै मौल मे पिलग माथ बो सूय जावती। महाराणी री इतरी मानेतण व्हेण र कारण दूजी डावडिया वीं सू ईसकौ बी करती अर वी री गरज बी राखती।

आज र महाराणी र बरताव सू वी न अचूम्ब साग ई घणौ दुख व्हियौ। पण वा आपरी मोड री रोवणौ की र बनै जाय रोव ? बी री बात सुणण वाळो ई जद आज वी न चोट पौंचाई है तो वीं री दुखी व्हेणौ सुमाविक हो। हमैं भीता र इलावा वीं री रोज सुणण वाळो कोई नी हो। वा किणी नैं सुणावणी बी नी चावती। महाराणी र मीठ बरताव री प्राण ~ बो वा इज उठायो। तो दुब खारा बो वी न इज खावणा हा।

वा सोचणी छोड र खु~ न भावी र हाथ म छोडदी। वा खु~न सम्भाळ'र ठीक करी। वी न याद आयो क वी न राव ै समचार देवणा है। वा फुरती सू सिनान कर तय्यार व्ही अर राव र मल काना व्हीर व्हेगी। राव ै विगतवार समचार देय, वा खु~री कोन्डी मे क~ व्हेगी। नीट पोर किस्तूरी माय कुण्णी खडखडायी। पूनम र सुपना म उळभियोडो गुनाब, छिन भर सारू सुख र समन्द मे छोळा खावती ही। कुण्ड री खडखडाट सू वा यथारथ री धरती माथै छिटक पडी।

मौल र दरवाजे माथ ऊभी महाराणी, गुलाब री बाट जोवती ही। गुलाब न सामी आवती देख, महाराणी किवाड री ओलो लेय छिपगी। ज्यू ई गुलाब, मौल र माय पग धर्‌यो, महाराणी पूठ सू आय वी री आंखिया मीच दी। गुलाब थोडी बी विचळिया बिना उठ ई ठरगी। महाराणी गुनाब री आंखिया सू हथ अळगा लेय वी ै बाथा मे भरली। गुनाब ठण्डी रयी। हार नैं महाराणी वीं न छोड वीं र सामी आयगी। महाराणी र इसार ऊपर दूजी डावडिया मौन सू बार निकळगी। महाराणी गुनाब री हाथ पकड र आग खाच लाई अर हळको सीक धक्को देय वी ै पिलग माथ गुडायदी। गुलाब पिलग सू ऊठ र ऊभी व्हेगी। हम महाराणी पिलग माथ बठगी। गुलाब री हाथ पकड र वा खु~रै ैडी खाचण लागी पण गुलाब करडी पडगी।

रूसगी ?'

'अन्नदाता सू रूसर केत जावू !

जद करडाण कै री आई

'कोडी ै दीखण लाग ''जदी

''म्है साचाणी त ै चोट पौंचाई'

'नी अन्नदाता। म्है खुद ई घणो इतरगो हो"

"गुलाब। तन काई ठा कै म्यारळै वास्त मोग्रज काळज म की श्रोंई ?"

"हुकम करो। दासी नै वयान याद करो ?"

"पला बता, तू म्यारळै सू नाराज तो नो श्रोंई ?"

"आपर आसर ई तो जीवती हू अन्नदाता।'

"परसू रात राव अब ई पोढया हा"

"जद ई मोल सोरम सू भरियो श्रोंई'

"गुलाब !"

"हुकम"

"तू अजू मन्नै खिमा नी करी ?'

"दाता। यू ई मरण नै त्यार श्रोंई। हुकम द'र तो देखो"

"गुलाब! म्यारळी होड कुण करै ? म्यारळ मन री हरेक बात म्है तन खुन'र क सकू '

आपरी किरपा श्रोंई अन्नदाता"

"गुलाब। तू नी जाण क तन अळगी करता थकां म्यारळै काळज रा टुकड़ा टुकड़ा व्हे रयाई पण काई करू ?" जीवता रया तो फेरू मिळाला नो तर पछी जूरा फेरू जीवणो श्रोंई। कठै ई तो मिळालाई'

गुलाब सू हम नी रईजियो वा महाराणी रा पग पकड र जमी माथै वैठगी। पण बिच माथो घात'र वा डुसका डुसक भरगी। महाराणी वी न उठाय काळज सू भींचली। महाराणी रै नैणा सू वी आसू ढळकग्या। थोडी ताळ दोयू स की बिसराय ग्रेक दूजी री बाथा में बन्धियोडी रैयी। मैल रा किवाड खुल्या। साकळ गुलाब राजकवार न लय बहीर व्हेगी। महाराणी की गमाय दी दी। दिन अडोळो हेगो। सूरज मा दो लागण लागो।

★

(२१)

"सत्तू काका।'

'कुण लाखण थोंई ?'

हा काका"

'काई समचार थोंई र नुवा ? '

'हमार तो श्रेक ई बात री बतळ थोंई काका, साक री"

हा, भाई साको तो रजपूत रो धरम थोंई'

'था फिकर मत करो काका, राव न हरावण वाळो ई ससार म जलमियो ई कोनी।"

जीवतो र। ल तमाकू तो पीवतो जा।' तम्मोट रो पुराणो भोमियो सत्तू काका, दो मोटी लडाइया म श्रापरी बादरी री छाप छोड चुको है। या लडाइया म ई सत्तू काका रो श्रेक टाग श्रर श्रेक हाथ कट चुको है। मूण्ड ऊपर तलवार र घावा रा सतरा सनाण है। कमर म भाले री मार सू फसळिया टूटगी श्रर लचक पडगी। दिन भर श्राय गय मिनख न सत्तू काका प्रेम मू बतळाव तमाकू श्रर पाणी री मनवार करै श्रर नुवा समचारा री जाणकारी लेवै। दूजा लोगा ज्यू सत्तू काका मे, खुदरी बादरी री डीगा हाकण री श्रान्त कोनी। पण वान लारली लडाइया री पूरी विगत मूण्ड याद है। सत्तू काका जद किणी री सोभा करण लाग तो कजूसी कोनी बरत। वारी सबसू मोटी खासियत आ बी है क वे सुणण वाळ री बी तारीफ बराबर करता रैव। बाता रा लच्छा सू सामळो सोरे सास ऊब कानो। कोई कोई वार छड बी क वे की खुद री तारीफ बी कर पण सत्तू काका श्रडी बिळिया हस र बात टाळ, श्रर उल्टी बात करण वाळ री तारीफा रा पुळ बाध दै। श्रा ई बात है क वा र घर र साम सू ववतो कोई बी मिनख वा न नुवा समचार देवण सू चूक कोनी। 'काका म्हे सुणी श्रोंई क गजनी रो सुलतान बौत मोटो लस्कर ले र धावो बोलण वाळो श्रोंई।

सो तो श्रोई पण साच पूछ तो हमक ट्क्कर बरोबरी री श्रोंई'

"हा काका। श्रापणी बी तय्यारी मे कोई कमर नी श्रोंई श्रर लोगा र मन मे बी पूरो भरोसो श्रोंई"

'जद ई तो श्रर बाजिया र उपरान्त बी घणकरा लोग तनोट न खाली नी करियो'

'खाली करनै जावै बो कत ? काका !" तमाकू री सुट्ट लगावता थका लाखरण बोल्यो।"

"जावरण न तो यूं ओई काला, कै लुगाई टाबरा अर बूढा ठाडा न जुद्द रै म ान सूं अळगो ई राकरणो जोइज।"

'सत्तू काका ! अेक बात बतावो"

पूछ"

'था बयू नी गिया तस्रोट छोड र ?"

म्है केत जावू काला ?"

'बयू काका ? थारो गाव तो घरणो सांतरो ओई अर घरणो आगो ओई। ओथ मुलतान री मार कोनी पड। अर थारो नानारणो तो मारवाड मे ओई ओथ बी जा सको। अरू कठ ई नी जाणी चावो तो तीरथ जातरा रै मिस तो कठै ई जा सको।'

'जावरणी तो म्है जमलोक चावू बीरा परण चाया सू तो कोडो बी धूड मे साधियोडो नी लाद । ठण्डी सास छोडता थका सत्तू काका बोल्या।

तो म्है चालू काका, थोडा गढ म कण्डा पोचावरणा ओई'

'हां जा बीरा"

थोडी ताळ रूकर सत्तू काका लाखरण न पाछो हेलो दियो।

'अरे लाखरण।'

काइ काका ?" लाखरण थोडो आग निकळ चुको हो, उन सू ई बोल्यो।

'थोडो नजीक आ"

लाखरण थोडै अरणमरण भाव सू पाछो वळियो। सत्तू काका अ टळ मांय सू अक कोथली निकाळ र वी री मूण्डो खालियो अर पेमली बोर री गुठली जितरो अमल रो अक टळो लाखरण र हाथ म मेलता थका बोल्या' देख इरुके असल जडो मायो मगायो ओई"।

जीभ सू चाख'र लाखरण हुकारै म माथो हिलायो अर आखिया चटकाई। 'अरे हा म्है यू केतो क वो जेतसी अरजुरण वाळा माटी सिरदार री टोळी अजू म ई कोनी ?"

"हां सत्तू काका थारा समचार देरण तो म्है भूलग्यो। आज ई हरकारो ओथ सू पाछो आयो ओई। जेतसी गांव तो उभडग्यो अर रैवासिया री बावड कोनी। सुरण ओई क मुलतान री फौजा, गांव म टाळ'र निकळी ओई। पारणी रो करणो ओई क जेतसी रा सैग वासी घोटारू कानी गया'

'जतसी वाला म्है तो लूठा धाडेत, जारण हमकै वर्यान मोडो कराया। अर हां, जेतसी रो डीकरो ? बो को नाव ओइ वीं रो "

'पूनम' लागरण लपको तोडयो '

'हा वो तो मारवे रो बांको बान्र निकळियो'

"हव, काका । वो तो भडाम करतो वी मळेछ री गाटकी बाढनो ई निबर आयो

'तू हतो योघ ?"

'हवै काका, हूँ हतो। मोमजा तो पग पूजरण लागग्या काका। भरी समा में यू वघ करणो कोई प्रसखेल कोनी, भर वी मळेछ री लोघ न कवूतर दाई लुटती दस म्हैनै तो ऊवको ग्रावरण लागग्यो।'

"परण इ नै ठा किया पडा क ग्रेव मिन्दर में मळेछ ग्रोई ?"

'काका वो मुलतान सू धाडो पाड'र पाछो ग्रावतो। धोरां मे लस्कर न देखियो। वो घोर रो ग्रोलो लेय छिपग्यो। रात ग्रोघ सू दस बीस ऊँटा नै इया ग्रावता देख, वो वांर लार टुरग्यो"

"परण वी न ग्रेकल नै पोछो नी करणो हतो।"

'परण काका वो तो ग्रापार मल सारू ई वा र लार टुरियो।

'हव। म्हे तो यू ई कैवू मीरा, दुसमरण रो काई पतियारो ?'

'नै काका। वो तो वा सू वलीपो कर लियो ग्रर वारी सामी वाता रो भेद ले लियो

'पछै काई हियो ? सतू काका नाक मे ग्रेक चिपटी चढावतां थका बोल्या।

'वो पूनम ई तो यान मिन्दर ल्यायो हतो।'

'यू वळ ?'

'हवै। जदी तो वो वार नहो बठी हतो ग्रर वार चालतां ई सपाटै सू कर दी हो किलाण ग्रेक रो तो।'

"परण ग्रेक भेदू तो भाग निकळियो ?'

हव काका परण इव तो पूनम नै राव खुद दुसमरण रो भेद लेवरण सारू भेजियो ग्रोई।

सतू काका बोलरण सारू जबान खोली ग्रर वा री बाको फाटोडो ई रयग्यो, साम सू ठाकर जेतसी ग्रर वार पूठ दो सो मोट्यार तलवारा लियोडा ग्रा रया हा।

ज तनो माताजो री, सतसिगजो!"

'जै तनो माताजी री, ठाकर जेतसिगजी!"

ठाकर ग्रेक छिन रुक'र पूछ्यो— 'सरीर तो सोरो ग्रोई सतसिगजी ?'

'हव, ठाकरा आपरो पूरी किरपा ओई"

अमल री पोटली सू अेक डळो हथाळी माथै धर सत्तसिंगजी, ठाकर जेतसो रै जर कियो अर बड उमाव सू बोल्या—'ठाकरा, आपरै डीकर पूनम री पणो रवा सुणा, म्हान बी दरसण तो करावो कवरसा रा"

ठाकर जेनसी रो सीनो अक र तो गरब सू फूलग्यो पण वा रै नैणा में गुस्सो रग्यो। बीज ई पल बार घर सू मोळाई भळकण लागी हमार नो राव सू वाड़ा कर ढाक देदा पछ फुमरत सू मिळाला। आ के'र ठाकर जेतसो आग धग्या। वा लार पूरो काफलो आग बधग्यो।

ठाकरा न सामी आता देख'र पूनम घर पूनमी अेक सून डेरे मे लुकग्या। पूनमी बोली—

'कदा लग लुकिया रैसा ? कोई उपाव करो'

"काई उपाव करा"

मन पाछो वळण द्यो"

'कठ जासी तू ?"

'जासू काळो मूण्डो करण'

वो तो अेत ई क्यू नी करल ?"

"अेत तो पछै भळो थारो बी व्हैला"

'देण '। इव तो साग ई मरणो ओई"

'म्है मरण न त्यार कोनी'

'मरणो तो ओई। सुलतान री फौजा मारगा बवई पयी। तू बच र कठ जासो ?

"पर अेव मन ठाकर सा जीवण कोनी दयला। आछी घाडेता रै पल्ल पडी'

तू त्याणू री तय्यारी कर, म्है नगर मे घूम न की समचारा री जाणकारी ले र आवू'

म्है अेव अेकलो कयान ?"

'क्यू खावई कोई त रे ?'

'भी खा रे'

म्है वी रे काच न खा जासू"

पाछा गेता ई आवजो

'है

पूनम बार निसरग्यो।

※

(२२)

पूनम जद मोला वांनी पूगी तो ड्योढी मे ई किस्तूरी ऊभी ही। वा पीरायत न सानो करी। पूनम बेधडक मोला म घुसग्यो। वो किस्तूरी रै पाछै चालतौ गयौ। दो चार नाळा चढ र वो म्रेक माट मोल म पूगो। म्रो वो ई मौल हो जेन वी रो पलपोन राव सू मिळणो हियो। राव री सिंघासण खाली पड्यो हो। किस्तूरी, पूनम न म्रर दूज म्रासण माथै बैठाय म्रोम सू खिसकगी।

थोडी ताळ मे महाराणी म्रकनी सू म्रावती दीसी। पूनम ऊभो व्हेगो। महाराणी मुळकी। महाराणी साग वा री डावडी केसर ही। वा म्रोय ई रुकगी। महाराणी म्राग म्राय म्रापर सिंघासण ऊपर विराजगी म्रर पूनम न बठण री सांनी करी। पूनम सकतौ सकतौ बठौ।

'म्हे तो पूनमसिंगजी पधारग्या म्राप ?

'हुक्म, म्रन्नदाता'

'म्राप सू छानै ?'

'हुक्म, कोई म्रडो ई बात हतो

'ठाकरां नै तो भरोमो व्हीई क म्राप राव र खास काम ऊरां नजान हो। वे म्रापन सोधण सारू म्रब म्राया बी हा। खर या बतावो क फोडा तो ना पडिया मारग म ?

'नी म्रन्नदाता, म्रापरी पूरण किरपा हतो म्रर म्रापरी डावडो गुलाब रो साथ व्हेण सू घणो सुभीनो रयो।'

महाराणी म्रेक छिन साऊ मूण्डो फोर लियो।

बीत चोखो छारो व्हीई म्रन्नदाता म्हे वी न म्रागूच हीर करदी ही, पूगी क ना ?

[illegible], पण कोनी'

'नी पू[illegible] पूनम रो मूण्डो सतरग्यो।

'म्रा[illegible] प्यारळी खास डावडी

नै, न मिजाय मांखी

म्र[illegible] थोडो म्रचम्बो

म्रकलो नै

त वा न थोन दुख दियो ?'

हाँ, अन्नदाता'

'त वा सू रिसाणी कियो ?'

'हजूर कसूर -हेगो

'म्हैं बी वी न रिसाणी करदी वी न काढदी अंथ सू ।'

'काढदी ? क्यू हजूर ?'

म्यारळी डावडी हर आपन फोडा दिया

'नी हजूर, वा की फोडा नी घातिया । म्है खुद ई वी न '

'खर आवण द्यो । इब वी री बात छो डो'

मन खिमा करदो अन्नदाता'

खिमा तो गुलाब करीस जद हासी पूनमसिंगजी'

'अगर हजूर मन वी सू मिळवा द्यो नी तो मोमजी आतमा घणी कळपैली'

आतमा तो मोमजी बी कळपै, पण इब वी न केत सू ल्यावू ?

'क्यू ? तो काई ?'

पूनम अर महाराणी दोन्यू रा नैण अक पल सारू गळगळा हेगा ।

म्है वी न देस निकाळो '

दस निकाळो ?'

हाँ, वा ई तो म्यारळी सबसू भरोस री '

म्यारल मन म गुलाब सारू -- '

'की व्है । मनै इ सू की लेणो दणो नोनी

इत्त में ई राव पधारग्या । राव र आता ई महाराणी अर पूनम आप आपर आसण सू खडया हेगा । पूनम झुक'र राव न दोन्यू हाथ जोडया । मुळकता थका राव पूनम न बठण री इसारो कियो ।

'पू तो गुलाब सारी विगत सुणाय दी, पण पेरू कोई मतब री बात व्है तो म्है अबार पूछीस'

हुकम अन्नदाता ।' पूनम पेरू उठ'र हाथ जोडया अर झुकियो ।

'बठ । हा जोवणधन ! आप हमें पधारो । म्हैं पूनम सू '

'दासी समझै ई । अन्नदाता र पधारण तक रो र जुम्मो ही मोमजी था पच र महाराणी ओथ सू खिसकगी । राव, पूनम नै लारै आवण रो इसारो कर दूज गस सू अेक माळ उतरिया । पूनम वां लार भूवो गयो । घणां ई चक्कर लगावतो नीच ऊतर चढ़तो सेवट राव अेक मैंट मोल में लेग्या जेत नाव सुनियाड हो । इ मे भांत भांत री दारू अर केई मजूबी अर कीमती चीजां पडी ही । हीरा, पन्ना, मोती इत्याद अलमारै में चळपळाट करता ।

पूनम नै वठरा रौ इसारो कर, राव दारू री भ्रेक कूंपी लाया भर भ्रेक प्याली म ऊंधा'र पूनम र सामी करी, भ्रर प्यालो खुद र हाथ मे लो।

'जै मां तन्नो री'

'ग्रन्नदाता म्है '

'मां री परसादी भ्रोंई। इत्तो मैं नसो नी चढ । ल, त।'

'ज तन्नो माता री'

पूनम प्याली खाली करदी। राव बी प्याली खाली कर सिंघासरा माथ बठा।

'हां तो पूनम ! इब तू या बता क वी सेनापति सू काई त कर मायोई ?'

'ग्रन्नदाता ! गुलाब ग्रापन सारी बात नी बताई ?'

वा तो तैर सग बतादी, पण तू काई कवै ?'

'ग्रन्नदाता ! मौग्रजी मिजू राय तो भ्रोंई क सुलतान सू राजीपो कर लियो जावै '

'काई कव तू ? तू चेत मे तो भ्रोंई ?

'ग्रन्नदाता ! म्हैन चेतो भ्रोंई। सुलतान र इत्ता मोट लस्कर सू टक्कर लेवणो इत्तो सोरो नी भ्रोंई जित्तो ग्राप

पूनम ! तू तो सफा बादो निकळियो रे। जेतसी री डीकरो हैन मोळी बात करई।'

'ग्रन्नदाता ! ग्राप म्यारळ सू जादा समझो ग्रर सिमरथवान हो पण मन तो ई जुद्द में सिवाय बरबादी रै का निजर नी ग्रावई।'

तो यू कर, चूडो पैर नै यसाधरा रो चेलो बणजा।'

'यसोधरा, कुण ग्रन्नदाता ?

'यसोधरा वळ कुण ? वा देवदासी जको जुद्द रै नाव सू भू भू रोवई'

ग्र नदाता ! म्है जुद्द सू नी तो डरू नी घबराबू। ग्राप तो माइत भ्रों ग्रापर साम हो कऊ क म्है ग्रणगिणत धाड़ा पाड़ या भ्रोंई ग्रर ग्रणगिणत मिनखा रा प्राण लीधा।'

'इ सू ई तो ग्रेक मोटै धाड़ैत री परख ले रैयो ई।'

परख नो ग्रन्नदाता ! म्है बी री ताकत पूरी तोली भ्रोंई ग्रर ग्रापां री सामरथ रो लेखो बी लियो। म्है ग्रा जाणू क इत्ता मोट लस्कर सू सिरफ ग्रापणी फौज र बळ सू ई नी लड़यो जा सकै।

'लड़णो तो मुसक्ल कोनी। सवाल दुसमण नै पछाड़ण रो भ्रोंई।'

'दुसमण नै पछाडण सारू तो अन्नदाता दळ, बळ कळ अर छळ च्यारू जोइज।'

'तो तू अबै म्हान बी उपदेस देवण लागो ।'

नी अन्नदाता ! आ निसरमाई मोभ्रज मन म नी ग्रोंइ । म्है तो खुद सोचू क वयान दुसमण पाछो जाय अर आपा री कम सू कम हाण व्है ।'

इ सारू काई सोच्यो तू ?

ई सारू म्है ग्रेक बात सोचा ग्रोंई अ नदाता !'

बोल'

'म्है, सुलतान सू मिळ'र बी न ई बात सारू राजी करू क वो अप सू राजीपो कर राजी खुसी पाछो वळ जावै ।

ई पण ग्रेक वात ग्रोंई

हुकम अ नदाता !

पैला जोर अजमा'र देखला । जे आपा नै आ समभ म आइस क आपा बी न नी पछाड सका, तद दूजो उपाव सोचसा ।'

'पण अ नदाता '

'पण कांई नी । पला आपान आपण दळ अर बळ नै अजमावणो पडसी । जद ई सू काम नी चालै तद आपा नै अटकळ सू काम लणो पडसी । सो त्यारळी बात तो तीजोड़ी ग्रोंई । पण ग्रेक बात ग्रोंई कै जे त्यारळी अटकळ सू को काम नी बण तो ?

तद अन्नदाता छळ रो सा रो लेणो ई बच ।'

अज ताई तो म्हाटी कदई छळ सू काम नी लियो पण ई बार ज मीं त नो री आ इ मसा व्ही तो त्यारळी बात बी मानणी पडसी ।'

म्है तो अ नदाता सगळा रो भलाई सारू बात करू ई पयो ।'

वा तो म्है समभा हा तदी तो त्यारळी बात सुण रया ग्रोंई नी तो की सू इतरी बतल करां ?'

पणो खम्मा अन्नदाता ।'

त ग्रो त्यारळो खास मैंनाण ग्रों ई सू तू कैत ई बिना रोक टोक पा-जा सकला । पाथ जितो वित तर " मनाण सू मिल जासी अर म्है केत ई त्हक तू त्यारा सू मिळ सकैलो । त्यारळ सू तो छठ नी कर ?

अन्नदाता न भरासो नी म्है तो अबार ई गरम्न उतार सकैई

तो अब अक प्यालो फेरू 'हे जावे'

अन्नदाता रो हुकम टाळण रो मुतळब म्हे जाणू'

राव घर पूनम अक अक प्यालो फेरू पीवो ।

'आज थाळ मोग्रज साग ई जीमज

'अन्नदाता

सको क रो श्रोई ? तन बिसरको काम सू परो श्रो' ।'

सको तो नी हजूर पण म्हे श्रेक बेलो न श्रेकल न छोड र श्रायो हूं । उडीकतो हेमी ।

'तो साथ ले श्रातो'

अन्नदाता ! इत्तो भरोसो वी तो क्यांन करू ?'

क्यू ? परदेसी श्रोई काई ?'

'नी अन्नदाता ! म्यारळ गांव रो

'को कोनी । उडोकतो रसी । तू आज मोग्रज साग ई जीमलो ।'

'अन्नदाता रो हुकम श्राखिया ऊपर'

'पूनम !

'अन्नदाता !

सान्नजो बिया हेगो के कवारो ई है ?

नी अन्नदाता !

'घणो सुखो श्रोई

'क्यू अन्नदाता ?'

छोड, इ बात न । सुखी श्रोई तू घणो सुखी ।'

पूनम जद पाछो श्रायो । श्रेक पोर रात ढळगी ही । राव वी न घण मनब रो काम सू पियो ।

✻

(२३)

राव विजयराज, नगर सू पाच कोस आगै ई पच्छम, उत्तर अर दक्खण दिसावा म फौजा रा मोरचा लगा दिया। पच्छम मे तो चार पाच कोस माथै ई फौजा आमी सामी निजर आवती ही। हजार हजार सिपाइया री तीन टुकड़िया तीनू दिसावा मे तैनात ही। सबसू आग पैदल सिपाई हा। या मे कन्नम बर्छी अर तलवार धारी हा। वा लार घोड माथै असवार सिपाइया री टोळी ही, वा लारै ऊट अर सबसू लार हाथी हाथी यू तो गिणती रा ई हा पण राजा अर सेनापति सारू हाथी ई काम म लिया गया। घुडसवारां कन तलवारा बछिया अर भाला हा। ऊट सवारा कनै खासकर तीर तरकस हा। या रो काम हो खुद रै सिपाइया नै बचावणो अर दुसमण माथ वार करणो। यारा चलायोडा बाण सात आठ सौ हाथ री मार करता। अ ऊचा रहैता इ वास्त नीच आयोडा खुद र सिपाइया री रुखाळा व्हती अर दुसमण माथ वार व्हैतो। अ आग सू ई दुसमण न रोकण री खिमता राखता।

मसूद गजनवी री फौजा रै पूगण र पैला ई राव विजयराज पक्की अर पूरी मोर्चाबन्दी कर ली ही। तीन दिसावा मे मोर्चा लियोडा या तीन हजार सिपाइयां लार तीन हजार सिपाइया रो दळ पेरू तैनात हो। अ लोग घोरा री आड म इ ढग सू मोर्चा लियोडा हा क अ तो मसूद री फौजा न देख सकै पण मुसल निजर नी आवै।

सुल्तान बी आपरी मोर्चाबन्दी कर चुक्यो हो। वो कनै तकरीबन बीस हजार सिपाइया री फौज ही। मळेछ सिपाई बौत ई डोगा माता अर डरावणा हा। धरम रै नाव माथ जुद्द करणो ई अ जीवण रो पुन मानता। वां न मरण रो डर कोनी हो। राव विजराज दूज दिन खुद सुलतान सू टक्कर लेवणी चावता। पलह दिन तो वे यां रो रण विन्या देखणो चावता।

स्वामी श्री रात री दो पोर ढलियां पछ हमलो बोलण री मूरत उत्तम बतायो। इ माथ राव विजयराज बोल ई धोमाम अर मिठास सू अरज करी—

'स्वामी श्री! रात रा हमलो करणो अर वो बी सूतोड दुसमण माथ! ओ तो धरम जुद्द नी व्हैई।'

ई पर स्वामी श्री, पड़ूत्तर दवतां थका बोल्या "राजन! जुद्द मे नतिक अनतिक कोनी व्हिया करै। जुद्द रो ध्येय व्हिया करै वां न जीतणो। धरम री बात जुद्द र मामले मे सोभा ना देव। वू म धरम तो जद न रुप जै ई

कोनी देव। धरम किणी ग्रेक ग्रादमी जाति सम्प्रदाय क मुलक री सम्पत्त कोनी। पूरी मिनख जात मे ई री वासो है। ग्रर मिनख जात रो कल्याण जुद्द र जरिय नी प्रेम ग्रर ग्रहिंसा र जरिय हु सक। पण राजा री धरम हुई ग्रापर प्रजा, स सभ्यता ग्रर देवा रै स्थाना री रुखाळी करणी। जकी जीत वी री साचो है। राजन न देवी री वरदान है ग्रर स्वामो श्री रो जीत थारी है। जको पला वार करै वी री जात रो पासो पला सू हु जाया कर"

स्वामी श्री सू ग्रासीरवाद लेय राव विजयराज ग्रेका न म खुद नै चिन्तण--मथण मे उळभावण सारू मिदर र डागळ

(२४)

देवी रो मिन्दर खचाखच भर्योडो हो। सकड़ दिया हो। देवदासिया रो कुण्ड विजय निरत सारू त्यारी म ल वासी विजयव्रत सार ग्राभूषण राव विजयराज पूरी मोळावण ग्रर मार--मरण री खूस दख वारी जीत पक्की है।

चन्दरमा ठीक ऊपर सू ग्रर मनभावणी चादणी मदगलाई मे ग्राच हो। चान्दणी री सीतळता रा कान हुकम सुणण सारू गूजै हा। स्तुतिपाठ सू ग्राभो तक नी हो टाबर टीगर बी जुड नकल करण सारू जिद पकडियोडा दूध ग्राज परखीजण वालो हो'। बूढा लागोडो हो। वे लोग ग्रापरी जवानी री जोस दूणो कर हा।

"चाणचक सकड नगाडा ग्रेक साग ग्रुर ग्राभ न चीरता ग्रर हियो उजब मसाला परकोटा र बार भाक'र जुद्द

सरूप की अग्निबाण छोडिया गया। अग्निबाण दुसमण री दिसा म यूं लपकिया जाण सिकारी कुत्तो सिकार ने देखता ई सीधो वी माथ टूट पड। ग्रैंडो लागतो जाण आभ सू अगिन रा गोळा बरस रया क आभ सू तारा खिरिया। राव कुळदेवी तगाटराय रा दरसण कर स्वामी श्री सू आसीरवाद लियो अर हाथ मे नागी तलवार लियां मिन्दर सू बारै निकळिया। हजारा नर नारी तनोराय री जै, राव विजयराज री जै, स्वामी श्री री जै सू आभ न गूंजा दियो

नींद मे सूतोडा टाबर टींगर इत्याद चमक'र नींद सू जाग पडया। इजब सो हाको मचग्यो। अक बीज री बात सुणणी मुसकल व्हेगी। कैया बी घरक नगाडा मे तूती री उवज कुण सुणे?

सुलतान मैमूद गजनवी अचाणचक हुयै ई हमल सू बकरीजग्यो वो दुसमण ो इत्तो सावचेत नी जाणतो वी री फौज मे खळबळी मचगी। हजारा मसाला लाय र लपरतां दाई वा कानी लपकती निजर आवण लागी। तोपाण री गत तू आगे बधती मसाला अर जयदेवी तणो री धुनिया सू हडबडीज'र मैमूद रा सिपाई जको बी सत्तर हाथी आयो उठा'र लडण सारू त्यार व्हेग्या। कई लोग इधा भागण लागा। की तम्बूवा म छिपग्या पण तद तक माटी मिनदार खासा रेहा पूग चुका हा। ई बिळिया सुलतान मैमूद अर प्रधान सेनापति सला करता हा। वा र भेजियोडा भेदू अजू लग पाछा कोनी आया हा। सुलतान रो डरो पच्छम दिस म हो उत्तर अोर दक्खण कानी री टुकडिया में अजू कोई हुकम नी सुणाइजो अबै वा को दूत भेजणो बी मुसकल व्हेगो हो। वाराह अर लगांरी वी बाबड नी ही। वा र पूगण नी पूगण इत्याद री कोई खबर अजू सुलतान कन कोनी पूगी ही। यू वा रा भेजियोडा की गिणती रा सिपाई पूग चुका हा। पण वां न बी ई बात री वेगो कोनी हो क वारो राजा कित्ती फौज कद तक भेज देसी।

पल ई धावै मे विजयराज रा वीर सिपाई सुलतान रै मणगणत फोजिया नै सफायो कर दियो। राजपूता री तलवारां यू चालती जाण बाढती गाजर मूळ्यां न काट रया व्है। देखता ई देखतां लोई री तूतारिया जागा जागा सू छूटण लागी। वाणी रै तिरसा धरती माथ लोई री नाळिया ववणी सरू व्हेगी। अणगिण सोधा जमीं माथ धडाधड बिछगी। इन यवन की सम्मल चुका हा पण वार सम्मळतां सम्मळतां तको वारा पदल सिपाइयां री टुकडियां रो पूरो सफायो हे चुको हो। सूरज ऊगण म अजू घणी दर ही। तद तक सुलतान रा अक हजार सू बी जादा फोजी या तो मारया...

राव मि न्दर सू निकळ'र नागी तलवार हाथ म लियाँ नामी घोड ग्रमरावत माथ सवार ह गढ सू बार निकळ ग्राया। ग्रमरावत ग्रेडी लगावता पवन र वग गू विजयराज न ल उडयो। पलक झप वी पला नी घाडो वान जुद्ध र मदान म पौंचा दिया। राव न न्व भाटी सिपाइया री जोस बधग्यो। वे चौगण जोस सू दुसमण माथ भूख सर टाई टूट पडया। राव री सीनौ वारी बादुरी र गरम गू फूलग्यो। यवना री लाम्बी लाम्बी दाढ़िया वाळी धड सू कटियोडी मूडकिया ग्रडी लागती जाण सकड नारळ ग्रठी उठा बिखरियोडा पडया है। या मूड किया री ठारवा म घणी दुरगत ही। तीन सौ र ग्र दाजन भाटी सिपाई घायल हिया। या मे सू दा सौ तो थोडी ताळ सू ई मातभूमि री रखसा सारू प्राण त्याग दिया। प्राण त्यागता थका वा र चर ग्रर ग्राखिया म उजब चमक ग्रर सतोख हो। भाटिया रो ग्रेक सिरमौड सिरदार नरसिंग वेजा घायल हुयो। वो प्राण त्यागण सारू घडिया गिणतो हो। यवना रा दस मोटा ग्रफसरा मे सू चार रणखेत रया ग्रर बाकी रा छ बुरी तरिया सू घायल व्हियोडा मिरतू री मागत चुकावण मे तडफडावता हा। वा री सुध लेवण वाळो उठ नी तो कोई हो नी किणी न फुरसत ही। रण रा धूसा बाज्या। गढ मे लुगाया मगळगीत रा भमा-- वडा माड दिया। मगळगीता र समच पूरब दिस री कूख फाटी ग्रर सूरज रो देव रूप, धरती माथ उजास करण सारू प्रगटियो।

ग्राज ऊमा ग्रापरी चूदडी सायन यवना र लोई सू रगली ही। क पछ बीरी रानड लाई री रातड सू होड लवती ही। परभात री विळिया कागला री काव काव सरू हेगी। वारी काव काव ग्राज नित सू जादा ही। जाण वा री पूरी न्यात ग्राज ग्रठ ई जीमण सारू न्यूतीजियोडी ही। गिद्ध बी सौ सौ कोसा सू ग्रठ पूगग्या। जा धरती माथ चिडी रो पुतर बी निजर नी ग्रावतो उठ ग्राज पाखिया री इत्ती भीड देख ग्रचम्भो व्हेतो। जमीं माथ पडी लोथा न ग्र पाखी चीद चीद खावण लागा। ग्रेक ग्रेक लोथ मार्थ दस दस, बीस बीस कागला, गिद्ध इत्याद ढूकयोडा हा। लोथा री ग्रा दुरगत देख्या रोवणो ग्रावतो घिन ग्रावतो। लुगाया देखल तो ऊबका खाय मर।

जुद्ध रो मदान छिन छिन रग बदळतो रतो। सजीव देही ग्रेक छिन म माटी री ढिगली व्हे जाती। प्राणा रा पाखी हमार ग्रठै हा ग्रर पलक फुरकता ई ग्रदीठग्या। देही र पीजरै सू प्राणा रो पाखी जाण कद उड जाव ई री बेरो किणी न कोनी। मावी प्रबळ व्हे ग्रर ग्रादमी ग्रठ ग्रावता ई थोक। वीर वसत मनावण मे मस्त हा। रण रा धूमा ग्रर धमाल र समच प्राणा री बली देवण वाळा कोई सहीद, जूमार, परमवीर इत्याद हा तो कोई दुस्ट ग्रर मिनख जात

रा निशाण । जाण या लार कोई रोवणियो भी है कै नी । जाण कितरी रांड जीवण भर स्यापो घालियोड़ो करमा न कोसती रवैला । जाण कुणरा भर कितरा टाबर बाप कवण मारू जीवण भर तरसता ई रसी । जाण कितरी बना आपर वीरां र वा हाथा नै तरसती रैवली जका क ग्रायै बरस भाईदूज न टीको करावण सारू तरसता रता । जुद्द रो मद जाण किण न चढ पण वी रा फोडा पीढी दर पीढी वे लोग भुगत जका पेट री लाय बुझावण सारू आपर जीवण न ग्रडा दुस्टा रै हाथा सूप द । आ ग्रेक ग्रडो लाय है जकी ग्रेक घर म लग पण पास पडोस रा ग्रणगिणिया घरा न बाळ'र खाक कर द ।

जोधा ग्रापस मे जूझता हा । तलवारा री कट कट यू लागती जाण सिव र ताण्डव निरत मे ताळ लगा रयी है । उबळन लोई री गरमी सू सूरज री किरणा गरमीजगी । सूरज र रथ रा घोडा खुमरिया खाय तेज गत सू दौडण री हुटा करता पण सूरज सागडी वारी रासा काठी साम्भ राखी हो । जुद्द मे गरमी लावण सारू वो सीधो ग्रसमान र बीचोबीच ग्राय नै जाण थमग्यो । ज्यू ज्यू सूरज तपतो गयो वार प्रतिकार, धावो, बचाव, मार काट इत्याद म गरमी वापरगी । भाला, बरछिया, तीर, खाण्डा सग गुत्थमगुत्थ हियोडा जाण बाथिया ग्रा रया है । सूरज री गरमी सू तपियोडी धोरा धरती रा रागड धोरा जुद्द दखण री चावना सू बतूळिया बण रणखेत रै च्यारू मेर बिच्च ग्रागै लारै घूमर घालण लागा । पण लोई री गरमी र सामै तो सूरज री गरमी बो निबळी ई लाग । तिरसी ग्रर बळबळती रेत री तिरस बुझावण सारू, लोई री जाण कितरी पनाला धरती माथ छडकाव कर चुकी ही । पण जुगा सू तिरसी रेत री तिरस, लोई सू कद बुझण वाळी ही । रणभोम री विकट भरवी लपालप लोई रा खप्पर भर भर न डगळ डगळ पीवण लागी । फौजिया सू तो जादा गिणती मे कागला, गिद्द इत्याद भेळा व्हगा । कई तीरा तलवारा री फेट म ग्राय नै लोथो जीव सू हाथ धोया । लोई तो जमी चूस जाती ग्रर मांस नै चूट चूट खाता ग्रै पखेरू । कुत्ता रा ग्राज भाग जागा । हाडका न ताता म व्हाय वे निसग ग्रेकानै जाय बठता ग्रर कुटर कुटर कर न विसन पोखता। धरती माथ ग्रठी उठी बिखरयोडा मास रा लोथडा केई तो काळा पडग्या ग्रर केई काच है ज्यू चमकता । वीर राजपूत ग्रापर बळ ग्रर धीजै रो करतब दिखावण मे स की बिसराय, उळझ्योडा हा । वा न बेरो ई कोनी हो क वा र सरीर माथै कित्ता घाव व्हेगा है । जाण पूठ मे कित्ता तीर घुस्योडा सरीर न चाळणी कर नाख्यो है ? ग्रक कान कठई खिरग्यो है ग्रेक टाग लटकगी है क ग्रक ग्राख सू लोई री तूतारा छूट रयी है । वा ऊपर तो ग्रेक ई भूत सवार हो क सुलतान र सिपाइया न रगदाळणा ।

सूरज कितरी देर मूण्डो ढेर ऊभो रतो । वो वी प्रकृती र नियमा सू बंधियोडो हो । दिन रा हाडका दूखण लागा । थाको मादो दिन गुपचुप करतो चार

व्हे ज्यूं खिसकरण लागो । अठी सिंह्या री जोबन फूटरण लागो । आथूरण दिस मे मन्दी राची । अभमानी सूरज री मूण्डो पीळो पडरण लागो । वी री प्रकास अर तेज फाको पडग्यो । वी री मन गरमास निठग्यो । उबास्या खावतो खावतो वो अदीठग्यो अर उबास्या रे समच छोडियोड़ी वी री निसासा सूं होबाड प्रगटी ।

सूरज री सास म सुलतान री दक्खरण दिस री दो हजार सिपाइयां री टुकडी रो सफायो व्हे चुको हो । उत्तर दिस मे घोरा घरणा हा अर सुलतान री फौजा ऊपर चढाई माथ आयोडा ही नन्क भाटी सिपाई नीच ढाळ म हा । ईं वास्त अठै सुलतान री फौजा नक म रयी । भाटी राजपूता रा अक सो घोडा, चाळीस ऊंट अर पाच सौ सिपाई आपरा मू गा प्राण गमाय दुसमरण न अेक आगळ बी आग नी वधरण न्यो । इण मोरच माथ वीर बीसल जुभार व्हेगो । वी री माथो, धड सूं कटन घाड र मूण्ड मामी जा पडियो । वो माथ लार सूं कोई वार कियो हो । पण ऊतरस्या फोरला जात रो वी रो घोडो वी माथ न बीसल र हाथ म भला दियो । बिना माथ रै ई बीसल रो धड, बरोबर तलवार चलातो रैयो अर कम सूं कम बीस मळेछा रा माथा काट दिया । आ देख मळेछ सिपाइया रा होस उडग्या । अेड बीग सूं वो रो कदई पालो नी पडियो । पण धड रो गरमास खतम व्हेता ई धड जमीं माथ पडगो । इ र साग ई जूंभार बीसल वीरगत पाई । वी री घोडो बी उठ ई आपरा प्राण त्याग दिया । वी रो सरीर बी सैकड़ूं घावा सूं छुलग्यो हो ।

औ सारो जुद्द गढ सूं चार पाच कोस माथै चालतो रयो, ईं वास्त गढ में प्रजू लाय कोनी पूगी पण, उठ रा रुखवाळा तिणा में सूं भाक र सारो जुद्द देख्यो हो । वा री रगत उछाळा लवरण लागो । वा रा भुज फुडकरण लागा । रण मे जूंभरण सारू वा रो मन घडी घडी उछळतो, पण व बिना हुक्म उठ सूं नी हिलिया । व आपर बेलिया री बादुरी र बखाण सूं ई खुदरो जीव सोरो करण लागा । कोई गरब में मातो हो तो कोई विजोग मे कुरळावतो ।

सूरज ढळता ई अक बार जुद्द जोर पकडियो । सैंग दिन री कसर निकाळण सारू दोयूं कानी रा सिपाई उतावळा हा । पण भाटी ठेठ ताई सुलतान री फौज न दबायोडी राकी अर अ धारो हुता व्हेता वी न अेक डेढ कोस लार खिसका दी । अचाणचक भाटी सना रो बूकियो बाज्यो । बिगल सुण सुलतान री फौज सत्तर नीचै नाख जमी माथ गोडा ऊंधा मार आथूरण कानी मुडगी अर काना मे आगळिया घाल या लिल लिल लाहो करण लागी । सुलतान री फौज बी बिगल बजाय लडाई रोकण री घोसणा करी । नमाज पढ'र सुलतान री फौज दो सो गज लार खिसकगी अर उठ ई पडाव कियो ।

भाटी नगाडा र समचै जोर जोर सूं देवी तन्नो री असतुती करण लागा अर ज जकार सूं आभ नै गुंजायमान कर दियो ।

(२५)

अंधारै री काळी कांम्बळ ओढ रातराणी धरती न निरासा सूं ढांप दी। कोई नुवी विधवा रै विजोग म कजळीजियोडी रात री अंधारी सिसकारा भरती। आजरी रात, जाणै कित्ता निरदोस जीवां र हियां मे धुंवो उठावण वाळी ही। जाणै कित्ता चूड़ा आज टूटण वाळा हा। जाणै कित्ता टाबरां री निसकळंक हंसी न आज काळरो नागण डसण वाळी ही? कुण जाणै कुण सोच! क्यूं सोच?

दुख र दरियाव म डूबोड जीवण मे कदै कदास अजूबी बातां माथै बी हंसी आ जाया करै पण आ हंसी बिजळी दाईं अेक पळको कर पाछी अदीठ जाया कर। घोर अंधारी रात मे बळती मसाला री चानणो मन र काळस न लजावण में सिमरथ कोनी हो। जुगनू री चमक दाईं मसाला रो चिलको छिन भर री पुळक रो सनाण हो।

जुद्द में वीरगत पायोड़ा रजपूतां रा माथा हाडका लोथां अर सैनाणियां भेळीकर धान अक साथ भेळा किया अेक ई जागा धा री सास्तरां री विध अर राजसी मान सूं दाह सस्कार कियो गयो। राव विजयराज खुद पग उबराणा चितावां तक गया अर फूल माळावां चितावां ऊपर चढ़ाई। वे मून साधियोडा अेकान चुपचाप ऊभा हा। वां री चैरो बी बगत अक सत दाईं गम्भीर हो। जाणै व मन म आ ई सोच रया हा क जीवण निस्सार है। नैणां मे उजब गैराई अर पीड री वासो हो।

पवना र डेर मे सूनियाड ही। मौत रै पला री सूनियाड उठै छायोडी ही। स्यात हार री मातम मनावण री औ ई दस्तूर हो। पण सूनियाड रै घोरा दवता आपसरी मे लडता झगडता सियाळ या। हवा र तेज झोला सूं ममाला बुझ जावती। केरू बाळीजती केरू बुझती। पौरायत लकारा कर करन खुद रै सावचेत व्हैण री प्रमाण देवता। स्यात सूनियाड म खुदरी भी भागण सारू औ ई उपाव रयो।

अठी गढ मे विजयवाणी अर वीरतावां रा गाथा गीत उगेरता मढद लुगायां रा सुर, बायरिय र झोल सागै हिचकोला खावता। तारा अचम्ब सूं आंखियां फाड फाड सूरज र कयोडी कांणी रै साच री परख करण ढूकग्या। घायल सिपाइयां री उपचार सरू हेगो। सिपाइयां न साणढो दारू अर सवाद भरिया पकवान पुरसिया। दिन भर रा थाका चूका सिपाई नींद री सरण म वेगा ई पूगा। पण नींद मे बी कइयां रा हाथ अर पग चालता हा। जाणै वे सुपना में बी तलवारां चला रया है। कोई कोई तो नींद म सूतो बडबडावतो बी हो। दो चार सिपाई तो नींद मे ई बिछावणां सूं ऊठ'र घोडा माथै सवार हेगा। जतन सूं या लोगां न पाछा लाय पौढ़ाया।

रात चराई कर चुकी ही अर सारी बस्ती न नींद म गमावण साह अन्धार री जाळ फलावती गई। रात री दूजी पोर ही। पोरायत नींद सू मोरचो ल रया हा। हवा सू रणखेत म बिखरयोड़ी खोपड़ियां सू सीटियां बाजण लागती। पोरायता रा रूंगटा खड़ा व्है जाता। पण भो भगावण साह व जोर सू धारल दना खखारा करता अर पग पटकता। डरता डरता बी व फरज निभावण साह ग्रठी उठी दौड़ दौड़ावता। पण चितावा री धधकियोड़ा चिलगा या मजू बी हवा री फूंकणी सू चनगा हे जाती। गढ री पोळ वन्द व्हेगी ही।

*राव विजयराज स्वामी श्री सू मिळ'र वा र नहा ई सूयग्या पण वा न नींद क्या आवती? रणखेत वा र आख्या सामी नाचतो। जाण वां रा कितरा ई वीर सिरदार काम आ चुका हा। वां रा टाबर अर लुगाया जीवण भर वा न तरसता रवला। वा न धन, माल सिरोपाव मान सग दिया जा सक, पण जको जीव दुनिया सू जा चुको है वी री कमी कुण पूर सक? राव विचारा म अळूझग्या। पेट था र काना स पतडी रात वाळा सिसकियां टकरीजी। पण आन वे विचलित नी व्हिया। सिसकिया बधती गई। वां र कानां म र र न उवाजा पड़तो रयो जुद्द मे प्राप्त कियोड़ी जीत थिर कोनी। जुद्द कोई समस्या री निदान कोनी' पण राव, सा त भाव सू विचारां र मथण म लाग्योड़ा रया।

सुलतान र डेरे मे सुनियाड़ जरूर ही पण साजू सुलतान अर वी रा मोटा मोटा अफसर, सनापति इत्याद जागता हा। स्यान वे नत्री हुक्म री उडीक म हा। सुलतान हरेक तम्बू सम्भाळण वाळो हो। सिपाई आव री भूण्डी हार सू शर्मिन्दा हा पण वा री आतमविस्वास हाल कोनी हारयो। वां न पूरी तसल्ली ही क जीत न ई पाछा जावता।

सुलतान महमूद गजनवी साह आज बौत मोटी हार री दिन हो। इ ढग सू वीं री फौजा फोडीजला इ री वी न कलपना बी नी ही। वो मन म दुर्योग पणी रात गया तक सोचतो रयो। पण अड़ी छोटी मोटी हार सू वो घबरावण वाळो बो नी हो। वो जांणतो क सौ सोनार री व्है तो अेक लोवार री बी क्या कर, नित जीतण वाळो सुलतान कदई हार बी सक, अो बी रै वास्त अर नुवो तुजर्बो हो। इ वास्त वो सारी रणनीति माथ नुव सिर सू विचार करण म अळूझग्यो। वो बौत ई सजीदो, हीमती, धीरजवान अर मुसकिलां सू टक्कर लेवण वाळो हो। अो ई वी रो रात दिन रो काम हो। चोटां खायन बी जिन्दादिली सू जीवतो रवण रो गुर वीं नै याद हो। धीरज रो वी कन अखूट खजानो हो। वो सगती रो सरूप अर गराई में समदर समान हो। वीरता वी री सान ही। जुद्द रो मदान ई वी रो घर हो।

सुलतान र आवण री खबर सुणतां ई सग सिपाई अेक जागा भेळा व्हेगा। वो मोटा मोटा अफसरा सू ल र छोटै सू छोट सिपाई री तारीफ करी। जका जुद्द

में मारघा गया वा न जन्नत बखसण साल, अल्लानाना नैं दुवाम्रां का। वो घोड़े माथ बठो हो। फौजी लिबाम में वो बीन ई सू पार निजर प्रावतो। वो मग सिपाइयां सू सलामी ली। भरियोड़ गळ अर दजयोड़ी उवाज म वा बोलणो सरू कियो।

'गजनी रा बादुर मोटयारां। ग्राज रै जुद्ध म थारी बादुरी ग्रर हौसला री गाथा सुण'र मन बडो मोद ग्रायो है। मनै इ बात रो गरब है क था लोग हमेसा इस्लाम रो माथो ऊचो राखियो है ग्रर ताउमर ऊचो ई राखोला। थां सग ग्रर थारी सुलतान, इ वास्तै ई पदा व्हिया हो क ग्रापा मिळनै ग्रापारी तागत सू इस्लाम न फलावा। दुनिया र हर मुलक म इस्लाम ग्रर हजरत महमु ल्लेसलाम रो कुरान पाक गो ग्रर गजनी रो नाम ग्रापा न ऊचो करणो है, दुनिया म फलियोड़ी बुतपरस्ती न दफणावणी है। म्है ग्रर ग्राप सैंग मिळ र मजहब रो सबक सारी दुनिया न पढावा।

मल्ला रा ब न्दा! थार खून मे वा सुर्खी है क दुनिया रा तमाम मुलक थां सू धुज। थारै बाजूवा म वा तागत है क सर बी थासू खौफ खाव। थार कदमा री ग्राहट सू, धरती धूजै। थारी उवाज सू ग्रसमान फट जाव। थारी गुस्स भरी निजरां सू ग्रसमान रा चांद सितारा कांप। थारी बादुरी ग्रर हीमत री म्है दाद देवू। थांरी इमदाद सू ई म्हैं गजनी रो सुलतान बण्यो हूं ग्रर इस्लाम रो दायरो फला सकियो हूं। ग्रापा रो मजहब ग्रापा न ग्रा ई सिखाव कै ग्रापा जीवा तो इस्लाम सारू, मरा तो इस्लाम सारू। मन खुदा रो हुकम व्हियो है म्है था लोगा सू इमदाद लू ग्रर दुनिया सू बुतपरस्ती रो खातमो करूं।

इ सू ग्रापा न दो फायदा व्हैला। ग्रापां रो इस्लाम फलला ग्रर ग्रापा न दौलत बी मिळला। ग्राप तो सुण राखी है कै भाटियानगर म बमुमार दौलत है। काफिर लाग इ दौलत न बुतपरस्ती ग्रर ग्रय्यासी म बरबाद कर रया है। ग्रापा रो ग्रो फरज है क ग्रापा ग्रटा काफिरा न सबक देवा ग्रर सही मारग लावा। नाचीज भाटिया दारियत मानण सू मुकरग्या है। ग्रापां रो तागत उणां सू जादा इरादा नेक वा सू पाक है, ग्रापा रो ईमान ग्रर मजहब हुगीगत, म वासू ऊंचो है इ वास्त कामयाबी बी बेसक ग्रापां न ई मिललो।

ग्रब था साम दो ई रास्ता है, जि दगी या मौत। इण मजहब री लडाई म जका सहीद व्है जावला वा न खुदा जन्नत बखसैला। ग्रर जका जीवता बचला वा न म्है मालोमाल कर दूला। ग्रठ लूटियोड़ी दौलत म सू था नै इनाम दियो जावला जको थारी तनखा री ग्रामदनी र इलावा व्हैला। जन्नत रा तमाम ग्रमो इसरत थान ग्रठ ई नसीब व्हे जासी। बेहतासा दौलत रा खजाना ग्रठ

काफिरा कन भरया पडया है। वा नै लूगी मारो मर इस्लाम रो नाम ऊंचो उठावो।

आज री रात वाराह अर लगा बो आपा री इमदाद सारू फौजां अर रसद लेर अठ पौंचण वाळा ई है। आपा नै काफिरां नै सबक सिखावणो है। खुदा रा बंदा! म्हे था सू रुखसत हिया पैला अेक दफ फेरू खुदा रहीम, परवरदिगार सू मिनत करू' क वो था सबा मे वो जोस भरै क इस्लाम अर गजनी री आबरू सारू मर मिटो अर काफिरा नै नेस्तोनाबूद करण म कामयाबी हासल करो। काफिर बान्यिा थार अस रै वास्त हाजर है। वा री सबाब लूटो अर जग सारू नुवी तागत हासल करो। खुदा हाफिज।'

सुलतान री इ तकरीर सू यवन सिपाइया मे नुवो जोस पैदा हेग्यो। वे सुलतान री तारीफा करण लागा। घणकरा तो लुगाया सारू उतावळा हा। वे जोर जार सू हाका करण लागा—'हसीनावा नै बेपडदा करो। आज तो वार हाथा सू ई जाम पावाला। अस ई दुनिया में जनत है। दौलत अर दोसीजा बस दो ई चीजा खुदाब द अेक सिपाई री किसमत म दी है। बाकी सब बकवास है मौत तो अक दिन आवला ई, बी री कडो सोच? या रब! द अेक हूर पुरनूर, हा हा हा हा सुलतान सलामत।

(२६)

घायल सिपाइया सारू तवाइफा र नाच गाणै रो प्रब घ अक मोट पण्डाल में कियो गयो। गुलाम बणायोडी लुगाया अर मोट्यार छोरिया री हाट लागोडी ही। सुलतान या रै सरीर सू बी दौलत कमावणी जाणतो। अस्सो छोरिया भाटी राज री सींव मे घुसिया पछ सुलतान र सिपाइया र जुलमी हाथा में पडगी।

पला, तवाइफा रा नाच गाणा सरू हिया। दारू र नस में मस्त ग्यिोडा ईरानी, हसी अर यवन सिपाई मूण्ड सू भूण्डी भूण्डी गाळिया निकाळता हमी टट्ठा करता। वे तवाइफा अर गुलाम छोरिया कानी उजब इसारा करता। नाच गाणा ब द हिया अर गुलाम छोरिया अेक रात सारू लीलामी माथ चढगी।

'आ सोळा बरसा री हूर, दखण मे नूर भरिय सरीर री कुरान जडी पाक सिरफ पाँच दिरम। अेक रात रा सिरफ पाँच दिरम। बढ सो पाव।'

अक मोटो ताजो ईरानी सिपाई अेक छोरी न सामी खडी कर, बोली लगावण लागो। इ छोरी रो घाघरो जागा जागा सू लीर लीर व्हियोडो हो। ऊपरला अगा माथ अेक जीणो कपडो नाखियोडो। आ सरम र मार आखिया नीची करले' ही।

'सात दिरम' अेक सात फुट लाम्बो हब्सी सिपाई, मूछां रै बट देवता थकां बोल्यो।

आठ दिरम' अेक बीजो ईरानी सिपाई मण्टळ मे सू बटवो निकाळतां थकां बोल्यो। छोरी सरम सू जमी म गडती जावती। वा दोनूं हाथ छाती रै आडा कर लिया। वीं र नैणा सू टप टप आंसू टपकण लागा।

दस दिरम' अेक जल्लाद जैडी सूरत रो काळो भमो मिनख बोल्यो अर दस दिरम री बोली लगावणियै रै सामां फक'र वीं छोरी रो हाथ पकड लियो। छोरी बळी र बकरै दाई धग धग धूजण लागी। तम्बू म जोर रो ठहाको लागो। वो भसो वी छोरी नै घीस'र तम्बू सू बार लेयग्यो अर थोडो ओलो लेय र भूखे सेर दाई वी माथ लपकियो। छोरी रो कचूमर निकळग्यो अर वा अैडी बेहोस व्ही कै वीं न पाछो होस ई नी आयो। यूं कर अेक अेक छोरी रो अेक रात रो माल दस सू पन्दरा दिरम र बिच्च त हियो।

'हां, भाई जान ! आ है सोळा बरसा री अनार। खुदा र हाथां घडियोडी, फूलां री मैक सू जीं री चामडी अगेजी है, जीं रो अग अग उ माद सू भरियोडो है। मागणियै न नुवो सवाब देव। दारू सू जादा नसो देव। हिरणी सी आंख्यां वाळी, कचनार री कळी मरदानगी नै ललकारतो हुस्न हूरा नै सरमावतो रूप, अर '

अेक सिपाई उतावळी म बोल्यो 'पण दाम तो बोलो'

'दाम, अेक रात रा सिरफ पन्दरा दिरम। बढै सो पाव।'

बीस दिरम' होटा न चाटतो हुयो अेक बूढो सो सिपाई बोल्यो।

'हां सवाब लोटावो, खान साब' भीड म सू अेक मोट्यार मुळकतो सो बोल्यो।

बूढो मसखरी री उथेलो देवतो थको बोल्यो पचीस दिरम

अेक मोट्यार सीनो ठोक खडो हियो 'साठ दिरम खूब देव परवरदिगार

आ छोरी अकल्पम गोर रग अर ओपत डील री ही। सरीर री बणाघट देख आछा आछा रा मन पिघळ जाव। इ र अेक फाटोडो लगो परण न हो। ऊपरलो अग साव उघाडो। इ अग न उघाडो राखण सारू वो रा हाथ लारली कानी बाधियोडा हा। आ काठ री पूतळी दाई ऊभी ही। इ र चेर माथ किणी तर री रोस विसाद कै उमाव नी हो। निरपेख भाव सू भावी र हाथा बिकण सारू त्यार ऊभी ही।

भीड में सू अेक सिपाई आग आयो अर बोल्यो खान साब ! माल री परख करनै बोली लगावाला। हुकम है तो हाथ लगाय देखलू कै आ जीवती जागती

तसवीर है क काठ री पुतळी ? क्यू क इ धरती माथ ग्रैड़ी रूपाळी ग्रजू कोई निजर नी ग्राई ।

'हाँ, पण हाथ लगावण री कीमत है पाच दिरम ।'

मजूर है' ग्रा क र वो सिपाई ग्राग बध्यो ग्रर पांच दिरम बोली लगावण वाळ रै हाथा म थमाय दी हा । वो ग्रकर तो वीं छोरी रै च्यारू मर चक्कर लगायो ग्रर पछ वी र सामी ग्राय ऊभो हुगो । दोयू हाथा न ऊचा उठाय, वो वी री छातिया माथ धपसो भरियो । छोरी ग्रेक लात री मारी ग्रर वा जमीं माथ चित्ता पडग्यो । सारा लोग हिड हिड हसवा लागा । वो पाछो ऊठ र ज्यू ई वी र नडो ग्रावण लागो ग्रर बोली बोलणियो बिच्च पडग्यो । बोल्यो पांच दिरम खलास' ग्राव फेरू' ग्रा क र वो पाच दिरम वो री हथाळी माथ मेल दिया ।

हमक वो लार सू ग्रायो ग्रर दोयू हाथा सू माग जागा घावो कियो ग्रर वीं र गाल में ग्रापरा तीखा दात गाड दिया । हम बोलीदार नजीक ग्राय था न ग्रळगो करण लागो पण वो टस सू मस नो हुयो । छोरी र गाल सू लोई छिकण लागग्यो पण वा मूण्ड सू चू कारो तक नी कियो । बोलीदार वी सिपाई सू बाथिया ग्रायग्यो । भीड म धक्कम मुक्का व्हेण लागा ग्रर बडी मुसकल सू वी सिपाई न उठ सू ग्रळगो कियो ।

सम्पीत री बोली लगावणियो बूढ़ो सिपाई झगडो वढतो देख बोल्यो 'सो दिरम । बोली खतम करो सिरदार ।'

'सो दिरम ग्रेक, सो दिरम दो, सो दिरम ती '

वी रो इतरो कणो हुयो ग्रर वो मोट्यार कस र ग्रेक मुक्को बोलीदार र जबाड ऊपर धरियो । वी रा चार दात ग्रेक साग बार उछल पडघा ग्रर मूण्ड बार लोई दुळण लागो । दो सिपाई वी मोट्यार न पकड र लेगग्या । बूढ़ो सिपाई वी छोरी रा दाम चुकाय, तम्बू सू बार ले ग्रायो ।

थोडी दूर ग्रधारै म वो वी छोरी रो हाथ पकडिया ग्राग बधतो रयो । ग्रक धोरै रो ग्रालो लेय, वो वी छोरी न नीच बठण रो हुकम दियो । छोरी धोरा माथै सीधी चित्ता सूयगी ग्रर पलो बार बोली ल ग्राव वा ल इ र साग ई वा घाघरो फाड र फक दियो ।

बूढ़ो सिपाई माथ ऊपर सू फूल्हो खोल वी र सरीर माथ ग्रोढायो ग्रर ग्रठी उठा व्ह र हौळ सू बोल्यो 'चम्पाडी होस मे है क नी ?

'कुण चम्पाडी ?

'तू

'म्है चम्पाडो नी। म्है मो दिरम री राण्ड ल मोग मन, ल ग्राव खाव मन म्ना क'र वा वी बूढ री हाथ पकड ग्रापरे कानी खचियो। बूढो झटके सू हाथ छुटा'र ग्रेक थप्पड वीं र गाल म थें रमोद करदो। थप्पड लागता ई जाएा वीं रै बिजळी चमकगी। वा ऊठ र बैठी बोली 'काई चावई तू म्हासू ? मार न मास खावणा चाव ? तो ल मार नाख।'

बूढो वी रै माथ ऊपर हाथ फेर नै बोल्यो बेटी, म्है गज हूं गज।'

'तू कुण ग्रायो म्हारो बाप बण'र ? खरीदार ! खरीदयाडै माल न भोगण री सरदा नो तौ पछ क्यू गमाया सौ दिरम ?'

'चम्पाडो ! क्यू, भेजो ग्रजू ठिकाएा नी ग्राया म्यारळो ? पूनम नै तो ग्रोळख ई ?'

'पूनम ? कुण पूनम ? म्है तो सिरफ तन ग्रोळखू, लै खाव मनै, खाव। खाव मन खाव। मोग्रज घणो खटाव कोनो।'

हमक बूढो तणा र बिसरको झापट धरी।

'होस म ग्रावै कै नी ?'

'मार ल ताग्रजी मा न, मार ल, मूजा मोलिया !'

'चम्पाडो ! होस म ग्राव।' हमक बूढो थोडो पहक'र बोल्यो।

'होस में ई तो हू'

'नी ग्रोई तू होस मे

'तो तू नै ग्राव मन होस म, वठो ग्रायो बावडो बद।'

'चम्पाडो ! वो पूनम ताग्रज कारण मरग्यो।

'ठीक हियो मरग्यो तो पाप कटयो

म. ग्रागी' तन ग्राय र बूढो ऊठ सू व्हीर व्हेण लागो।

'काई कयो था ? पूनम

'हव, पूनम मरग्यो

'नी नी कूड मत बोलो वो नी मर सकई। वीं नै कोई नी मार सकै।'

मरगो मरगो मरगो। कैवू ई क पूनम मरग्यो वो जोर व्हे'र रायो।

हमक वा छोरी बूढ रा पग पकड लिया नी, झूठ मत बालो'

'झूठ नी, साव साच ग्रोई। वो कवळ-पूजा करी थारै खातर। ग्रर तू

म्है काई कियो ?'

कियो काई ? हमै करई थई'

तो म्है काई करू ?'

ग्रेथ सू माग जा

केत भागू ?'

'इया सू वीं सामल घोर नैं पार कर, श्राध कोस, पच्छम मे जाइजें । श्रोय श्रेक घोरी श्ररू श्रावला । वी र सार सार दो कोस न्खिगाद कानी जाइज । श्रोय श्रेक ढाणी श्रौई । श्रोय तन श्रेक लुगाई श्रर श्रेक साण्ड मिळ जासी । वी रै कन जाय पूछजे श्राधी रेती, श्राधी चून वा लुगाई जे पाछो पड्ूत्तर देव भौंव, झाडगो, ढेरा सून तो वी र साग साण्ड ऊपर बठ वा ले जाव श्रोय जाइज परी ।'

'पण पूनम ?'

'श्ररे पूनम री धा पला खुद नैं साम्भ'

पण पूनम बिना मौश्रज जीण गो सार ?'

'श्ररे हा वी सू बी मिळा दसू । जीवतो बठौई तांश्रजो बाप ।

साच ?'

'हा हवै, हमैं भाग श्रेय सू'

'वो वूढो श्रापरै ऊपरला गाबा उतार, चम्पा न पराया श्रर नकली दाढी रा पेसा नैं खाच श्रळगा किया । चम्पा मुळक दी । बूढो, चम्पा रा डोगा केसा न कतर न थोडा श्रोछा कर न्या श्रर वों री नक्ला दाढी मू छा लगाय चम्पा रो मिनखरूप बणा दियो । इनरै म ई श्रेक बीजो सिपाई श्रेक छोरी न लिया उठ पूगो । श्रा छोरी वी घणी फूटरी श्रर जोध जवान ही । ई र सरीर माथै कोई चीथरो ई नी हो । पग, दिन भर ऊभी रवणै र कारण सूजग्या हा । माथै र डीगा केसा सू श्रा श्रापरी रसकुपिया न ढाणी श्रर दो यू हाथा न साथळा र श्राडा देय लाज छिपावण री श्रणूती कोसित की ही । ई छोरी श्रर श्रक सिपाई नैं थोड श्राग सू श्राता देख बूढो पूछियो कुण' ?

गज रा घोड़ा सिपाई पड्ूत्तर दे उठै ई रुकग्यो ।

दोरा क सोरा ?' बूढो पाछो सवाल कियो ।

देवी र दारू मरद र लुगाई

'श्राव म्हारा भाई

वा सिपाई वी छोरी नैं लाय बूढ न सू पदी । बूढर ऊपरला गाबा वीं नैं पैराया

बूढो, वी न नाव, जात, ठिकाणा इत्याद पूछिया । पैला तो वा सक सू कीं बोली कोनी । पण जद बूढो वी न पूरी तसल्ली करादी कै वो वी नैं मुगत कराय, वी र घर पूगाय देसी तद वा जोर जोर सू रोवण ढूकगी । बूढो वी र मूण्डै श्राडो हाथ देय चुप करी श्रर माथै हाथ फर, बोल्यो बटी । हू गज हों श्रमल भाटी । तांश्रजो भाभा हों, दुसमण कोनी ।'

हम वा छोरी आंसू पूछ'र डुसका डुसक बि्योडी बोली 'हू घटियाळी रै पुनरसिंग री डोकरी ओंई।'

चुनरसिंग की रो?

वरजाग रो

अरे जद तो तू धाट आळी री भाणजी ओंई'

हवै

'वो की नाव ओंई त्यारळै मामे रो?'

सावतो'

'हां, हां, ओळख लियो। हमें याद आयो, सावतो। हां, वो अेक'र मुलतान री खजानो लूटियो हुतो। बौन बादर ओंई छोरी तायचो मामो।

छोरी यावयोडी ही, बोली म्है बठ जावू?'

हां हां अरे म्है तो तनै बैठवा रो बी कवणो भूलग्यो बेटी बूढ री आंख्या गळगळी व्हगी।

'हम फिकर मत कर बेटी, अेक सू दो व्हेगी। आ कै'र वो चम्पा कानी मूण्डो कर मुळकियो। चम्पा उठ सू ऊठ'र वी छोरी सू चिपतो आय बठगी। छोरी डर न थोडी लारै रिगसी। चम्पा वी रो हाथ पकड र खाची अर आपर खोळ म वी रो माथो पटक दियो। छोरी घबरा र उठण लागी। हम चम्पा हासी। बोली 'पारती, हम छुडावणो मुसकल ओंई।'

'कुण? च छोरी अचम्ब मे पडियोडी घूर घूर देखण लागी।

हूं

चम्पा

'सो चुप—'

बूढ़ो अेकानी मूण्डो कर मुळक दियो। ओ दूजोडो सिपाई, केसरी हो।

यू कर, इ अेक रात मे वे दो'यू अर बारा वेली, सोळा छोरियां न अेक रात रा दाम चुका र सुलतान र खेमै सू छुडाय लाया। या मे सू पाच सात री इज्जत लूटाज चुकी ही। की रै ई सावळा म सू लोई टपकतो तो की र ई गाला सू, की र ई पूरै सरीर माथ दाता सू कियोडा घाव हा तो की रै ई टट्टो रै मारग सू लोई बवतो। अेक छोरी तो इत्ती बुरी तरिया चिगदीजियोडी ही क बतांण नी कियो जा सक। गज री टोळो रा पाच आदमी घणी चुतराई सू यां छोरिया न दुसमणा र चुगळ सू छुडाई। इ सारू वा नै साम दाम दण्ड भेद सग अपणावणा पड्या। यां सग छोरिया न सिपाइया री पोसाकां परा र अेक [illegible] दो-गो र हिसाब सू

चढाय सुलतान रै डेरे सू बार निकाळण रौ उपाव बी गज, आपरी चुतराई अर हुसियारी सू सोच लियो । व लोग दखण दिसा र सबसू छेलै तम्बू में लाय लगादी । लाय लगाय सबसू तेज दौडण वाळी साण्ड माथ सवार है केसरी उठ सू आग भागो । मारो मारो पकडो पकडो करता थका छारिया अर वा पाच आदमिया सागै गज वा र लार भागो । वा र साग पाच सात ऊट सुलतान र सिपाइया रा बी न्हाटा अर दासी भौं तक पीछो कियो । मुलतान री फौजां र पडाव सू अ सग घणा अळगा आ पूगा हा पण केसरी री साण्ड न नी पकड सकिया । अर धोरै री आड लेय गज र हुकम सू वी रा बली अर छोरिया सुलतान रै सिपाइया रा पाच सात ऊटा अर वा र सवारा न घेर लिया । च्यारू मेर सू गिरयोडा सुलतान रा सिपाई हाथ ऊंचा कर सस्तर नाख दिया । गज वां रा कपडा बी उतरवा लिया अर साव मा जाया कर हुकम दियो कै वे प्राण साजा राकणी चाव तो चुपचाप उठै सू सुलतान र डेरे मे पूग जाव । वा लोगा रा ऊट बी गज खोस लिया । लाजा मरता व उठ सू पड भागा । छारिया जोर जोर सू हासण लागो । सुलतान रो पडाव अठ सू चार कोस अळगो हो । रात री छेली घडियां दोरा सास लेवती ही । असमान रा तारा, वा री कुबध्या निरख अक दूज सामी फूटिया काटण लागा । 

(२७)

दिनुग पला ई वा लोगा न नुवा मोर्चा लेणा हा । रात वाराह अर लगां री फौजा पौंच चुकी ही । इ सू बी यवना रो हौमलो बुल द अर जीतण रौ पक्को भरोसो हेगो ।

भाग फूटता ई जुद्द रा बाजा बाजग्या अर मारकाट रो यो ई सिलसिलो पाछो सरू न्हगो । घर मोर्चे ई पला दो घटा म दोयू कानी रा मिळा र हजार सिपाइया री बोटी बोटी कटगी । केई रा हाथ कटग्या । तो केई री टाग कटगी । मरण वाळा म आज जादा भाटी सिपाई हा । सुलतान री फौज म वाराहा अर लगा न लडता देख भाटिया न कोई अचूम्बो कोनी हियो । पण सुलतान री फौजा रो दबाव वा माथ वधग्यो हो वे डटन मुकाबलो करण री तेवड ली । भाटी सिरदार यू बी वाका वीर हा, अर हौमल हारणो तो सीख्याई कोनी । वाराहा अर लगा न सामै देख वारो जोस दुगणो न्हगो । वा मे काल सू आज जादा फुरती वापरगी अर हाथ जादा वेज चालणा सरू न्हेगा । तलवारा रा पळका बिजली दाई घडो घडी पडता । तलवारा कडकती बिजळी दाई भरटती । मोटा मोटा जोधा , धरतिया आयग्या । बाणा रो तो कोई हिसाब ई नी हो । आभ मे ज्यू बादळ सूरज र आडा आय वीरो प्रकास रोक्ल दिणी भात या

बाणा रा बादळ तावड न बिच्च इ रोक लियो। जमी मे जागा जागा खाडा र पुगण सू खाडा पडग्या हा। जाणै कोई माणस न मगेड न आधो धरती मे गाड न्यो व्है विणी भात अ खाडा दुसमण र आध सरीर न आपर सागै लय जमी में ऊण्डा गड जाता। केई कटियोडो मूडकिया धरती माथ बजाटो खावती तो केई कटयोडा हाथ फुडकना निजर आवता। असफडा रा ढेर लागग्या हा। केई केई घोडे र मूण्ड म चार चार पाँच पाच तलवारा फसियोडी हो तो केई र सरीरा मे पाच सोंत भाला अेक साग ई इण पार सू उण पार निकल्योडा हा। आज रो जुद्द खास करनै घोडा रै कमाल रो हो। घोडा केई दुसमणा री तलवारा आपर जबाडा में भाल'र खोसी हो। ई सू वारा मूण्डा चोरीजग्या पण घोडा लातां मारन बी दुसमणां न रगदोळता रया।

आज रै जुद्द म पाच हजार भाटी सिरदार वीरगत पाई। यां रै इलावा अेक हजार घोडा बी रणखत रैया। पाच सो ऊंट अर चार हाथी मारया गया। इत्ती मारी हाण व्हेना थका बी भाटिया र जोम अर हीमत मे कोई कुमी नो आई। अेक अर आगळ जमी साम्ह सो सो प्राण गया पण पावण्डो पाछो नी पडियो। बादुर भाटिया रा धड, माथा काटिया पाछ बी लडता रया। वारी बादुरी देख यवन सिपाई दाता हेठै आगळिया दबावणा सरू व्हेगा। केइ तो या न देख काला व्हेगा। केई सस्तर नाख यां साम झुकग्या अर केई या न जिन्न समझ मैदान छोड भागा। सुनतान खुद अैडो बादुरी पली बार देखी।

भाटी रणबाका सार दिन भूखा, तिरसा जलमभोम ताई जूझता रया। वारो एक ई धय हो अर अेक ई मत्तो वीर भोम री परम्परा रो व पूरो निभाव कियो। प्राणा री आउती देयन बी अ लोग जलमभोम री सस्कृति अर धरम न कायम राख्यो। अडो तो कोई भाटी सिरदार हो ई नी जको क बिना दुसमण न चोट पौंचाया ई मर ख्यो व्है। सग मुळकता मना सू जलमभोम माथ प्राण निछरावळ किया हा।

सिझ्या ढळण सू आधी पोर पैला सुनतान री फोजा तनोट नगर री सींव म घुसगी। नगर तो यू बी खालो ई पडयो हो पण डिडिया विछिडिया ढाता जिनावर नगर म खाली चक्कर लगावता हा। व पूछडो ऊचो कर अठी उठी फनाका लगावण लागा। वाराह, लगा अर यवन तीनू री फौजा अजू गढ सू आधो कोस अळगी ही। वारा बी सात हजार सिपाइ मारया जा चुका हा। वाराह अर लगा री फौजां आ जावण सू सुलतान खुद री फौजा बोत कम बटाइ। ढाइ हजार सू बी जादा सिपाई घायल अर अधमरिया व्हे चुका हा। सूलतान रा आध सू ज्यादा घोडा, ऊट अर बीजा जिनावर बळद खच्चर गधा इत्याद मारया जा

चुका हा। पाणी री टकियाँ पगाला इत्याद सग खाली व्हे चुकी ही। सिरफ गो हजार सिपाइया मारू अेक टक पीवण जोग गूगलो पांणी बचियो हो। इयाल इणी कारण सग रगत सू तिरस बुझावण सारू तडफा ताडता रया। ममूद न हाल भरोसो नी हो। आज रै जुद्द मे बीरो पलडो भारी रवता थका बी उणर मन में र र न कोई चोर बोलतो क माटिया न हरावणो इत्तो सोरो कोनी जित्तो क वो काल ताई समझतो हो।

खाली नगर री सींवा में घुसण मे ई बीरी आधी कटक री सफायो हुगो हो। हमैं पाणी री कुमी बी माखर दाई सामी आय ऊमी हुगी। पाणी बिना तो खाणो पकावणो बी सोरो कोनी हो। बी री फौज र सांम काचो मास खावण र इलावा कोई चारो कोनी रयो। अठ छेड़े पाच, दस कोस तक पांणी रो टोटो ई हो। तावडो सार दिन आकरो तपियो हो ई वास्त गरमी अर उमस बधगी ही। सरीर जाण तव माथ तळीजण लागो। होट खीरा दाई चटता अर कठ गरमी रै कारण फूलग्या। गळै म थूक गिटणो बो दोरो हेगो। अठ आयन वे बुरी तर सू फसग्या। ज्या मुसकिला अर दुबधावा न पार कर सुलतान अठ तक पूग्यो हो वे सारी पाणी री कुमी लार हळकी लागण लागी अठ ठरणो क पाछो मुडणो दोयू अेक सार हा। पण सुलतान पूरो जिद्दी हो। बजू री जागा यवन सिपाई अक अर कुरलो करन ई सतोख कर लियो। भूख अर तिरस सारी मरजादावा पाप पुन्न रो विचार अर नखरा न भाग मल दिया। गन सू बार ववत मळमूत र सूगल नाळ रो पाणी चसोडण सू बी तिरसा मरता सिपाई कोनी चूक्या। ऊटा रा पेट चीर वा मे सू पाणी निकाळन बी केई जणा तिरस बुझाई। या सारी अवखाया रै व्हेता थका सुलतान, आपर सिपाइया रो होसलो बधावतो रैयो। बी ो पूरो भरोसो हो क वो दूज दिन गढ ो फत कर लला। यू, वीन आपर अन्दाज सू कई गुणा जादा मुकाबलो करणो पडयो अर नुकसाण बी उठावणो पडियो। बी र केई सिपाइया रा हाथ तलवार चलावता अकडग्या हा। घायला री अजू गिणती बी नी व्हे सकी। नी वार उपचार रो ई पूरो साधन व्हे सकियो। वे पाणी पाणी करता हा, हार रा सारा लखण सामा निजर आवता थका बो, सुलतान, आखरी दाव अजमाया पला पाछो मुडण ो त्यार नी हो।

तनोट री घोरा धरती लोई पो र छक र्हियोडी ही। पण इ धरती माथ जीतरा पा रोपण सारू तपण वाळा यवन, बाराह अर लगा तिरस सू हारग्या। धरती माथ बिखरयोडो लोई बो नीच सू आच देवण लागो।

सठा मोर्चा माण्डण सारू सुलतान, सिपहसालार, लगा अर बाराहाँ रा सेनापतिया अर खुदरा मोटा अफसरा न सलाह री गरज सू मुन्र तम्बू मे बुलाया। वो दूज दिन हर हालत म गढ माथ कब्जो करणो चावतो इ सारू वो खुद हाथ

में सत्तर हजार भगवाणी करण सारू त्यार हो। प्रधान सेनापति जुद्द रै मैंदान रो नक्सो त्यार कर सुलतान सामैं पेस कियो। सबसू मोटी अबखाई गढ ने ताडण री ही। इ र एक ई पोळ ही, बाकी सैंग दिसावा मे खाई ही। सुलतान, लवार साती अफसरा न हुक्म दियो क व खाई पार करण सारू तजबीज कर। गढ रा किंवाड बी दस आगळ जाडे लोव सू त्यार कियोडा हा। यां किंवाडा नै खालण सारू दस हाथी मुकर हा। इत्त जाड लोव न काटणो तलवारा भाला अर बाणा रै बस रो रोग कोनी हो। किंवाड दो हथण' ऊचा अट डेड हाथी चवडा हा। पर कोटो बा अेकदम साधो हो। ई वास्तै वी री सई ऊचाई रो अन्दाजो लगावणो मुसकल रो काम नी हो। परकोटै री भीता सपाट ही। खाई डाक'र या भीता कन पौंच्या पछ बो भींता माथ चढणो। सारो कोनी हो। ऊभी भींता चढण अर डाकण सारू खास रूप सू त्यार कियाडा सिपाई हाथ झटक दिया। वान ई बात री कळपना बी नी ही क अेडी सीधी अर ऊची भीता बी चुणी जा सकै।

रात दो पोर ढळ चुकी ही। सुलतान खुद सेनापतियाँ न साथ लेय मौकै री मुआयनो कियो। अेकर तो वी री बी अकल चक्करीजगी। वो लोवारा सिलावटा अर खातिया न हुक्म दियो क किणी तरै सू भींता माथै चढण रो उपाव कर। सिलावटा ने हुक्म दियो क वे मोटा मोटा सिरिया ठोकण सारू निसरणी माथ चढ'र भीता फोड अर वा मे मजबूत सिरिया रोपै। या सिरिया रै आसरै रस्सा अर निसरणिया लम्का'र सिपाइ गढ री भींता ऊपर चढै। पण औ काम इत्तो मोटो अर मुसकिल हो क हजार कारीगर, अर मजूर मिळ'र बी रातोरात नी कर सकता। सबसू पली मुसीबत तो खाई ने पार करण री ही। इ वास्त सबसू पैला वे लोग इ री अटल्ल काढण में जुतग्या। दिनुगै तक बीस लाम्बी लाम्बी निसरणिया त्यार व्हेगी। अ निसरणिया खाइ रो चवडाइ स बी दस हाथ लाम्बी ही। या रो वजन इत्तो भारी व्हगो क पचास आदमिया बिना नी ऊच। पला तो व सोची क यां न खाई मे उतार द अर वी पर सू सिपाई खाई में उतर जाव अर खाई म सू ई निसरणिया गढ री भीता रै आसर ऊभी कर सिरिया ठोकण री काम सरू कियो जाव। पण अेक निसरणी आधी ऊपर धूड मे दबगी। टोग सोग व सवट खाई पार करण री जुगत जमाली। सुलतान कन समचार पूगता ई वो घणो राजी हुयो। आज पैलड़ी बार वीं रा सिपाई वीं र होटां ऊपर मुळकण देखी।

(२८)

आज भाटियां रो दिन बोत दोरो हो। भाग फूटता ई रण रा बाजा बाज उठ्या। घमासाण जुद्ध व्हियो। आज रै जुद्ध रो बखाण स्यात सजय बी करण मे चूक जातो। क्यू कै आज मोरचा जागा जागा खुलियोडा हा। पूरै नगर री गळी गळी में नगर माथ घरा र सूना डागळा माथ बी मोरचा मडग्या। गढ री मायली पठियाळा में तनात भाटी सिरदार अर भटियाणिया सुलतान री रात री सारी कारवाई न या तीणा मे सू झाक र देखता रया। इ वास्त वे रात रा ई भट्टियां चेतादी अर वा मे कद सू तेल अर पाणी उबळ उबळ र बार ढुळण लागग्यो। तीरन्दाज लोग बाणा रा नुका तीणा कर, वा न जर र घोळ मे भिजोय न सुखावणा सरू कर दिया हा।

गढ र बार भाटी फौज सिरफ दुसमण नै उळझायोडो राकण साह ई तनात ही। बाकी आज रो दिन तो गढ रै माय तनात भाटी सिरदारा अर भटयाणिया र करतब दखावण रो हो।

बारै, भाटी सिरदार दुसमण न खूब छका छका र फोडिया। कदई वारा घोडा घरा री छता माथै कूद र पोच जावता तो कदई उठ सू ई छळाग लगा'र दुसमण र घोड माथ कूद पडता। दुसमण न जागा जागा खाच म ले र मारचा। पैदल सिपाई तो अठ की काम रा ई नी हा क्यू क व तो सपाट सू दौडता घाडा र पगा हेटै ई किचरीज र चटणी बण जाता।

दुसमण, खाई पार कर गढ री भीता म सिरिया ठोकण री त्यारी म हो। निमरखिया र सार कोई पाच सो सिपाई खाइ नै पार कर परकोट री आगै लय सिरिया ठोकण में मदद करण लागा। नगर मे सू पदल सिपाई भाग भाग'र अठ पौंचणा सरू व्हिया। यू कर तकरीबन हजार, दो हजार सिपाइ परकोट र ओट थाय ऊभा। अो मोको ठीक देख गढ र मांय तनात लुगाया पनाळा में सू उबळती उबळती तेल अर पाणी फूढाणो सरू कियो। तडातड पनाळां नीच पडणो सरू व्हो। अर परकाट रै सा'र ऊभा सिपाई या अल्ला हे अल्ला करता करता धडाधड खाई मे कूदणा सरू व्हिया। केई पूरी तरिया बळग्या। कोई री माथो अर मूण्डो बळग्यो तो कोई रा हाथ पग। सग सुधबुध खोय भागणा सरू व्हिया। पण भाग न जावता कठ ? आग तो खाई ही सो धबाधब खाई मे कूदणा सरू व्हिया। अर उठ पडिया पडिया सिसकता रया। केई निसरणी सू खाई पार करण री मोवण लागा। इतर म ई ऊपर सू भाटा रा गोळा पडणा सरू व्हिया अर निसरणी समेत बी माथ ऊभोडा सिपाई खाई मे धडाम करता पडग्या। वा रा माथा फाटग्या अर लोई सू

सारी देही सिनान कर चुकी ही। खाई र दूजी कानी रा, इमदाद साह टुकड़िया तेज्या न खोड्या पण वा र पाछल फौरता ई या माथ माणा अर खाण्डा री बिरखा शरू व्हैगी। इण भांत आघ सू जाता तो घायल व्हे, धूड चाटण लागा। किणी रो मूण्डो खण्डे र साग जमीन म गडगी तो किणी रो हाथ हवा में उछळग्यो। की सिपाई मरता गुडता, लुकता छिपता जाय दरै म खबर करी। उठ सू इमदाद साह दूजी टुकड़ी दौड़ती भाई पण बी रा बी मस्तर काम नी आया। वे ज्यू ई सामा आता जरीली नोक वाळा तीर वा रै सीन म आय खुभता। सुलतान री फौज म तलकी मचग्यो। सुलतान रा सारा सुपना चूर हैगा। वो अेक तरिया सू चिन्तवगनो व्हैगो। वा घोड माथै सवार व्हे उण दिसा म जावण लागो। वी रा अफसर वी न समझायो, तो बी सुलतान नी मानियो। पण थोडो आग बधता ई सडासड आठ दस बाण वीं र सरीर सू अेक आगळ आगै सू निकळण लागा। अेक खाण्डो वी री पाग उडा लेयग्यो। सुलतान उलटा पगा पाछो डेरै माथै पूगो। सुलतान बाकी बचियोड़ो फौज री टुकड़िया न नगर में जोरदार धावै साह व्होर करदी। घोडा कम पडता दल वो खच्चर गधा री सवारी रै काम मे ले लिया। डेढ दो हजार भाटी सिपाई सार नगर म तलकी मचायोडा हा। सुलतान रा तीन हजार सिपाई पला सू ई वा सू मोरचो ले रया हा। हमैं दो हजार सिपाई अरू आय पूगा। अेक अेक भाटी सिरदार न चार चार यवन सिपाइया घेर लिया। जुद्द री सग मरजादावा त्याग, छळ कपट र जरिय जुद्द जीतण री होड लागगी।

दिन ढळण मे अेक पोर बाकी ही। पण तकरीबन सारा भाटी सिरदार वीरगत प्राप्त व्है चुका हा। इ वास्त दिन रै चानणै म ई जुद्द खतम व्है चुको हो। रीस भरचा यवन, नगर रा कारीगरी अर कोरणी कियोडा घरा न धुडावण लागा। सारा मिन्दरा री अेक अेक खण्डो अळगी कर मिन्दरा रा नाव निसाण मिटा न्यिा। पण नगर म मिन्दरा र नैडो, बणियोडा दो तीन ममोता न देख बान अचम्भो व्हियो।

सुलतान जाणतो हो क वो आज री जुद्द जीत न वा की हासल नी कर सकियो है। वी रो गढ नै आन रो आज फत करण रो मनसूबो माटी म मिळग्यो। यू बो आन र जुद्द मे सुलतान रा ई जादा सिपाई मा या गया हा। अब वी न खुदा पला रा अल्लाजी रो भरोसो ऊठग्यो। वो आछो तरिया जाणतो क अबू फतै मागी है। आसी रात गया वो नुवो उपाव सोचतो रैयो। आज वी नै कोइ बात रो सुधबुध नी ही। वो आज नी तो वजू ई कियो नी रोजो ई खोलियो हो। हा अेकाध घूट पाणी जरूर पियो हो। वो सारी रात पण्डाळ में घूमतो रयो अर सोचतो रयो। वा री आधी सू जादा सगती, रसद अर फौज खतम व्है चुकी ही अर अबू वी रै की

हाथै नी लागो। गढ जीतण सारू जित्ती तागत री दरकार ही वित्ती तागत तो वीं री पूरी फौज म वी नी ही। पण सुलतान कन वी रो होसलो अर दिमाग अ दो ई चीजां तो अणी अणमोल ही ज्यां र भरोसै वो पंजाब अर मुलतान फतै करिया अरब म सिक्को जमायो अर भाटियानगर न फतै करण रा सुपना देखतो हो। दिमाग रै बळ सू वो अक बात घडी घडी सोचण लागो क जुद्द तागत सू नी जुगत सू जीत्यो जावै। भाटियां सू तीन दिन रै जुद्द म वीं नै केई नुवा अनुभव व्हिया अर वो मन ई मन भाटिया री तागत, अटकळ अर जुगत री तारीफ करण लागो।

खाई मे पड्या सिपाइयां रा टमका अर सिसकारा वा र काना म र र न पडता पण वा न बचावण म वो लाचार हो। अठी उठी बिखरी पडी लासा नै भेळी कर वा न वी खाई म अेक कानी फक वी माथ अक अेक मुट्ठी धूड मैंग बचियोडा सिपाई अर सुलतान खुद नाखी। इ बिच्च वो अटकळ सोचतो र यो। आवण वाळ काल री उडीक म, वो आंख्या म ई रात काटनी।

(२९)

गढ र माय आसरी जुद्द री जोरदार त्यारिया सरू व्हेगी। दिन उगयो पण गढ री प्रोळ ब द ही। सुलतान री फौंजा घडी घडी रण रा बाजा बजावती रैयी पण बिरथा। सुलतान री फौजा फेरू खाई कानी बधण लागी पण अठी न आग बधतां वा माथै बाणा अर खाण्डा री बरखा हेणी सरू व्हेगी। सुलतान फौजा न हुक्म दियो कै वे बिरथा प्राण नी गमावै अर गढ री प्रोळ तोडण मारू तागत लगावै। कोई दो हजार सिपाई प्रोळ तोडण सारू पूरी तागत अजमाई पण सारी मनत अर अटकळ बेकार गई।

दोपारी ढळती निजर आवण लागी पण गढ री प्रोळ नी मुसकी। सेवट सुलतान सिलावटा अर दीगर कारीगरा न हुक्म दियो क व प्रोळ र नाचै री फरस तोड। इ काम म सिपाइया न इमदाद करण सारू हुक्म दियो गयो। सिलावटा मजू सिरफ दो हाथ फरस खोद सकिया। पण गढ र माय घुसण सारू मजू कोई मारग निजर नी आयो। सुलतान रा सिपाई, पाणी सारू त्राही त्राही मचानी। कीं सिपाई मसीता म नमाज पढण री नीत सू गया न वा नै, अेकाअक याद आयो क मसीत र माय कूवो हेणो जोइजै। ओ विचार आतां ई वे आपर अफसरां न बतायो। पाणी री सबा मैं उडीक ही। ई वास्त मसालो अर राछ लयनै दो तीन सो सिपाई अर सिलावटा पौंचग्या। व पूरी मसीत री फरस खोद नाख्यो पण कठ ई कूवो निजर नी आयो। सेवट खार खायोडा वे पाखती ऊभी अेक कोटडी न

धुड़ागी। अठ बात वेर री अनांग लां'दी ई सू वारी आसा बधी अर वे दस गज रै अड़ छेट जमी खोदणी सरू की। दो हाथ जमी खोदता ई तीन चार सिलावा निकळी। यां सिलावा माथै हथोड़ो मारता ई थोथ गूंजण लागी। सिपाई हड़क सू सिलावां खिसकावण लागा अर इ र समच ई जमी माय सूं रगड़ीण हवा, हळकी खवाज करती थकी बारै निसरी। इ हवा र लातां ई पाखती ऊभा सिपाई अलाद्धा खाय नीचे पड़णा सरू व्हिया अर पडताई सीधा जमलोक पूगग्या। यां न नीचे पड़ता देख दूजा सिपाई ज्यू ई यां कांनी आगै बधता अर वा री बी आई गत व्हैण लागी। दो-चार सिपाई नाक अर आंखियां आडा हाथ मल'र उठै सू ऊधा भागा पण वे बी घरणाटी खाय नीचे पड़ग्या। तीन सौ सू बधिक सिपाई अठै मर खूटा। सुलतान कन समचार पूगा तो वो अेकर तो घबराग्यो पण दूजै ई छिन बो सम्भळग्यो अर पूरी जाणकारी लेवण सारू अक मोटै अफसर न भेजियो।

दूजी कानी की सिपाई अेक दूजो कुवो खोद काढियो। हम यां लोगारी खुसी रो ठिकांणो नी रैयो। व दौड़िया दौड़िया गया अर टकियां डोल अर डोरी ले आया। गिड़गिड़ी लगा'र दो दो डोला सू पाणी सींच टकी भरणी सरू की। पण अेक टकी बी पूरी नी भर सकी जी क कुव रो पाणी खूटग्यो अर रेत आवण लागी।

पांणी पीवण सारू सिपाइयां री भीड़ लागगी। सगा न अक अेक चुल्लो पाणी, पीवण सारू देवण रो हुकम हुयो। पांणी री टकी आध घट में ई खाली व्हैगी। अर सिरफ दो हजार सिपाई पाणी पी सकिया ज्यां न क जोरदार तिरस लागोड़ी ही। वे दो चुल्ला बी मुसकिल सू पी सकिया। परथम बात तो या कै पांणी बोत खारो हो, दूजी बात या क पाणी हलक सू नीचे पट म पूगता इ अड़ो लागो क पेट रै मांय काई भाटो फसगो हो। जका लोग अेक अेक गुटको ई नियो हो वां रा बो पेट फूलणा सरू व्हैगा अर पट में जोर सू आंटा आवण लागा। वां सू ऊभो नी रयो जावै। व छटपटावणा सरू व्हिया। दो चार घटां म ई दो चार सो सिपाइयां रा प्रांण निकळग्या। वां लोगां न दस्तां अर उलटियां सरू व्हैगी। दिनुगै तक सात आठ सो सिपाई फौत व्हैग्या। पाणी सू मोनां व्हैण सू सिपाइयां म गळबळी मचगी।

वे लोग हुमै सुलतान न तग करणा सारू व्हिया क वो पाछो मुड़ जावै। व खायो बिना र सक पण बिना पाणी तो अक दिन बा नी रै सक। सुलतान यां न घणो ई समझावण री कोसीस करी पण व लोग जिद पकड़ग्या। सुलतान री पूरी कोसीसां लोभ अर इसलाम री दुवाई विरथा गई आधी फौज पाछा जावण सारू धूपरा बांध लिया।

साफ ढळता पूनम आपर साग तीन सो ऊटा माथ पाणी री पखाला भर ल्यायो अर यां ऊटा न गढ रै पिछवाडै कानी झुक दिया। पूनम आपर साग अेक अरू बेली न ले र सुलतान र डर कानी आयो। सुलतान रा सिपाई वी न बन्दी बणा र सेनापति कन पेस कियो। सेनापति यां दो'यू कानै घूर न देखियो।

'काई नाव है थारो ?' पूनम कानी आगळी उठावता थका सेनापति पूछियो।

'पूनम सिंग भाटो'

पूनमसिंग ?' सेनापति थोडो गौर सू देखियो।'

'थन म्है सायत पैला कठ ई देखियो है। याद नी आ रयो है' सेनापति थोडो दिमाग माथ जोर देय फेरू गौर सू पूनम कानी देखियो।

पूनम आपरी अन्टळ सू सनापति र दियोडो सनाण निकाळ'र साम कियो।

'हा याद आयो नजूमी पूनम।''

हुकम पूनम थोडो झुक'र बोल्यो।

''बोल! काई सजा दी जावै थन ?''

पला तो म्है तीन सो ऊटा ऊपर मीठ पाणी री पखालां भर ल्यायो हू, वा सू आपर तिरसा सिपाइया री तिरस बुझावो, पछ जो दण्ड देवोला, वो भुगतण न त्यार हू।'

कठै है पखाला ?'

'गढ र पिछवाड'

''व क्यू ल्यायो ? किण र वास्तै ल्यायो ?''

'हजूर ल्यायो तो आप सारू ई हो'

''ई बात री काई भरोसो क पाणो पीवण जोगो है ?''

हजूर!' हुकम फरमावो तो म्है खु' पी'र बताव्'

ठीक है थारो सनाण द, सो पखाला अठ मगाई जा सक

'पूनम दूजी अन्टळ सू अक दूजो सनाण काढ'र सेनापति र सामो कियो। सेनापति र इसार ऊपर अेक अफसर, तुरत पाच सो सिपाइयां नै साथ ले'र गयो। उठ जाय वो पूनम री सनाण बतायो। सनाण र समच तीन सो ऊट सुलतान रै डेरै कानी व्हीर व्हेगा। ई र बिच्च सेनापति,पूनम न आपरै तम्बू मे तेडायो। सेनापति री मरजीदान सिपाई पूनम रा दो'यू हाथ कमर र पूठ बाध र वी नै तम्बू में ल्यायो।

''हा तो पूनम! याद है वा खजान वाळी बात ? म्है जाणता थकां बी थन उठ सू आवण दियो_आ म्हारी भलमानसत हो। म्है चावतो तो "

'वो तो हजूर म्है आपै हाजर व्हियो हूं अर आप चावो तो मन ई सायत वो मार सको। पण ई पछ आप नै अठ की मिलणो नी।"

'क्यू ?'

इ वास्त क खजान री कूची म्हार कनै है,' पूनम आपरी पाग र अेक झटको दियो अर अेक कूची जमीन माथै पडगी। सेनापति वी न उठाय निरखण लागो।

आ चावी कठ री है ?'

'राव र खजान री

'तो इबै म्है थन कतल कर सका क्यू क चाबी तो म्हार हाथै लागगी।'

'म्है, म्हारो कोल पूरो कियो। इबै आप चावो ज्यू करो। म्हारो माथो हाजर है' आ कैं'र पूनम दोन्यू गोडा जमी माथै टेक'र बठग्यो अर गरदन झुकाली।

बोत चालाक दीसैं तू'

क्यू हजूर ?

'खजान रो ठिकाणो तो तू बतायो ई कोनी।'

'हजूर ! जद आपन मोम्रजी जान लेवण री ई उतावळ ओई तो पछै खजानै री लोभ छोडो। खजानो तो गढ र माय है अर उठै पौंचणो सुलतान रैं बस रो रोग कोनी।'

'क्यू ?

इ वास्त कै गढ नै तोडणो, इ भूखी तिरसी फौज र बस री बात कोनी'

'आ तो देखी जावैली'

सेनापति सिपाई न हुक्म दियो क पूनम न वा रै पाखती रैं अेक छोट तम्बू माय बडे पोरै मे राख्यो जाव। दूजोड़ै बन्दो नै मांय लावण री हुकम दियो।

काइ नांव है थारो ? वी रै कस नै थप्पड मारता थका सेनापति पूछ्यो।

रमजान

रमजान ?' सनापति अचम्बै सू बोल्यो।

हजूर'

तू इण काफर रै साथ कीकर आयो ?

हजूर ! म्है दोन्यू साथ धाडा मारिया करां। धाडै र हरेक माल मे म्हो दोन्यू रो बराबर हिस्सो व्हिया करै '

पण खजान री चाबी तो पूनम कनै है ?'

अेक चाबी म्हारै कन है, वो बी चाबी फ्रेंरदी।

ठिकाणो

ठिकांणो तो पूनम ई जाए
गढ म जावण री ओर कोई मारग ?
हैला
थन नी मालूम'
नी हजूर ! म्हे सुलतान री वाफि दो हूं अठ पली दफा आयो हूं '
'थन नी मालूम कै सुलतान री फौजा अठ जग लड रयी है ?
मालुम है इणी वास्त तो खजानो लूटण री सुभीतो है
हूं तो लूटियो नी खजानो ?

लूटण सारू कम सू कम हजार आदमी जोइजै। म्हार दळ मे सिरफ पचास आदमी है।'

'ठीक'

सनापति हुकम दियो कै इ नै अक दूज तम्बू म भारी पोर मे ब द राकियो जाव।

या सू निमट'र सेनापति सुलतान कन गयो। सारी हगीगत वी न बताई। सुलतान अर सनापति खासी ताळ सला मसवरा करता रया। इतर म तीन सो ऊटा री काफलो पाणी री पखाला ल र आय पूगो। सुलतान रै हुकम माफिक सेनापति यां तीन सो पखाळिया नै ब दी बणा लिया अर पखाला रो पाणी या लोगा न पाय तसल्ली करली क पाणी मीठो है। इ पछ तो पांणी पीवण सारू उठ भारी भीड लागगी। पाणी पिया सू सुलतान री फौज में अेक नु वो जोस बावडियो। सुलतान र हुकम रै माफिक पूनम अर रमजान न सुलतान र साम पेस किया गया। व दोयू गरदना झुका'र सुलतान न सिजदो कियो।

'पूनम अर रमजान ! म्हे सारी बात सुणली है। पण इण बात री कांई सबूत क अ चाबिया खजान री हैं ?

सबूत तो चाबियां लागिया सू ई हे सक सुलतान यामिनुद्दोला !' पूनम बोल्यो।

पण इ मे रात्र री चाल बी हे सक।

सुलतान न म्हारो यकीन नी व्है तो म्हार कन सू कुरान उठवा सक' अबक रमजान बोल्यो।

यो सब ठीक है पण म्हे खजानो चावू'

खजानो है, अर भरपूर है, सुलतान ! अेक बात आपन बी मानणी पडला क अेक दुसमण दूज दुसमण साथ दगो कर सकै पण अेक लुटेरो दूजै लुटेर साग धोखो नी कर सक, रमजान बोल्यो।

'काई मुतळब थारो ?' सुलतान थोडो कडक'र बोल्यो ।

मुतळब ओ हजूर के ओक मुसलमान दूजै मुसलमान साथै दगो नी कर सक ।'

'पण काफिर ?'

'काफिरा रो भरोसो तो म्हे बी नी करू आलमपनाह, पण '

'पण काई ?'

'खजान रो ठिकांणो अर मारग ईं काफिर न ई मालुम है ।'

सुलतान, पूनम न बार लेजावण रो हुकम दियो । सिपाई पूनम नै बार लयग्यो । हम सुलतान रमजान नै पूछियो—

'थारी बात रो यकीन करलू ?'

'आलमपनाह ! यकीन माथ दुनिया टिकी है । म्हे आज तक इ काफिर रो भरोसो करतो आयो हूं अर ओ अजताई मन कठ ई दगो नी दियो । दरअसल ओ काफिर कोनी । ओ ओक मुसलमानी रै पेट सू ई जलमियो है ।'

'फेरू बी '

राव, गढ मांय सू भाग चुको है अर गढ अब खाली पडयो है । खजान री रखाळी खातर की सिपाई गढ मे है ।'

'सबूत !

'म्हे खुद राव सू मिळ'र पछ अठी नै आया हा ।'

'वो कठू ?

खजानो लूटण सारू'

'अब या रो काई विचार है ?'

'चोथी पांतो में बात तै ह्वे सकै ।'

पण म्हारी इत्ती मोटी फौज र सांम या खजानो लूट'र ले जा सकोला ?'

'या मूवत म्हा म है'

'तो आज आत्मादस व्हे जावै ।'

सुलतान, सेनापति नै हुकम दियो क वो दो हजार सिपाइयां न ले'र पूनम अर रमजान साग खुद जावै अर गढ़ रै मांय पूग'र ओळ खोल द । सुलतांन खजान री दोनू चाबियां खुद रै कब्जे मे लेली ।

रात आधी ढळ चुकी ही । गढ़ मांय आज ममालां चेतन नी व्ही । सनापति, पूनम अर रमजान नै साथ ले'र पूनम रै बतायोड़ मारग कांनी आगै बधण लागो । वां रै पाछ दो हजार सिपाई सस्तर लियोड़ा ऊंटां माथै चाल रया हा । सुरग रै मूण्ड कन पूग'र, पूनम, सेनापति नै कयो क ई सांमल धोर नै हटावो जावै । सेनापति

र हुक्म सू पचास सिपाई तुरत धोरो साफ करण मे लागग्या । थोडी ताळ में धोरो साफ हेग्यो । हम जमी माथै पडी तीन सिलावा नै खिमकाई तो सुरग में उतरण सारू पागोतिया निजर आया । सेनापति दो सिपाइया न हुक्म दियो क वे मसाला लेय मायन उतर अर आग रो मारग देख'र इतला कर । दो सिपाई डरता डरता सुरग र माय उतरिया । अ दस कदम ई आगै बधिया अर हडबडा र पाछा आयग्या । या री मसाला बुझगो हो ।

'काई बात है ? सेनापति कडक'र पूछियो ।
हजूर आग तो कोई मारग नी सूझ ।'
मसाला पाछो जगावो अर मालुम करो ।'

सिपाई बापडा मसाला चेतन कर, पाछा सुरग म उतरिया । इ बार अ बीस पचीस पावण्टा आग गया अर या न चार फाटा निजर आया । अ दोयू पला तो अेक मारग कानी ई आग बधिया पण आग जाता फेरू तीन मारग फटता । हमैं अ पाछो मुडण रो मतो कियो बडी मुसकिल सू अ पाछा बार निक्ळ'र सेनापति न हगीगत बताई ।

हम सेनापति खुद दस सिपाइयाँ न साथ लेय सुरग में उतरियो । आग जाता ई,बी न चार मारग फाटता दीस्या । वो चार सिपाइया न साथ लेय अेक मारग कानी खुद गयो अर लारला छवा न दो-दो र हिसाब सू लारला तीन मारगा में बधण रो हुकम दियो । सेनापति पचासेक पावण्डा आग बधाया अर वी न तीन फाटा दीस्या । वो, दो सिपाइया न खुद र साथ लिया अर लारला दो माय सू अेक अेक न दूजा दो मारगा कानी आगै बधण रो हुकम दियो । थोडी ताळ सग सिपाई मांय न अठी उठी फिरता रया । पण वा नै आग जावण रो कठई मारग कोनी लाद्यो । उठै तो मारग माय सू मारग निक्ळता अर सिपाई घूम फिर न साग आगा पाछो पूग जावतो । आ ई गत सेनापति री व्हो । सेवट वो कायो व्हेग्यो अर मुसकिल सू पाछो बार आयो । लारला आठ सिपाइया री बावड नी लागी । हमैं सेनापति, पूनम न कयो क बो असलो मारग बताव । पूनम कयो क मावनै जठ बी फाटो आव उठ डाव हाथ र फाट म घुस जावो । सेनापति हम सिपाइया न हुक्म दियो कै वे ऊँटा न छोड, सग इ सुरग म अेक अेक कर उतर । जद अक हजार सिपाई सुरग में उतर चुका तद सेनापति, पूनम अर रमजान न साथ ले र खुद सुरग मे उतरग्यो । दो सिपाई यां र आग अर दो लार नागी तलवारा लियोडा चालता हा । या लार, लारला अेक हजार सिपाइया म सू की ऊँटां री रुखाळी सारू सुरग र बार ई रुकग्या अर बाकी सग सुरग में उतरग्या । पूनम या न सुरग में खूब अठा सू उठी घुमावतो रयो । मसाला घणकरी बुझ चुकी ही । आग जावता सुरग रो मूण्डो छोटो हेगो अर ऊवाई बी

कम व्हेगी। इ साल अब दो सिपाई अेक सागे, आग बध सकता अर वे बी बैठ र। पण मुरग री मारग लगोलग ऊपर कानी ले जावतो। इ सू सेनापति न भरोसो हेगो क वो गढ म ऊपर कानी चढ रयो है। सेनापति पाछ मुड'र जोयो तो वी न दस-पन्दरा सिपाई आवता निजर आया। पाच सात आगे जावता हा। हमैं घणी साकडी जागा आवगी अर अक मिनख ई निकळ सकतो अर वो बी सूय न हाथा र बळ पर। आग मारग खुलास रो हो अो अठ सू साफ निजर आवतो। नागी तलवारा वाळा सिपाई तलवारां म्याना में घाल'र हाथा रे बळ पर अेक अेक कर नै आगे रगता थका बध्या अर आग जा'र ऊभा व्हेगा। इ बिच्चै आगलै सिपाई री मसाल बुझगी रग र जावण री मारग दस पन्दरा पावण्डा रो हो, इ वास्तै लारै सू मसाला भिलावणी बी दोरी ही। लार रयोडा पाच सात सिपाइया म सू तीन र हाथा में मसाला ही पण अै बी म दो व्हियोडी ही। या र चानणै सू मारग दीसतो जरूर हो। पूनम बोल्यो क वी रा हाथ खालद तो वो लगती मसाल अेक हाथ म ले'र अेक हाथ सू रंगतो आगै बध सक। सेनापति, पूनम अर रमजान रा हाथ खालण रो हुकम दियो। आग गयोडा सिपाइया न वो सावचेत कर दिया। पूनम अेक हाथ म लागती मसाल ले र अेक हाथ सू रगडीजतो इ खाचै न पार कर लियो। हम वो लार सेनापति बो रैंग न आयग्यो अर वी लार रमजान। अठ पूगता ई पूनम अर रमजान अक साथै मसाला फूक दे र बुझाय दी। लार रयाडी अक मसाल बी गुल व्हे चुकी ही। रमजान अर पूनम, सेनापति अर आग रा दो सिपाइया र लाता री मचकाय अन्धार में आग भागग्या। सेनापति अर सिपाई उठ जमी माथै पडग्या हा। पाछा ऊठ र सम्भळै वी पला तो पूनम अर रमजान घणा आग पूग चुका हा। आगै जा र व थान हेलो मारियो। अ वां री उवाज रो पीछो करता, सम्भळ सम्भळ'र अन्धारै मे आगै बधता अर आपस म टकरीजता। यू करता अै आपस में ई अेक दूज न मारणा सरू व्हेगा। फेरू बोली सू ओळख न पछतावता।

सेनापति अर घणकरा सिपाई रात भर, ई भूलभुलइया में चकरी चढियोडा रया। वा रा हलक सूखग्या। अन्धार मे घणी रगडा खाय वां रा हाथ, पग अर मूण्डा छुलग्या। यां म सू कई चिलको देख वीं कानी लपकता पण आग जाय भीत सू मथीडो खा जावता। सेनापति मन ई मन पछतावण लागो क जे वो पूनम सू सौदो त कर लतो तो वी नै फोडा नी भुगतना पडता। हम वो साव अेकलो रयग्यो हो। वो जोर जोर सू पुकारा करण लागो अर अल्ला र नांव री दुवाया देवण लागो पण उठै वीं री कुण सुणतो ? सुलतान रा सौ सवा सौ सिपाई दोरा सोरा गढ में पूग सकिया पण अठ पूगता ई मोटो सिरदार वां न ठिकाणै पूगाय दिया। बाकी रा म केई तो सुरग में ई पडिया पडिया टसकता हा। घणकरा सिपाई तो सुरग सू

निकळ'र खाई में फसग्या। सुरग माय सूं अेक मारग खाई म ले जावतो हो। दस बीस सिपाई पाछा सुरग र मूण्डै तक पूग सकिया। पण अठै दो सिलावां पाछी धरीजगी ही अर बिच्चै री अेक सिला री ठौड निकळण रो मारग हो। बीचली सिला कम चवडी ही। इत्ती साकडी जागा माय सूं ऱ्हेर बार निकळणो बौत दोरो हो। अ लोग माय सूं घणा ई हेला पाडिया पण अठ या री कुण सुणतो? ऊटा री रुखाळ सारू बार रैयोडा सिपाइया नै तो पूनम रा आदमी कदका बन्दी बणाय चुका हा अर ऊटा समेत वा न उठ सूं आपर सागै लेयग्या। ❁

(३०)

आमै सामै री लडाई म भाटी हार चुका हा। ई वास्तै वानै गढ खाली करणो पडियो। सुरग र मारग तीन हजार भाटी सिरदार गढ माय सूं बार निकळग्या। स्वामी श्री, देवी रो मिन्दर छोडण न राजी नी व्हिया। राव अर दूजा सिरदार वानै घणा ई मनाया पण स्वामी श्री रो अेक ई पडूत्तर हो— मनै मा री इच्छा नी मिळी। मा री रुखाळी सारू म्हारा प्राण जाव तो म्हारो जीवण किरताथ है। पण मनै भरोसो है कै दुसमण रा पग इ दिसा मे नी बध पावैला।"

गढ सूनो व्हेग्यो। गढ में मा र मिन्दर री रुखाळी सारू अेक हजार सिपाई लार रया। इत्त मोट गढ म एक हजार सिपाई हीग री गरज बी नी साज सक हा। पण मड किवाड भाटी कदेई रण सूं पूठ देखावणो नो सीखिया। राव, अेक अेक हजार री तीन टुकडिया बणाई अर तीन दिसावा मे सुलतान नै पाछ सूं घेरण रो निस्च कियो।

मुलतान री आधी फौज सुलतान नै छोड पाछी व्हीर व्हेगी। बीरा चार मोटा अफसर सुलतान रो हुकम मानण सूं नटग्या, अर अै ई लोग दूजा सिपाइया नै पाछा जावण सारू त्यार किया हा। सुलतान रा घणकरा सिपाई तो मारया जा चुका हा की सिपाई सेनापति अर पूनम साग खजान री खोज मे जा चुका हा। पाछा मुडण वाळा सिपाइया री सबसू मोटी सिकायत रोटी पाणी री ही। घूडो उडण सूं रोटिया अर साग में किडकिड आवती। लारला दो दिनां सूं या लोगां नै, नी तो मास मिळियो नी धापमो पाणी। सुलतान री सारी कोसीसां बेकार व्हेगी। चार-पांच हजार सिपाइया र व्हीर हे जाणै सूं सुलतान री खुदरी फौज रा सिरफ तीन हजार सिपाई लारै रयग्या। या रै इलावा डेढ दो हजार सिपाई घायल अर लगा रा हा।

रात री पनी पौर निकळग्यो पण सनापति पाछो ना ग्रायो तो सुलतान गर सोच में डूबग्यो। वा ग्रापरा की मरासैन्द सिपाइया न सनापति नै जो ण मारू भजिया पण वा न गया नै बो घणो दर व्है चुको हो सुलतान हमें घणो सोच में पड़ग्यो। ग्रेरर तो बो खुद घाड माय वठ'र जावण न त्यार ह्है पण वीं गै निजू सलाहकार, वीं न समझा बुझा र राखियो। ग्रठी प्रकृति बो सुलतान सू वैर काडण मार त्यार व्हेगी। पच्छम सू ग्रांधिया उडण लागी ग्रर वी रै साग घूडो तम्बुवा में ग्रावण लागो। तज तोफाण र कारण कई तम्बुवा रा खूटा उखडग्या कनाता फाटगी ग्रर तम्बू फाटग्या। घोर ग्रन्धारो हेगो। ममाला कद की बुझ चुकी ही। ग्रांखिया खोलता ई व घूड सू बूरीज जावती।

भाटी इ मोक रो फायदो उठायो ग्रर व सुलतान र डर माथ धावो बोल दियो। पण ग्रठो ग्र धा ो हो कै हाथ सू हाथ नी सूझतो। इ वास्त भाटा सिरदार बौत सम्भळ सम्भळ र ग्राग बधिया। हडबडाट म यवन सिपाई ग्रठा उठा भागण लागा। सुलतान इ नु वी ग्राफत सू घबराग्यो पण वो हीमत नी हारी। वो फौज न हुक्म दियो क मग गढ री दिसा म भाग'र मोर्चा जमा लेव। सुलतान र हुक्म दिया पला ई निरा यवन सिपाई गढ कानी भाग चुका हा क्यू क वी दिसा म भागण म ग्री ताफाण वी वा री मदद करतो ग्रर लार सू घूटो ग्रावण र कारण थोडी-थोडी ताळ सू ग्रांखिया खाल र देख्यो जा सकतो।

इ बिचै भाटा सिरदार सुलतान रै खजान री पटिया तक पूग चुका हा। उठ जम'र तलवारा कटकी पण यवन सिपाई घणी ताळ नी टिक सकिया। सुलतान थोडी ताळ पला सुद बी गढ काना भाग चुको हो।

पण पूनम रै साग गयोडा सिपाइया माय मू काई पचासेक यवन सिपाई, मल पांणी री निकासी रै मारग सू गढ म घुसग्या। व सामा ताळ ग्रठा उठी फिरता रया। गढ मायला हजार भाटी सिरदार जाणता हा कै सुलतान रा बाप बी गढ न नी तोड सकै इ वास्त व निसग दारू पी न सूयग्या। दस बीस सिपाइ निगराणी सारू जरूर जागता हा।

गढ में घुसयाडा ग्र पचास यवन सिपाई चार पाँच भाटा सिरदारा माथ ग्रेक सागै धावो बोल'र वा नै जमलोक पौंचा दिया। हम व ग्रेरर तो मजानो तूरत र सोम सू सिस्टर ग्रर मौना काना पग घरिया पण उठा न घणकरा भाटा सिपाइया न देख ग्र उठ सू चुपचाप पाछा व्हीर व्हगा। हमें ध गढ रो प्रोळ खोलण रो मतो कियो। जद ग्र प्रोळ कन पूगा तो मायन लागोडी साकळा देखन समझग्या क व पचास छोड सो सिपाई बा भेळा व्है जाय तो यां साकळा न काडणो भारी है। पण केड बी म मोल प्रोळ खोलण सारू सामी माथाफोड करता [illegible] रा तम्बट री

दवाजा सुण च्यार हाथी मठी उठी सू निकळ आया। एकर तो य हाथिया न देख घबरायग्या। पण य समझग्या क या हाथिया र जोर सू ई य साकळा तोडी जा सक। च्यार पांच जणा नें तो हाथी आपरी फेट म ले र ठिकाणे लगा दिया। पण सवट अ लोग हाथिया न काबू कर लिया अर हाथिया री मदद सू साकळा खाच'र प्रौळ र एक किवाड नें थोडो सीक खोल लियो। हम या री खुसी रो ठिकाणो नी रयो। या म सू च्यार पांच सिपाई, सुलतान नें खबर करण सारू दौडिया। पण बार तो जोर रो तोफाण हो सो यां री आंखिया बूरीजगी अर य ज्यू पग आगे बधाव ज्यू पाछो पड। काया व्हेर अ पाछा गढ र माय घुसग्या। तोफाण र तेज वेग सू गढ रो किवाड बी धूजण लागो। तोफाण री साय साय रै इलावा कीं नी सुणीजतो। इ तोफाण साम हाथिया री बी ऊभो रवण री होमत नी ही। वे बी उल्टा पग पाछा आपर ठाया ऊपर जाय वठा। धीर धीर असमान में हळको सीक चानणो व्हेण लागो। हमें तोफाण री वग बी की कम व्हगो हो पण धूडो बरोबर उडतो हो।

हमें अ लोग पाछा सम्भिया। दस जणां एक सागे गढ सू बारे निकळया अर पडता गुडता अ खासी ताळ पछ सुलतान कन पूगा। या सू आ खबर सुणता ई सुलतान न जाणे गडियोडो खजानो मिळग्यो है ज्यू वो उछळ पडयो। वो हुकम दियो क सग गढ में घुस जाव। गढ न लूट लै, मिन्दर अर मूरतियां तोड द अर राव न जीवत म ब दी बणाय ल्याव। राव न जीवता न बन्दी बणाय लावण सारू, वो पांच सो मिस्कळ रो इनाम देवण रो बी कौल कियो। सुलतान रा हारया थाका सिपाइया मे गढ र लूटण रो सुण न नु वो जोम बावडियो। वे भूखा तिरसा ई, दूणे जोस सू गढ कानी लपकिया। हमें वांनें सग सुपना पूरा व्हेता लखाया। गढ री सम्पत लूटण र जोम म, व सग दुबधावा भूलग्या। तोफाण हमें की धीमो पडग्यो हो पण सुलतान री फोजा तोफाण र वेग सू गढ में चढण लागी।

सुलतान रा तीन हजार सिपाई हुडाक सू मर री टेढी मेढो घाटिया चढग्या पण ठठ ऊपर पूगा पछ बी एक दुबधा वा सामी आ ऊभी। खास गढ जठ क मोल मिन्दर अर भण्डार इत्याद हा वो एक बिसरक परकोट सू घिरयोडो हो अर वी री रूखाळी सारू एक मोटी अर मजबूत प्रौळ अठ बी बन्द पडी ही। *पला तो अ प्रौळ र भचीडा देणा सरू किया अर या अल्ला* अर बिसमिल्ला इत्याद करता रया। यार हाक सू मायला भाटी सिपाई बी सावचेत हे चुका हा। वे कमरा कसली अर मूछा र बट्ट देय करडालट्ट व्हे, सम्भलग्या। जद यवन सिपाई भचीडा सू प्रौल न नी तोड सक्या तद वे सेवट सिपाई र खाधा ऊपर सिपाई नें ऊभो कर, गोखडां तक पूगाय दियो। सबसू ऊपरलो

सिपाई जद गोखड में पूगग्यो तद वो ऊपर फंकियोड़ै रस्से नै गोखड़े र थम्बै सूं बांध दियो। हम ई रस्से री मदद सूं दस बारा सिपाई दांतां बिच्च नागी तलवारां दबाय, धबाधब ऊपर चढग्या। पण अठै बी मांय धुसण रो मारग बंद हो क्यूं क आडी भाटै री जाळियां लागोड़ी ही। काई बस नी चालतो देख, अ लोग जाळियां र भचीड़ा देवणा सरू किया। ई सूं दो सिपाइयां रा खावा टूटग्या अर अेक र माथ सूं भगग भगग लोई बैवणी सरू व्हैगी। बी री मगनाळ खुलगी ही। इबै यां न अेक दूजो उपाव सूझियो। अ नीचै सूं भाटै री अेक गोळी ऊपर मंगायो अर वीं सूं ठोक ठोक'र जाळी रो थोड़ो सो भाग तोड़ लियो। हम एक सिपाई मांय घुसायो अर वी लार दूजा, चार पतळ सरीर रा सिपाई बी मांय घुसग्या।

मांय घुसिया पछ अै लोग आगै बधिया। च्यारूं मेर निजरां फेरता थकां अ सम्भळ सम्भळ र आगै बधणा सरू व्हिया। अै अजू अेक खुलै डागळ ऊपर हा। अठ सूं यान मायली कानी नीच उतरण रो मारग अजू कोनी लादो। यां नै ऊपर फिरतां नै नीचै सूं भाटी सिपाई देख लिया। व नीचै सूं ई यान ललकारया अर ई र समच ई नीच सूं दो चार तीर अर खाण्डा ऊपर आया पण अ लोग वी सूं फेर बचाय दूजी कानी भागग्या। अठै यान नीचो जावण सारू अेक नाळ दीसगी। यां में सूं अेक सिपाई, नीचै ऊभा सिपाइयां न हगीगत बताई तो कोई तीन चार सो सिपाई रस्स ऊपर चढ र ऊपर पूगग्या। हमैं नीच जावण लागा। अ लोग बैठा बैठा मैंढक चाल सूं आग बध रैया हा, ई वास्त बचग्या। इतरे में भाटी सिपाई बी ऊपर जम र तलवारां कडकाई। यवन सिपाई छानै सूं नीचो पौंच चुका हा। जद अ प्रोळ र मायली कानी पूगा तो उठै तीन भाटी सिपाइयां सूं यारों मुकाबलो व्हियो। अर वे तीनूं श्री जी सरण व्हैगा। हम यां मे सूं अेक सिपाई मांय सूं प्रोळ रा किंवाड खोल दिया अर ई र समचै ई यवन सिपाइयां रो दळ मांय घुसग्यो। भाटी गिणती में थोड़ा रयग्या अेक हजार मांय सूं तीन सो तो डागळे उपर लडता हा दो सो देवी र मिन्दर अर मोतां री रुखाळी सारू उठ मोरचो लियोड़ा हा बाकी अठ खुल आगण में दुसमण र रोकण सारू जूझता हा यूं कर घमासाण लडाई चालतो रयो अर आधा ऊपर भाटी सिपाई मारिया जा चुका हा। जो अधमरिया टसकता हा ज्यां नै चीथ नै यवन सिपाई मिन्दर अर मोतां कानी आगै बध रया हा।

मिन्दर में स्वामी श्री, देवी री पूजा में लागोड़ा हा। बारै रा हाका अर तलवारां री खटाखट सूं वे समझ चुका हा क हमैं दुसमण वां तक पूगण वाळो है। व देवी री पूजा पूरण कर गरभग्रह र बारै आय बटग्या। गरभग्रह रा किंवाड बन्द कर दिया अर स्वामी श्री, आसण माथै बठ र देवी री स्तुति में लगोड़ा रैह

दियो । दुममण मिन्दर तक पूग चको हो अर हूमैं ज मा तजो अर अल्ला बिस मिल्ला री घुनिया साफ सुणीजती ही । पण स्वामी थो निश्चल भाव सू सगीत रै समदर म गोतो लगावण सारू किनार तक पूग चका । हूमैं वा न सुन्दर सुरा र इलावा कोई धुनी नी सुणीजती ही ।

दवन सिपाई मि न्दर म घुसण सारू ताकत लगावता रया पण अठ अेक माटी सिन्दार पाच री गरज सारतो । यू कर मिन्दर र बारै कोई री न नी बवण सक हुगी । हूमैं अ वारो बी पड चूको हो ई वास्त हारयोड़ा यवन, रात भर नै नचो घारिलियो

(३१)

राव र पोढण र मोल सू ल र मा तजो र गरभग्रह ताई अेक गुपत मारग हो । हमस ऊन्ताई राव पता देवी रा दरसण करता पछ वारा नण फेरू की देखता । वा री मुख माकळ ई पता देवी री स्तुति करतो पछ वे न्णी सू बोलता । अो राव रो नितनेम हो ।

राव न गढ टूटण री ठा पड चुकी ही । इवै आखरी जुद्द हेणो बाको हो । राव आपरी सारी सगती लगा चुका हा । इव वा न सिरफ मा तजो री आसरो हो । अर वा नै पक्को भरोसो हो क मा वा री मसा पूरी करला । इ वास्त सारी बाता सोच विचार, व आधो रात म मा तजो र मिन्दर, वी गुपत मारग सू व्हीर ह्या ।

च्यारु मेर सूनियाड ही । टूटोडा मोलां रा खण्डा खुदर खण्डण री काणी कवण सारू उतावळा हा कठई अळग सू सियाळिया री दरद भरयोडी हूक डरपा जावती । जागा जागा हाडका रा रिच्चा चोर दाई लुक्छिप न आपस मे बतळ करता हा या र दन्द री टीसा सू ऊठीयोडी दुरासीसा, यवन न गि दा दी । इ काळस री कूळरा रात मे विधवा र सवाग दाई उभड़ियोडो इ नगरी रो रूप डाकण दाई डरा वणो हगो हो । मसाला घर दीवड़ा कदकी खूट चुकी ही । कोई कोई तारा पण चुनर हा अर व इ डाकण न डरावण सारू दात काग्ता रता । मळव माथ पडती वा री दीठ सू कोढ रा दागा उघड जावता । उभडियाडो बागीचो पाखियां बिनां भूना गो डेरो व्है ज्यू लागतो ।

गरभग्रह रा किंवाड बन्द हा । हळको सो धक्को दिया सू किंवाड राजा रो मान करण सारू छ दा पड़ग्या । राव विजय राज गरभग्रह म घुस'र अेक जोत जगाई । अरर वे च्यारू मेर निजरा दोड़ाय न सका मेटण री करी क उठ, वा र इलावा दूजो कोई जीव ना है । वे देवी र सांमो सीस मुकाय न नण मूद लिया ।

अर विधर्मा इ मिन्दर नै तोडण सारू हजारा मील री जातरा कर, अेथ आयो है।

मिन्दर म सन्नाटो चक्कर लगावतो हो ईं आन्तै हळकी सीश साय माय र हलावा कोई उवाज नी ही अर आ माय माय मायत काना रा गूंजता रैवण री भ्रान्त र ई कारण व्है। कैई दिना पछै राव नै अडी सूनियाड अर सान्ती मिळी ही। जिस री मूल वी म्यात न्यूनो देतो। यू प्रकृति सान्त हो। अैडो लखावतो क प्रकृति थिर व्हैगी है, बवतोडी वगत सुस्तावण लागग्यो है। राव माय सू किंवाड बन्द कर दिया।

व उठ सू सिंगार री मोडा म गया अर जठै सू टाळ र देवी रा बढिया सू बढिया आभूषण अर वेष लियो देवी र सिणगार री पूरी सामग्री र साथ अलर पुसप, धूप दीप, इत्याद लेयनै पाछा गभग्रह मे आयग्या। सिणगार री मोडी मूरती री पूठ में ही अर गरभग्रह रै मांय सू, इ मे प्रवस करणो पडतो। राव सुदरै हाथा सू देवी री पूरण मूरत रो बड चाव सू सिणगार कियो, अन्तर, धूप अर पुसपा री भळी मैक सू गरभग्रह सुगन सू भरग्यो राव मूरत रै केसर अर चन्दण रचायो, अर सिन्दूर अर काजल वी जागा मर लगाया आभूषणा सू सिणगार कियो अर चूडो पगायो। अन्तर चढाय नै पुसपा रो हार चढायो अर गजरा गूंथ न देवी र हाथा म पराया। घी रो दियो कियो धूप की अर माथ ऊपर मुगट परायो। पूरो सिणगार किया पछ व अेक चितराम माडणियै कलाकार दाई आपर बणायोडै चितराम न निरखियो। देवी री मूरत जाण सजीव व्हैगी। देवी रै होटा अर नणा सू फूटती हळकी सीक मुळकण सू, राव न अचाणचक यसोधरा री इसमरण हे आयो व सोच्यो क देवी री मूरत न दख नैं ई विधाता यसोधरा नैं घडी है? व मन ई मन मे तरक करण लागा क मोअजै सामो यसोधरा देवी है क देवी यसोधरा? व आपरो आखिया मसळ न भरम सू मुगत व्हैण री चेष्टा करी पण आख्या खोलता ई पाछो वा ई उळभण साम ही। वा न विचार आयो क अडो किळिया वारो चित्त कठ ई भटकग्यो है। वा नै सन्ताप व्हैण लागो। ई पावतर काम मे विघन दख व घबरायग्या। व सोच तो बस आ ई क वा म आ कमजोरी कद वयू अर क्यान घुसगी? श्रद्धा री जागा नेह क्यू उपड पडयो? ओ कित्तो भारी पाप है क देवी माय कोई माणस आसक्त ह जाव? वा रो मन खिन्न हगो माथो चकरावण लागो अर सरीर पसीन सू तर व्हैगो। वारी आंख्या आग म यारी छावण लागी अर आवग म व खुदरी तलवार म्यान सू बार काडला। जीवण री अक अक छिन वा न भार लागण लागो। वा रो माथो नीच भुकग्यो अर तलवार तणगी। आगल छिन म वे आपरो माथो काट देवी नै अरपण करण री पक्की तवडली। कवळपूजा री आखरी चरण ओ ई हो। वा र निस्च र साग ई वा

रो तलवार वाळो हाथ, काठो तणग्यो भर हाथ न वेग देवण सारू ज्यू ई तलवार ऊपर ऊठी भर भचाणचक सुणीज्यो माँ माँ ।

हृडबडाय न राव भेक दम मूण्डो ऊचो कर च्यारू मेर निजर दोडाई । वा न की नी दीस्यो। देवी री मूरत पला दाई मुळकती ही। राव मन म सोचियो 'भा, मन री कमजोरी भोंइ जी सू काना न भरम व्हेगो भर मन भजू सुद्ध नी व्हियोई इ खातर वो मोयज सकळप सू मनें डिगावणो चाव । व भापर निस्च न फेरू पक्को कियो भर पाछो माथो भुकाय तलवार ताणली। फेरू वा ई धुनी वा र काना न बेध दिया।

तीजी वार, राव भापर निस्च न पूरण करण साऱ माथो भुकायो ई हो क हसी री सुर, वा न फेरू रोक दियो। इमैं वा न लखायो क व्है नो व्है कोई चम त्कार है क पछ देवी, वा री परीक्सा लेव ई। वा न लागो जाणे वा र काना नैं काई कवई 'विजयराज ! मू ताभजी पूजा मान ली। इब तन कवळपूजा करण री जरूरत कोनी'। पण वा रो विवेक वा नैं भा ई समभावतो रयो क मन री कम जोरी र इलावा की कोनी। ससार रा जजाळ भरम र रूप में प्रगट भर भादमी र सकळप नैं तोडण साऱ माया भापरा न्यारा न्यारा खेल रच। इ वास्त साची पारख री वठण घडी में बी, भादमी खरो उतर सक वो ई, सकळप पूरो कर सक। भा सोच वे भेकर फेरू च्यारू मेर निजर फ़की। जाणे प्रकृति थिर व्हेगी। वा र हाथ सू, तलव र छूटगी भेक छिन साऱ वा री सासा निजरा, देही, मन, विवेक इत्याद थिर व्हगा। भडी घडी हरक रैं जीवण मे भाव जद भा लखावै क स की भक माग थिर व्हेगो है, काई प्रकृति काई जड भर काइ चेतन। काई दीठो काई भणदीठो। सब सम्या होण भ धारो। भधारो भर भथाग भधारो।

'भो काई व्हेगो ? इ बिछिया यसोधरा भठ कयान भायगो ? तो काई था यसोधरा ई तो नी ही जको घडी घडी माँ माँ कवती ही। कै पछ वठ ई चोर दाई यसोधरा रैं प्रति नेह तो नी लुकयोडो हो जीं खातर देवी इण न भठ भेजी। भेकर यसोधरा रा दरसण करण साऱ ई तो देवी म्हैन नो रोक ल्यो ?' पण दियैं र चानणे म यसोधरा रैं भाता ई वा री भो भरम कूडो पडग्यो। यसोधरा माथ निजर पडता ई राव री भक्कल चकरायगी। वे देवी र जको वेष भर भाभूषणा सू सिणगार कियो हो साग वो ई सिणगार यसोधरा र कियोडो हो भेडी सू ले र चोटी तक सिणगार मे कोई फरक कोनी हो। जठ केसर थेवडो उठ केसर जठ चन्दण चरचियो उठ चन्दण वो ई मोतियाँ री हार, व ई बिछिया बो ई वणो भर वा ई चमक-दमक रत्ती री बो कठ ई काई फरक नी। राव गौर सू देखियो निजरा गाड न देखियो। देवी री मूरत भर यसोधरा मैं,कठै ई कोई फरक वा री तीखी निजर नी सोध

सका। व घडी घडी देवी अर यसोधरा नै बारी बारी सर निरखी पण वे कोई भेद दोयू म नीं कर सक्या। अठै तक कै दोयू रै होठा री मुळकण, नैणा अर मुखडै रा भाव बी साग वे ही। वे इत्ती फुरती सू निजरा दवी अर यसोधरा रै बिचै घुमावता रया क इण क्रम म व आ ई भूल वठा क किसी जड मूरत है, अर कुण चेतन पूतळी ? व चितबगना हेगा। हळक सूखग्यो, सासा री दग बधग्यो व हाफण लागा। लिलाड माथ पसीनै रा मोती उमरग्या। दिमाग सोचण री अवस्था स्याग जड ह्वगी। जबान, माय री माय खींचीजणी सरू ह्वगी। वा न लखायो क व इबै नी धरती माथै है नी आभै में। व अधर मे झूलग्या है। कोई वा नै मार नै नाखग्यो है। व बालणी अर सोचणी चावता। पण सुदरी ओळखाण बी भूल बैठा। व बठाटी खाय ज्यू ई धरती माय गुडण लागा क यसोधरा रा कोमळ हाथ, वा नै साम्भ लिया। यसोधरा आपरै आचळ सू वा रै हवा करी अर पासती पडी झारी मे सू गगाजळ रा छाटा दिया वा र गळै में गगाजळ उतारयो। थोडी ताळ राव बेसुध फफेडियोड कबूतर दाई यसोधरा रै खोळै मे चिपियोडा रया। जाणै डाकण सू डरियाडो टाबर सासा रोकयोडो मा री गोदी में छिपनै दुबक ग्यो है। जद वा न चतो आयो तो यसोधरा अळगी ह्वै, आपरी साग पली वाळी जागा ऊभी ह्वगी। वे, अजताई देवी अर यसोधरा म कोई फरक करण म सिमरथ नी हा। वा रै मूण्डै सू बोल ई दोरो निकळियो य सो ध रा '। यसोधरा अर देवी री मूरत दोयू मुळकण लागी। राव कवळपूजा री बात बिसर न इण दुवधा मे अळूझग्या क दोयू म सू किसी मा है अर किसी नेह री नाव ? अेकर फेरू इ री भेट लेवण सारू व पलका मूदी, सग इन्द्रिया नै बस मे कर चित्त न अेकाग्र कियो अर तीजी आख सू ओळखण री चेष्टा करी। पण वारा ग्यान ध्यान अर तरक सग फीका पडग्या। हाड मास री अेक पूतळी वा र माय ऊपर सवार ह्वगी। यसोधरा, यसोधरा, यसोधरा वा र रू रू मे फुरकण लागी, वा री अेक अेक सास में यसोधरा घुळगी। वा री बुद्द वा न अधर म लटकाय विलूमगी। विवेक जाणै कुण खोम न लेयग्यो। पण कुळ री तणो सारू वा री श्रद्धा म कठई फरक नी आयो। इ वास्तै ई वा नै कम सू कम इ बात री चिता जरूर हुगी क साच मा सू देवी र अरपण ह्वण री कामना राखता थका बी, वा र मन मे ससार री मोह कठै छिपियोडो हो ? ग्यान आदमी जद अणूती मरजादावा र निभाव म आपरी मसावा न दबाव ऊपर दबाव देवतो जावै तो अेक दिन या तो वो आदमी टूट जाव या पछ इ दबाव सू अक अडो धमाको व्है क सारी मरजादावा रा किरचा किरचा व्है जाव। ससार अर समाज री मरजादावा री पलधर खुद या मरजादावा र थोथपणै नै उजागर कर समाज न अरपण कियाडो आपरी ममोसियोडी मसावा री बदळो लेवै। छालियोड तीतर दाई, वो तडफतो जरूर रैव, पण बदळो लेवण री [illegible] रा अर

उडण री मसावा मर कोनी। इ भात रै उन्नट मीध तरका र जजाळ सू मुगत हुण साह वे भ्रापरी भ्रातमा न फेम टटोलण री कोसिस करा, पण जद भावनावा भ्रर पिरतख री मेळ व्हे जाव तद भ्रातमा री दरसण फोकी पड जाव।

यसोधरा ! देवदासी ? यसोधरा भ्रेक श्रेष्ठ कलाकार ? यसोधरा ! नेह री नाव ? यसोधरा ! दुख री दरियाव ? यसोधरा रूप जोबन भ्रर कोमळता री सत्व ? यसोधरा ! जुद्ध री भ्राग म भुळमियोडी भ्रर मस मीजियोडी भ्रेक भ्रातमा ? यसोधरा ! गगा र जळ सू निरमळ भ्रर पवितर ? यसोधरा ! नेवो र रूप दया भ्रर माया री दरपण ? समरपण री जागती जोड, मसावा न मार न विजोग री भ्राग म बळनी मारवणी री मून। जाण किसा किसा कलाकार भ्रर उपमावा यसोधरा सामी फोकी पडगी। भ्रडी यसोधरा भ्रर राव विजयराज री ससग भ्रर नुव लाख न जलम द सकती पण विजयराज सू मिळिया पला ई वा दवी र चरणा मे चढ चुकी ही भ्रर देवदासी बणगी यसोधरा भ्राज जीवण री भ्रेक मातर साच है, भ्रक मातर यथारथ। वा न याद भ्रायो क रिपि विश्वामित्र री मनका माथ मोहित हुणो समाधी न तोडणो भगवान सकर रो मोवणी रूप माथ डुळणो जीवन री साच हो यसोधरा मे मदछकिय जोबन री चचळता ही। मरद री हिवडो छळण री चुतराइ भ्रर चप ळता ही। यसोधरा र रूप भ्रर जोबन मे देवतावा र मयम न बी ललकारण जोग सिमरथ ही। वी र नणा री भ्रबळोपण भ्रर वां सू भरतो नेह किणी नै बी मान भ्रर गरब डुळावण जोग हो। विजयराज कनै सत्ता ही रूप भ्रर जोबन हो सूरता र साथ ई तीखी बुद्दि ही। पराकरम र साग ई तेज हो, नेह रै साग निष्ठा ही भ्रास्था भ्रर समरपण हो, हठ भ्रर निबळाई ही भ्रर भोग विलास रा सग साधन भ्रर सुबधावा ही। वा म सिमरथ र साग ई सगती ही, नगर री भ्राधा सू जादा लुगाया वा ऊपर जीव डुळावती।

× × ×

पिरतख म तो यसोधरा र हाव भाव सू राव विजयराज माह कोई लगाव कै लोभ, पठ ई नी लखावतो पण पैलपोत राव र साम निरत करता हुया जद बी वीं री निजरां राव री निजरा सू मिळी तो वी रै सरीर मे धडधनी दूटण लाग जावती भ्रर सासा री धडकणा, नामरिया दाई भणकार करणी सरू व्हे जाती। वी रै सरीर म भ्रेक उजब उद्वेग सो भर जावतो। राव बी सायत यसोधरा र सरीर री इ उदबुद भाषा र भ्रेक भ्रेक भ्राखर री भ्ररथ समभ लवता भ्रर वा रै सरीर में बी इ भ्ररथ री उथेळो देवण सारू मरमास वापर जातो।

यसोधरा र भावा म समरपण री व्याख्या ही क्रिया नी प्रेम न भ्ररथावण री भ्राडी, वी र साम उळभ जावती भ्रर भ्राडो री भ्ररथ भ्रणसमझ्यो ई र जावतो।

वा र मन म स्वामी श्री मारू अथाग श्रद्धा ही। राव सारू वी र हिय मे काई ही? इ न र सोचरण, समझरण अर प्रगट करणै म अबखाई ही। स्वामी श्री रो सनेह, आचरण अर तपस्या रो तेज यसोधरा सारू लिछमण री कार ही। देवा री अरचना, पवित्रता री पाळा फलायोडी वी माय छया करती अर वी नै इस्मरण करातो रैती, कै छया छेह, तावड़ में गई नी अर बळ जावैली, कुम्भळा जावली वा देवद सी बण चुकी ही। वीं री अराधना, जीवण रो भोग, नेह रो नागर सिरफ देव र अरपण व्हैणो ही। वीं न देवै री अराधना मे ई जीवण रो सुख सोधणो हो। ससार रा सुखा सू वा नी तो अणजाण ही नी विमुख वी व्हैणो चावती। सयम, साधना रो मारग जहर हो पण ईष्ट नी। जीवण नै रूखो राकणो वीं न घणो अखरतो। वा मुलतान री राजकवरी वी ही इ वात न वा बिसरी कोनी ही। ई सारू राव विजयराज शानो वी रा सस्कार खीच न ल जावता। सयम री आंच सू वा माय री माय असूझती वा तिरसी ही अतिरपत अर बिना कोई ठायै ठिकाणा वासनावा र समदर म छोडियोडी अडो किस्ती ही जको उछाळा रै समच आय नै किनारा सू टकरीजती तोफाण में भव जाती फेरू किनारा सू टकरावती पण वी नै, उबारण सारू कोई तिराकू, कठ ई निजर नी आवतो। स्वामी श्री री मानखो ई किस्ती न, ई समदर री छोळा म छटपटावण सारू दबावतो। मगदूर है कै कोइ खेवइयो कै तिराकू ई म बीचबचाव कर? आ ई तो स्वामी श्री वी नै सरूपोत म दीक्षा दिवी ही कै भोग विलास री सारी सामग्री, वातावरण अर साधन व्हेता थका बो, वी नै उण चोकण घड दाइ रणी पड़सी जको तिरसा लोगा ऊपर पाणी उडेळ पण खुद तिरसो ई रव। स्वामी श्री रै खुद र रूप, तेज अरथ चर अणथाग ग्यान अर सयम सामी यसोधरा री अबोळी कामनावां मसासीज न भिसकती रैती। पण भावनावा रै ज्वाळा मुखा र फाटण री भी वी नै बण्यो रतो। वा पथभिष्ट ना व्हैणो चावती पण जीवण री अपूरणता म अक खोखळैपण री ललाव वी नै लाया जातो। वा जलम सू राजकवरी ही देवदासी नी। राजकवरी सू, देवदासी बण वा भगता अर अराधना मे जीवण रो सुख हेरण सारू निकळ पडी ही। भुगती री मसा वी नै मुलतान सू खीच न तम्रोट तक लियाई।

× × ×

राव फेरू बोलण लागा दयी यसोधरा!'

'देवी ना राजन्!' दासी। देवदासी। देवता पुरस भाटी राजा विजयराज रै चरणा री धूड।

'की? औ की वचैई?

'म्हे ठोक ई कर राजन्! आप नारेळ पाछो भेज दियो वीं सू म्हारै काई फरक पड़यो। म्हे तो मन ई मन में थेर देवता रै चढ़ चुकी ही।''

'मा तन्नी साचो माता श्रोईं । साच मन सूं कियोड़ी पूजा श्रर भगती रो मा, परचो श्रवस देवई ।

"मा म्हे जाणूं राजन् ! ई सारू ई तो मुलतान छोड र "

मुलतान ?" राव घोड श्रचूम्भ सूं बोल्या ।

हाँ, राजन् ! मुलतान सूं "

मुलतान रा लगा यूं तो मौग्रजा, वरी श्रोई पण देवी यसोधरा ! श्राप माटी राज री संस्कृति र गरब न बधावण मे जको सयोग दियोई वो पूजनीक श्रोई ।'

'राजन् ! धरती री धूड न माथ चढाया सूं वा किणी काम री नी रव । धूड जद तक धूड रवै तद तक वा सूं कोई र पग टिकावण रो श्रधार व्है पण माथै चाढियोड़ी धूड न भेलण री सामरथ बी धरती में ई व्है बस धरती में ई ।"

'देवी ! श्राप श्रेक कळाकार इज नी पण गुणवान श्रर ग्यानी बी श्रोई ।"

'नी राजन् ! श्रो श्रापरो भरम है ।"

श्र मोग्रजी श्रातमा सूं निकळियोडा बोल श्रोई देवी यसोधरा !

श्रातमा तो दगो बी दिया कर राजन् ! क्यूं क श्रातमा रा चणकरा निरणै वी सरीर र पख मे ई व्हिया कर जी सरीर मे श्रातमा रो वासो व्है ।

"श्रो श्रापन भरम श्रोई देवी ! दगो, श्रातमा नी, मन श्रर नण दिया कर ।"

"जद म्हे चावू ला राजन् ! क श्रापरी श्रातमा, श्रापन धोखो देव ।'

"दवी ! श्राप म्हैन समझण मे भूल करोई ।'

श्राप घडी घडी म्हार नाव श्राग देवी जोड र मन घिरणा जोग क्यूं बणावो राजन् ?"

'हा देवी ! जे म्हैन श्रो इधकार व्हेतो क म्हे श्रापन बस यसोधरा ई क'र बतळा सकतो ।'

"श्राटी राज रा सिरे मौड श्रर उमर श्रर ग्यान मे माटा व्हेणै र कारणै श्रो इधकार तो श्रापन है, राजन !

"श्रो ई तो मौंग्रजो दुरभाग श्रोई क म्हे राजा हौं । प्रजा रो पाळणहार व्हेणै सूं म्हैन सैंग माणसी, राजमी, धरम श्रर समाज री मरजादावा मे बंधियोडो रवणो पडई । खुद र मन री बात बी किणी न बतावना सको श्रर पड़दो राकणो पडई ।"

'श्रो तो थारो त्याग है विजयराज , राजन ! खिमा करो ! सेवट तो लुगाई जात ई हूं । बोली श्रर करमा दोन्यूं सूं दोसीलो ।'

नी यसोधरा ! जाकारै अर राव र सम्बोधण सू म्है बौत भारी व्हे जावू । तूकार मे जको रस श्रोईं सनेह अर अपणायत श्रोईं, वा जीकारै म केत ? श्रठो लाग क जीवण मे पलडो बार, म्है धरती माथ ऊभी हू जीव कर क इ श्रेक तूकारै ऊपर जीवण निछरावळ कर दू "

जीवण तो बौत अमोल है राजन् ! जीवण ई सबसू मोटो साच है। जीवण ई रस है, जीवण ई चेतन अर गत है। जीवण री गत म ई इ री रस है। जद तक जीवण है तद तक ससार है स की है। इ वास्त ई राजन् आपन म्हारी श्ररज है क इण अमोल जीवण नै यू खतम करणो ठीक नी। धरम, संस्कृति, धरती मुलक, जाती, सग जीवण रा अधार है। या माथ जीवण ऊभो है। जद श्र खतम हे जाव तद जीवण आप ई खतम व्हे जाव। पण जद जीवण नै ई खतम कर दियो जाव तद श्र मारा अधार कूडा पड जावै। जड व्हे जाव।"

अर था क्यू नो यसोधरा, कै जीवण री अधार ताश्रजै सरीखी श्रेक देवी, देवदासी, कळाकार अर लुगाई जात बी श्रोईं।'

'म्हैं तो राजन् ! श्रेक नीच अर अधम लुगाई जात हू।

'म्है समझ चुको हों कै देवदासी र रूप में, श्रा श्रक राजकवरी बोलैई। मुलतान री राजकवरी।'

"राजन् ! म्है आपसू की नी छिपावू ला। कंवू ला अर जरूर कवू ला, राजन् ! यसोधरा आपसू नेह राख। यसोधरा आप माथ आज सू नी बरसा सू प्राण निछरावळ करण री हूम लियोडी बठी है। आपन याद व्हे तो मुलतान सू म्हारो, आपसू सगपण करण सारू, श्रेक'र नारेळ आयो हो जी न आपर श्रठै सू पाछो भेज दियो। यसोधरा तो वी दिन ई मर चुकी ही सौभाग सू क दुरभाग सू आपरी ई छतरछाया म देवदासी बण जीवण री जोत जोत जागती राखण री मोह पाछो जागग्यो। यसोधरा तो जुद्द री लाय सू बळती धरती री दूख रै परस सू ई मर चुकी ही, जद क या मुलतान मे हजारा बेकसूर मरदा लुगाया, टाबरा इ याद नै मरता देख्या हा। राजन् री नेह म्हार जीवण री अधार बणग्यो अर अठै थी जुद्द री इण प्रलकारी अर विकराळ विनास लीला न रोकण सारू यसोधरा री काळजो बळतो रयो। पण या जीव भरन री बी नी सको। हर घडी श्रो ई डर हो क इण रावणी कळपणो सू पूजा म विघन नी पड जाव। धरम, संस्कृति अर धरती साग लुगाई जात बी ज वण री अधार व्हे। पण यां न बचावण सारू जुद्द ई जरूरी व्हे श्रा कम सू कम म्हैं नी मानू। जद जीवण ई खतम व्हे जावै तो अधार री रवणो नी रवणो की मतब नी राख। जठ जीवण है उठ अधार तो आपै ई पनप जासो, पण खाली अधार में श्रा सगती कोनी क वो जीवण नैं पैदा कर सकै। वो जीवण न

पाळ सक स्खाळ सकै पण पदा नी कर सक । यसोधरा उण जीवण री रक्सा खातर रोई ही राजन् ! जद क सार गढ म जुद्द रो भूत सवार हो । यसोधरा आपरै नेह र जोर सू बी जुद्द टाळण रो उपाव करती, पण स्वामी थ्रो रो तेज अर ताप इ सताप न दबा दियो । यसोधरा आपर हिवडै री कोर न खाण्डो कर उडत मन पाखी री अेक अेक पाख खुद है हाथा सू तोड फकी । बस अेक ई कामणा जीवण री बचियोडो अधार हो क आपर चरणां री धूड बण न नी तो कम स कम आपरी छ्या र परस सू ई जीवण रो गरमास अर मीठास सजोवती रवू । मा तम्रो री किरपा सू आज आपसू मिळणो हे ई गयो । म्हारो जीवण आज आपसू दो बाता कर पूरण व्हेगो । हमैं कोई कामणा बी मन में रैयी कोनी । जीवण म, जिण चाज री लगन ही अर जित्तो कुछ बी प्रापत व्हेण रो जोग हो वो सू घणो सजो लियो । हमैं जीवण रो मूळ तो हासल व्हेगो, ब्याज री कोई इच्छा बी नी ही, नी है । इ वास्त जे आपन कवळपूजा करणी ई है राजन् ! तो ल्यो म्हारो माथो हाजर है देवी न अरपण करदो । इ सू बडो मनमान तो आप मन महाराणी बणा न बी कद द सकता हा ? आपन अजू घणो जीवणो है राजन् ! राजा धरनी रो रूखाळ व्है । मुलतान रो राजा तो भिस्ट है चुको है । यवन, पजाब न बी तैस नस कर उठ र गरब न गाळ दियो है । आप वीर जोधा हो । बुद्दिवान राजनीतिक कुसळ राजा अर दयालु दाता हो । इ वास्त, इ मुलक म आप इ अेक जागती जोत हो, जी सू ससार स चम्नण है ।

यसोधरा, आपर चरणा री धूड माथ ऊपर चढाली है । आपरो नेह वी न मिळग्यो । अब वी न काई जोन्ज ? सुरग तो वी न अठ ई प्रापत व्हे चुको ।"

देवी यसोधरा ! आप म्हैन मोअजा वचना रो पाळण करण सू रोकन, ठीक नी करोई ।'

'म्हारा देवता ! काई आप आ चावो क आपरै बलिदान पछ यवन मळेछ अर वाराह ई धरती माथ विनास करण सारू बच जाव । आपरी यसोधरा रो सीळ भग कर न यवन वी रो जीवण बरबाद कर द ?

"देवी यसोधरा ! ' राव विजयराज रो म थो पाछो चकरावणो सरू व्हग्यो अर वे नु वी उळझण मैं अळूझग्या ।'

"हा राजन् ! सारा हिदू राजा आपस रा राग द्वेष अर कुळ री थोथी मरजादावा लारै यवना री इमदाद कर है । अ ई यवन या लोगा री इमदाद सू आपा र धरम, सस्क्रति अर सुततरता माथ धाडो पाड अर आपा न लूट । इणी वास्त मुलक कमजोर व्हग्यो है । जीवण रो मोल कौडी सू बी गयो बीतो व्हेग्यो है । अेक अेक जुद्द में, हजारा मडन्ह लुगायां मरै लूटीज, वा री मरजादावां लूटीज धरम

नष्ट म्है अर इतियास पीढियां री जीवण बरबाद करण सारू, यां गाथावां सू रगोज जाव। इणी जुद्ध में लगा, वाराह अर दूजा राजपूत लोग, आपरै खिलाफ अेक विधरमी अर विदेसी सुलतान रौ पख लियो। बी री इमदाद करी आखिर क्यू ? क्यू नी अठ री ई कोई राजा या लोगा न अेक डोर म बाध सकै ? विदेसी अर विधरमी सू तो जादा नजीक ो रिस्ती अठ रा रवासियां, अठै रै धरम, सस्क्रति, माज दावा अर धरती री है। आप मे ऊजळो तेज, पराकरम, बुद्धि, राजनीतिक दीठ, मानवी अर समदर सू बी गैरो हिडदो है। आप या नै अक डोर में बाध नै जीवण ो आपरी सारथकता री परचो दे सको।"

'देवी यसोधरा ! जे आप साचांणी मोअजी हेताळू ओंइ तो आप अेक मइद रा भावनावां नै आछी तरियां पचाण सकोई, खास कर न वीं मइ री जको धु आपरै नेह री ब दी ओई।' राव नणा में उ माद भर बोल्या।

"राजन ! म्है आपरो भावनावा नै सिर ओल्या ऊपर राखू अर वां री पूरी सनमान करू पण म्हारै कुळ री मरजादा री उळघण करण मे, म्है बी सिमरथहीण हू। लगा आपरा दूसमण है। म्है लगां री कवरी हूं। काई आप समझयो क आपसू ब्याव कर न म्है सुखी रै सकू ला ! म्है राजपूत कन्या हूं। ब्याव सू पैला समरपण करण न त्यार कोनी।"

उलटो ५ासो फकता थका राव विजयराज थोड़ा कठोर सुर मे बोल्या "तो पछ मूठी ई नेह रो नाटक क्यू रचा राख्यो है ? काई तू बी थारै कुळ अर जात र लोगां दाई घिरणा जोग अर कूडी नी ओई ? म्है सू प्रेम रो झूठो नाटक कर नै मारग सू भटकावण सारू ई तो तू अेथ नी आई ? जाणु ? विजयराज न वी रै सकळप सू डिगावण री सगती देवतावा म बी कोनी।'

'जाणू राजन ! आ सगती देवा मे कोनी। पण मिनखजूण रा हाड-मास री, अेक पूतळी मे जरूर है। पण म्है आपन सकळप सू डिगावण री नीत सू नी, आपसू भीख मागण न आई हू।'

'कड़ी भीख ? अेक विखवया रहे न मन डसण री भीख माग रैया है ?'

म्है देवी तह्नी री भीख मागण नै आई हूं राजन ! मुलक, दस, सस्क्रति, धरम समाज जलममोम री रक्सा री भीख। म्है नी तो पथ सू विळग हुई हू नी आपनै ई करणी चावू। पण आप खुद मारग सू भटक रैया हो। आपन याद है ? आप अठ इणी ठौड अेक दिन देस धरम, सस्क्रति अर मिन्दरा री रक्सा करण री प्रतिग्या ली ही।'

हां ! उण प्रतिग्या न पूरी करण र साथ म्है ओ सकळप बो कियो हो क या री रुखाळी हिया, म्है कवळपूजा करू ला।'

"हल्लाळा रुठ हुई राजन ! गढ टूट चुकी है। दुसमण आपर मलाँ तक पूग चुकी है। किणी पळ वो अठ बी पूगण वाळो है। आपरी सेना बिखरगी है। गन्म म बचियोडा माटी सिरदार, जद आपन नी देखला, तो वा मे वा सरदा, हीमन अर भगतो कद र सकेला के वे इ मिन्दर री अर मा री मूरत री रुखाळ कर सक ? ई बिळिया कवळ पूजा करणी अधरम है कायरता है अणसमझी है हीमन हारणो है।

"बस, यसोधरा हम की मत कै। मोअजो माथो चक्करावई। म्हैन की नी सूझै।"

राव न फेरू चक्कर आवण लागा अर वे जमी माय लुड्कण लागा। पण यसोधरा, वा नै आपरी नरम कळाइयाँ र सार सू थाम न आपरी गोदी मे वा रो माथो धर, आचळ री हवा करी। वा फेरू बोलणी सरू व्ही—

राजन्! बस आप अर आप म ई वा सगती है क या सगा सू भिड सकै अर दुसमण न मात दे सकै। आप मे वा बुद्दि है क आप जुद्द न टाळ बी सकौ। आपन जीवतो रवणो है राजन्। यसोधरा सारू नी सही आवण वाळी पीढ़िया सारू क वे जुद्द री झाळ सू नी झुळस। प्रेम रो ससार बसावै अर दुसमाँ नैं सनेह सू जीतण री सामरथ उपजा सक। राजन्! अब बात मरू बता द क सबळ हिरदा ई सनेह री जीत व्है। सबळ सू सैंग डर। ई वास्त सुल करण री गरज वा न रव। सबळ व्हेणो ई जुद्द टाळण रो उपाव है समरपण तो आतमहित्या है। आपरो औ बलिदान आतमहित्या ई नी पण सगा री भेळी हित्या रो अपराध है। अणजलमी पीढ़िया री बी हित्या रो अपराध।"

'यसोधरा! तू म्हैन आज मात देदी है म्हैन धरम-सकट में पटक दियो है। म्हैनै काई करणो जोइज काई नी आ सोचण समझण री सामरथ बी तू खोस ली। म्है गजनी रै सुलतान साम नी पण ताअज साम हार कबूल करू इण र पला तू सिरफ मोअज मन अर मोह न जीत सकी ही पण आज तू म्हैन पूरण मरद नै जीत लियोई। बुद्दि तरक विवक आतमबळ सग ताअज साम सस्तर पटक न हार मानली औई। अब तू ई म्हैन मारग बता। तू ई चानणो कर "

'राजन्! इत्तो भारी बम पाळन म्है जीवती नी र सकू ला। म्है काई हू? आ म्है खुद आछी तरिया जाणू। स्वामी थी सू म्है भो ई गुण हासल कियो है क खुदन ओळख सकू। देवी तन्नो री आ ई मसा है क आप जीवता रवौ। सग देसी राजावा सू आप मेळ करौ। वाराह अर लगा न बेलो बणावौ अर हमेस सारू विदेसी रा इण मुलक न जीतण रा मनसूबा माथै पाणी फेरदो। आप आपरी तागत बढावौ कुमळ राजनीत सू सैंग पाडोसिया सू भाइपो करौ अर जुद्द रो हमेस हमस सारू काळो मूण्डो करौ"

"पण मोप्रजो सक्ळप ?"

"हा, प्रापरो सक्ळप, लो ! इ न फेरू मजबूत करो ।"

प्रा क र यसोधरा प्रापरै चूडै माय सू प्रेक चूड उतार नै राव विजयराज र हाथा में सु र हाथा सू पराई प्रर बोली इण चूड नै प्रगीकार करो राजन् ! प्राज सू *प्राप चूडाला । प्रा चूड म्हारो सवाग है, प्रा चूड सिष्टो रो प्रादि प्रत है,* प्रा चूड जीवण री परधं है प्रा चूड सारो मण्डळ है, प्रा चूड ई गत है, प्रा चूड ई चनन है । चूड ई ब्रमाण्ड प्रर चूड ई धरती रो रूप है । चूड, बळ प्रर सनेह, मरजाण प्रर सनमान गरब प्रर समरपण है । म्हारी तपस्या प्रर सनोपणो प्रापरी रुखाळो करला । प्रा चूड प्रापनै प्रस्टपौर प्रापर सक्ळप रो ध्यान दिरावती रवैला प्रर इ र सागै ई, कदैइ जे दासी रो बी ध्यान प्राजाव तो नाराज मत व्हिया । वी न खिमा कर दीजो '

दवी यसोधरा !"

'राजन् ! प्राप फेर मन्नै देवी "

'हा यसोधरा ! तू यसोधरा नी, देवा प्रोंई । मा ! ताप्रजा काई काई रूप प्रोंई ? मा तू घट घट मे विराजै । मा म्है तनै की को नावा सू पुकारू ? तनोट राय ? यसोधरा ? यसोधरा ? त नोट राय ?"

राव पूरा भावुक हे चुका हा । यसोधरा रै नणा सू इत्तो देर रुक्योडो प्रासुवां रो प्रोटो पलका रा बाण तोड र ववणो सरू हेग्यो । थोडी ताळ दोयू बिच्छ सुनियाड बापरगी । मून रो मासर तोडती यसोधरा बोली —' राजन् ! प्राप *पधारो दूणै जोस प्रर हीमत सू दुसमण नै मार भगावो । प्राप जद जीत नै पधा* रोला वी दिन, यसोधरा प्राप सू ब्याव रचावला । वी दिन म्हारी सवाग रात हैला वो रात प्राप कवळपूजा करोला प्रर म्है सतो हूंला । म्है उमर भर प्रापरो बाट जोवू ला राजन् ! उमर ई तो जलम जलम तक जोवू ला ।"

"देवी यसोधरा ! म्है प्रापन मा र रूप में देखी प्रोंई । मा र रूप म ई प्राप म्हैन ग्यान दियो, मोप्रज हिडद रा किंवाड खोल दिया । म्है इब नी हिगू नो डिगू । इब तू मा प्रोंई । मा मा मा '

गरभग्रह में मां मा रो लखा धुनिया गू जण लागगी । राव, तलवार सू प्रापर प्रगोठ माथ चीरो लगायो । लोई री धार फूटण लागी । राव वीं लोई भरय प्रगोठ सू यसोधरा र तिलक लगायो प्रर माथो निवाय सारी मगती उडळ दी । दवी तप्रो री मूरत सू मुळकण रा फून भरण लागा ।

वाखो स्यात स्तुनो साहू प्रापरी सगोन छे" दियो । दूजा मि"दग रा टिंकोरा

ग्रेक साग त नो राय रै मि"र रा टिकोरा साग सुर मिळाय बाजणा मह व्हेगा। गायां ग्रर बाछडा रम्भावणा सरू व्हेगा।

पूरब मे माग फूटी ग्रर सोन रो मिरगो, ब घणा तुडाय माग छूटो। च्यारू मेर हवा म सुगन वापरगी। राव विजयराज न परम ग्रान द सचि"ान " रो ग्रनुभव हियो। वे नए मू " न वी ग्रान द रस मे डुब्योडा हा। जद ग्राख्या खोली तो देवी री मूरत नी ही। 

(३२)

राव, ज्यू ई गरभग्रह रो किवाड खोलियो ग्रर ग्रक कटियोडो माथो माय न उछळ'र ग्रायो। साम ऊभो सिपाई वीं माथ न ठाकर लगाय उछाळयो हो। कपाट खुलता ई चार सिपाई राव कानी भपटिया। ग्रो सारो इत्तो वग मे हियो कै राव इचरज में पडग्या। वा रै हाथ म नागी तलवार ग्रजू ही वे ग्रेक दो वार तो बचाया ग्रर पछ भूख मेर दाई या च्यारू सिपाइया माथै टूट पडया। यसोधरा ग्रेकानी ऊभी, धग धग धूजती ही। वा भीत रो सारो लवरा ज्यू ई हाथ, भीत र नडो लेजावरा लागी ग्रर ग्रेक तलवार वी री बाव न चीरती निकळगी। वी र ग्रेक बोबै री लोयो, धच करतो ग्रागरा पडियो ग्रर बाव लटकगी। लोई सू वी री सारी देही भरीजगी। वा चकराय नै नीच पडी। ई बिच्च दो मू डकिया खिर चुको ही। लारला दो सिपाइया रा सरीर बी जागा जागा सू चूवरा लागग्या हा। राव र सरीर माथ बी पाच सात धाव हेग्या हा। ग्रेक हाथ सू वे सोन सू बवत लोई र डाचो दियो ग्रर दूज हाथ सू तलवार चलाता रया राव री तलवार री तीखी धार ग्रर पलटमी मार साम, लारला दोयू सिपाई बी नी टिक सकिया। वे जीव बचाय, उठ सू भागरा लागा। परा राव री तलवार सू ग्रेक रो सरीर फाडो है ज्यू न्हेग्यो ग्रर दूजाड री टागा लटकगी। वे दोयू देवी र ग्रागरा लुटग्या। हम राव गरभग्रह र माय पडिय माथ न हाथ मे उठाय, ग्रोळखारा करी। स्वामी श्री रो धड बार पडियो हो। राव ग्रक छिन सारू नैरा मू द स्वामी श्री रो इ मररा कियो। वा र नरा सू मोती खिरग्यो। इत्त म निरा सारा भा"ी सिरदार ग्राय पूगा। राव वा में सू दो सिरदारा नै स्वामी श्री र सरीर री "ी रो भार सू प दियो। ‹

माय स् टसकरा री उवाज सुरा, राव माय "र हुकम सू

यसोधरा रो उपचार तीन सिरदारा न सू प ". । मोह

राव, लारला भाटी सिरदारां न साथ " ' ज

रा बोल गू जरा लागा। राव ग्रर भाटो

झुमता रया। भाटी सिरदार, राव नै उपचार अर आराम करण सारू ताकीद की पण राव किणी री नी मानी।

सुलतान चढ चाव अर उमाव सूं गढ़ म घुसियो पण गढ़ नो खालो पड़यो हो। सेनापति अर पूनम री कोई बावड नी ही। सुलतान मोल मे घुसण सारू मोल री भाता बो घुडवा दी। पण उठ वी न नो तो खजानो ई मिळियो, नो राव।

सुलतान नै इण बात री घणो अफसोस व्हियो कै इत्ती मुसीबतां उठाया पछ ई वी र की हाथ नो लागो। राजा सूं बी वी री मुकाबलो नो व्हे सकियो। सुलतान रा सारा सुपना चूर व्हेगा। वीं रा सिपाई थी, किल रै खाली दूंढा सूं मचीडा साथ आया, पण वा र हाथ की नी लागो। पैला र लूंट्योड धन माल म सूं पानो करण सारू, वे सिपाई, सुलतान न ताकीद करी। वे लोग दूजै ई दिन उठ सूं जावण री अलाण कर चुका हा।

रात सुलतान री फौज रा तीन चौथाई सिपाई गढ सूं बार जावण सारू नीच उतरग्या। ओळ माथ पूगता ई जोर री मार काट मचगी। केई सिपाई मारया गया अर केई भाग छूटा। की सिपाई हडबडावता सा पाछा भाग नै ऊपर आया अर सुलतान न खबर की।

सुलतान न आपरै डेर में पडय खजानै री ख्याल आयो अर वीं री काळजो आ साच न बैठग्यो क जरूर लगा अर वाराह खजानो लूट लियो व्हैला। मो फुरती सूं खबर लेवण सारू अफसरा न दौडाया। पण वे तो मुलतान न लाय म कोई दूजो रुक्को ई दियो। गजनी सूं समचार लेय नै हलकारा आया हा। गजनी माथ, काशगर री तुरक राजा इलक खां हमलो कर दियो हो। गजनवी नै घोरा में फस्योडो जाण, इलेक खा गजनी माथ चढ आयो। जीत न पक्की करण सारू वो चीन र कादर खा री इमदाद ली। वो जहून (आक्सस) नदी नै पार कर, तोफान र वेग सूं आगै बध रयो हो। वा पुराण वर री, बदळो लेवण सारू मौकै री ताक में ई हो।

गजनी माथ इलेक खा रै हमल री खबर सुण नै सुलतान रै पगां हेटली धरती खिसकगी। वो समझग्यो क हमैं वी रा खोटा दिन आयग्या है। वो अफसरां न हुकम दियो कै फुरती सूं कूच करण री त्यारी की जाव। ई समचार सूं बचिया खुचिया भाटी सिरदारा री हौसलो बधग्यो। भाटी सावचेत व्हेगा। वे पला सी सोच्यो क किल में ई जग कछ करद पण पछ वा, त करी क गढ़ सूं बार निकळियां पछ ई सुलतान माथ हमलो कियो जाव। गढ़ री ओळ सूं सुलतान री बार निकळणो मुसकिल व्हेगो। चार घटा री घमसाण र पछ वो किल सूं बार निकळ सकियो।

च्यारू मैर मार काट मच्याडी ही। सुलतान न तो गजनी जावण री उतावळ लागोडी ही ई वास्त वो निर्णो तर सू भेस बदळ न उठ सू जान बचा नैं भागो। वी र पता तो भागरा वाळा नैं भाटी नी छोडिया पण थोडी ताळ मू ई वा न पत्तो लागो क सुलतान वो भेस बदळ न भागग्यो है तद वे वी री पीछो करता घणी दूर तक लार गया। मारग म सुलतान री जिको वो सिपाई धक पडियो वी न व धरती माथ बिछावता गया सुलतान री सारी फौज खतम व्हैगी। पण की अफसरा अर सिपाह्या साथ सुलतान, जीवतो भागण म कामयाब हेगो हालाक सुलतान मारग म फोडा पाया। केई तक्लीफा उठाई। कठ ई पाळो, कठ इ ऊंट माथ कठ ई घोड माथ वो भूखो तिरसो दिन रात सफर त करतो, सेवट भाटो राज री सीव सू जीवतो भाग निकळण में कामयाब हेगो। वी र साथ रा बो कई अफसर भूख तिरस गरमी अर लू सू मर खूटा। इत्त भारी लस्कर न सुलतान लय नैं आयो हो, पण जावती बिळिया वो, साव अकेलो हो अर प्राण गे रखमा खातर वी कन सिरफ अक कटार ही।

× × ×

इ बिचै पूनम, राव र मौल म राव न खुदरी जुगन रा समचार देवण सारू गयो तो मौल तस नस ह्योडो खाली पडियो हो। जागा जागा कटियोडा हाथ पगा रा किरचा, चीथ्योडा धट अर कान कटियोडा माथा रुळता हा। जागा जागा मास रा लोथा अर लोई रा चिगग हा। वो राव र वी मौल मे पुगो जत वो राव र साग दारू पियो हो अर बा सू वतळ करी। मौल रा किंवाड माय सू जुडियोडा हा। वो किंवाडा र लात री मचकाई अर माय सू जुडियोडी आगळ टूटगी। वा मौल में घुसियो। माय न सारी चीजा साग ठौड ही। वी न कद सू तिरस लागोडी ही। वो दारू पीवण सारू इलमारी रा कपाट खोलिया तो वी न माय उतरता पागोतिया निजर आया। वा पाँच सात पागोतिया उतरियो अर जीवणै हाथ र गल कानी मुडग्यो। अैथ ई राव री पौढण री मौल हो। वो माय घुसियो। राव री पगरखिया आथ पडी ही। पूनम र सरीर में थोडी सी झरणाटी चाल्यो। अेक वम वी र मन म घुसग्यो। वा गे मायो चकरावण लागो। वो राव रै पिलग ऊपर पडग्यो। खासी ताळ गया वी नैं चेतो आयो। पूनम भीत माथै खुदरी छाया देख घबरायग्यो। वो भीत माथ अेक मुक्को भडियो। भींत खिसकगी। वी न लागो क वो, भीत र माय धुसग्यो है। वो चालतो रयो। सेवट, वो वी मारग सू देवी र मिंदर माय पुगग्यो। आथ, अेक लोथ ऊपर रातो मुगटो ओढायोडो हो अर दो सिरदार, हाथ में नागी तलवारा लियोडा, मूंडा लटकायोडा ऊभा हा। वो देख्यो अकानी अक लुगाई पडी

पडो टसकतो हो। वा रै पाखती घठा दो सिरदार हुवा करता हा। लुगाई रै सरीर सू लोई बवतो हो। मोय सगा रै चरा माथै उदामी अर काळम दप, पूनम री काळजो धक धक करण लागो जाणे कुण वीं र कान में कयो 'राव...इवँ...नी...' वा नी नी नी कर जोर सू बोबाडा किया। वो सींग गाबा फाड लिया। केसा न लाव लाव न गुच्छा रा गुच्छा ताड लिया अर हाथा रै जागा जागा डाचा मरले मास रा लाया, बार लटका दिया। माथ न गरमग्रह र तणखल सू मचीडा द दन भानाळ खोत ली। अेक सिरदार वीं नै समझायो पण वो अणचेन हो। थाडी ताळ सू जर वीं न चेतो आयो तो मिन्दर सूनो हो। दो पीताम्बर आगणे म छीदा हा। वो दोयू पीताम्बरा नै उघाडा किया। अेक पीताम्बर हेट यसोधरा री लाय पडी हा। वीं री अक बाबी कट चुकी ही अर वो जागा थोय व्हेगी ही। पूनम जोर जोर सू कूका करण लागो 'यसोधरा' 'यसाधरा' यसोधरा'

'पूनम !"

'कुण अोई ? यसोवरा ?"

यसोधरा नी, काला, म्है चम्पा हूँ चम्पा !'

हैं ?"

'हवे, चम्पा, हूँ चम्पा ओई"

'तो यसोधरा ?"

"यसाधरा तो काला, कद की मरी।"

है ?

'हव।

'पूनम !'

"हव'

"का ळ "

'को ? केत ?"

'वा वा सामै इ खुणे वी खुणे चोफरू। हू, वीवांई।"

काली व्हेगी काई ?'

'काली म्है नी त व्होई पया।"

मो म्हैन वी नी सूझ !'

पूनम आंखिया फाड न च्यारु मेर खोजण लागो। वी न की नी सूझतो वी री आंखिया फाटी री फाटी रगी। चम्पा वी री हाथ पकड'र बोली—

'हुडो करो हुडो—वो मावई।"

'को ?'

"काळ"

म्हैन को नी सूझ।"

हां, पूनम ! ओ काळ रो चक्कर अडोई व्हियां करै। ओ बातां मे बिलमाय नै मिनख नै खुद नै मिट जाव। सै को मिट जाव। पगल्या रा सनाण बी। आखर री ओळख मिटाद, ओ काळ।"

पूनमो !'

"पूनम ! म्है इब नी ठैर सकू। मोअजो वादो पूरो व्हियो। इब म्है अक घड़ी नी ठैर सकां। तू जा तू जा भागजा ..!"

अर पूनम न जद चेतो आयो तद तक वी रो नीचलो आधो सरीर, धूं में दब चुको हो। वो हाथां न बारै निकाळण री करतो पण वी र चौफेरू धूड जमा व्हेण लागगो। वतूळियो बावळो व्हियोड़ो गोळ गोळ घूमतो, पड़ड दाई। काळ र चक्कर दाई। जद तक वी र बाक न धूड नी बूर दियो तद तक वो लगोलग हाट हिलावतो रयो। अर धुनी विहोण बोल—

हू काळ सू को बीवानो।"

फस फस कर, होठां सू निकळण लागो। वी न सु'र पगल्या रा सनाण मिटता दीसण लागा।